9.4

तनिक विचार करें

जे.पी. बालसुब्रह्मण्यम्

हेमलता मेमोरियल ट्रस्ट की तरफ़ से भेंट

दूसरों को दुःख दिए बिना जीवन बिताना
और दूसरों का दुःखहरण करना ही सुखद
भविष्य का मार्ग है।

दूसरों को दुःख पहुँचाना (सिवाय कर्तव्य निभाते समय) - पाप
दूसरों की सहायता करना - पुण्य

www.hemalathamemorialtrust.com
इस पुस्तक की अंग्रेज़ी, हिन्दी, तमिल एवं तेलुगु भाषा की
प्रतियाँ उपर्युक्त वेबसाइट द्वारा मुफ़्त में प्राप्त की जा सकती हैं।

हेमलता

27.03.1972 19.12.1995

हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन करने वाली मेरी सहृदय, सौम्य और परमप्रिय पुत्री हेमलता के चरणों में, मैं यह पुस्तक समर्पित करता हूँ।

लेखक

जे.पी. बालसुब्रह्मण्यम्

पायोनियर मैच इंडस्ट्रीज़

धर्मपुरी- 636702

तमिलनाडु

तमिल की मूल कृति- सिंदिप्पोम, सिंदिक्कवैप्पोम

लेखक- जे.पी. बालसुब्रह्मण्यम्

तमिल में प्रथम संस्करण	-	जून 2003
तमिल में द्वितीय संस्करण	-	सितम्बर 2003
तमिल में तृतीय संस्करण	-	अप्रैल 2004
तेलुगु संस्करण	-	मार्च 2004
अंग्रेज़ी में प्रथम संस्करण	-	अगस्त 2004

अनुवादक

श्रीमती जयश्री उल्लास

फोन- 65670578

Address_ No. 691, 32nd Main,

J.P. Nagar I phase, Bangalore-560078

प्रकाशक

हेमलता मेमोरियल ट्रस्ट

16, हरिहरनाथ स्वामी कोइल स्ट्रीट

धर्मपुरी- 636702,

तमिलनाडु

फोन- 04342- 260366/ 260386

ई मेल पता- hemalathatrust @ yahoo.com

गीतासार

जो भी हुआ, अच्छा हुआ

जो भी हो रहा है, अच्छा हो रहा है

जो भी होने वाला है, अच्छा ही होने वाला है,

तुमने खोया क्या है ? तुम रो क्यों रहे हो ?

तुमने कुछ नहीं खोया है, क्योंकि तुम इस संसार में कुछ नहीं लाए थे

कुछ भी नाश नहीं हुआ है, क्योंकि तुमने कुछ भी सृष्टि नहीं की थी

जो भी तुम्हारे पास था, उसे तुमने यहीं से लिया था,

जो भी तुमने दे दिया, उसे तुम्हें यहीं से दिया गया था

आज तुम्हारा जो भी है, वह कल किसी और का होगा,

परसों कोई और का होगा।

यह परिवर्तन सार्वलौकिक है।

स्वयं पढ़ने के बाद कृपया यह पुस्तक दूसरों को पढ़ने के लिए दीजिए और ईश्वर की कृपा के पात्र बनिए। इसे निरुपयुक्त न रखिए।

अनुक्रमणिका

ईश्वर

हम ईश्वर की कृपा के पात्र कैसे बनें?

जीवन में उन्नति कैसे करें?

अपनी संतान का भविष्य उज्ज्वल कैसे बनाएँ?

मानव जाति की प्रगति की दिशा में हमारा कर्तव्य क्या है?

ईश्वर का वास्तविक स्वरूप कैसा है? हम नहीं जानते कि वे लंबे हैं या नाटे, गोरे हैं या काले, दुबले हैं या मोटे। जिस रूप में हम उनकी कल्पना करते हैं, वे उसी रूप में दिखाई देते हैं। उन्हें मुरुगन के रूप में सोचो, तो वे मुरुगन हैं, गणेश के अवतार में सोचो तो वे गणेश जी हैं, कृष्ण के अवतार में सोचो तो वे कृष्ण हैं। यदि हम उन्हें अल्लाह मानते हैं तो वे अल्लाह हैं और ईसा मसीह मानते हैं तो ईसा मसीह हैं।

हम मुरुगन भगवान को पूजते हैं। वे हमारी प्रार्थना स्वीकारते हैं, और हमें आशीर्वाद देते हैं। पर क्या उत्तर भारत वाले या विदेशी लोग इनके बारे में जानते हैं? क्या हम पर कृपा करने वाले मुरुगन इन्हें अपनी आशिष नहीं देते? निस्संदेह देते हैं। लेकिन उस रूप में, जिसमें वे लोग उन्हें मानते हैं और पूजते हैं। महान् संत रामकृष्ण परमहंस जी ने भग़वद्गीता (जिस प्रकार बाइबल ईसाइयों के लिए है, कुरान मुसलमानों के लिए है, उसी प्रकार भगवद्गीता हिन्दुओं के लिए है) के एक

श्लोक का विवरण देते हुए कहा है- "ईश्वर सभी धर्मों से परे हैं। किसी भी धर्मानुसार या किसी भी विधि से उनकी उपासना करो, तुम्हारी प्रार्थनाएं उन तक अवश्य पहुँचेंगी।"

ईश्वर का कोई निर्दिष्ट आकार नहीं है। उन्हें किसी भी आकार या स्थिति में बांधा नहीं जा सकता। हमें इस सत्य का साक्षात्कार कर लेना चाहिए कि जिस आकार में हम उनकी कल्पना कर उन्हें पूजते हैं, उसी रूप में आकर वे हमें आशीर्वाद देते हैं।"

ईश्वर का निवास कहाँ होता है? मंदिर में? गिरजाघर में या मस्जिद में? भगवद्गीता के एक अन्य श्लोक का अर्थ बताते हुए संत रामकृष्ण परमहंस कहते हैं- मंदिर में प्रदक्षिणा करते समय एक-एक करके आठों दिशाओं की तरफ मुँह करके प्रार्थना करने की प्रथा है। पर इस प्रथा का उगम कैसे हुआ? यह प्रथा इस बात की याद दिलाने के लिए है कि ईश्वर धरती पर हर जगह और हर दिशा में मौजूद हैं। महान् भक्त प्रह्लाद ने भी कहा है कि ईश्वर स्तंभ में भी है और धूल के कण में भी। इसलिए धरती पर ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ पर ईश्वर का निवास न हो। गीता में यह भी कहा गया है कि ईश्वर केवल मनुष्य में ही नहीं बल्कि हर जीव में है। हमें इस तथ्य से ज्ञात होना चाहिए कि धरती पर वायु रहित स्थान हो सकता है पर ईश्वर-रहित नहीं।

ईश्वर किस प्रकार की पूजा के इच्छुक हैं? गीता में ईश्वर कहते हैं- "जो भी व्यक्ति पवित्र हृदय से जल, फूल-फल, पत्ते आदि सुलभ वस्तुओं से मेरी आराधना करेगा, मैं उसकी पूजा को मनःपूर्वक स्वीकार करूँगा।"

प्रार्थना में पवित्र हृदय का होना अत्यावश्यक है। कीमती पूजा-विधान, जैसे,

अभिषेक, होम, कल्याणोत्सव, स्वर्ण–रथोत्सव आदि से ईश्वर कभी संतुष्ट नहीं होंगे। ईश्वर अपने को समर्पित भक्ति एवं वस्तुओं को उनके मोल, मात्रा या समर्पित किए गए विधान के आधार पर नहीं स्वीकारते बल्कि उस व्यक्ति के हृदय की पवित्रता के आधार पर, जिसने समर्पण किया हो।

एक बार रुक्मणी और सत्यभामा के बीच इस बात की चर्चा हुई कि उनमें से कौन कृष्ण से अधिक स्नेह करता है, कौन उनके अधिक निकट है? दोनों ने एक दूसरे से अपने आप को उत्तम समझा। अंत में दोनों ने एक परीक्षा द्वारा इसका समाधान ढूँढ़ने का निश्चय किया। एक तराज़ू के एक पलड़े में सत्यभामा ने सोना, चाँदी, हीरे और कीमती आभूषण रखे; जबकि रुक्मणी ने दूसरे पलड़े में प्रेम, स्नेह और विनम्रता से तुलसी का एक पत्ता रखा। सोना और अन्य कीमती आभूषणों के पंलड़े से तुलसी के पत्ते वाला पलड़ा भारी हुआ। श्री कृष्ण ने सोना, हीरे और कीमती आभूषणों के बजाय तुलसी के पत्ते को आनंद से स्वीकारा। क्योंकि उसे विनम्रता, सरलता और पवित्रता से समर्पित किया गया था। महाभारत का यह वृत्तांत इस बात को स्पष्ट करता है कि ईश्वर पवित्र हृदय से समर्पित साधारण वस्तुओं को अधिक पसंद करते हैं। जब कृष्ण के बचपन का साथी कुचेल, उन्हें देने के लिए एक फटे कपड़े में चिवड़ा लाया और उनका भव्य महल देखकर देने से हिचकिचाने लगा; तो श्री कृष्ण ने उसे उससे उत्सुकता से छीन लिया और प्यार से खाया। स्नेह और पवित्र हृदय, कीमती चढ़ाओं से अधिक श्रेष्ठ होते हैं।

कर्नाटक राज्य के उडुपि क्षेत्र में श्री कृष्ण जी का मंदिर है। यहाँ मंदिर के मुख्य द्वार की ओर पीठ की हुई भगवान की मूर्ति नज़र आती है। मंदिर में प्रवेश करते ही आप श्री कृष्ण की पीठ देख सकते हैं। इसके पीछे एक दिलचस्प कहानी है। एक हीन कुलज भक्त प्रतिदिन भगवान् के दर्शन के लिए मंदिर तक आता था। लेकिन अपनी हीन जाति के कारण उसे मंदिर में प्रवेश नहीं मिलता था और वह मायूस

होकर लौट जाता था। आँखों में आँसू भर वह प्रतिदिन भगवान से उनके दर्शन के लिए प्रार्थना करता था। एक दिन श्री कृष्ण उसके सपने में प्रकट हुए और उन्होंने उससे कहा- "मंदिर की पिछली दीवार में एक छेद है। उस छेद से तुम मुझे देखो। तुम्हारे लिए मैं उस दिशा में मुड़ जाऊँगा और तुम मेरे दर्शन कर सकोगे।" अपने भक्त को दर्शन देने के लिए श्री कृष्ण जी मुड़ गए। इस मूर्ति को हम आज भी उडुपि में देख सकते हैं।

भगवान को चढ़ावे के रूप में मांस अर्पित करना निषिद्ध है। लेकिन कण्णप्पा नामक शिवभक्त ने भगवान शिवजी को नैवेद्य में मांस अर्पित किया था। समर्पण करने से पहले खाना स्वादिष्ट बना है या नहीं, यह देखने के लिए उसने उसे चखकर जूठा कर दिया था। फिर भी शिवजी ने उसे स्वीकारा। क्योंकि कण्णप्पा ने उसे भक्ति तथा पवित्र हृदय से समर्पित किया था।

ईश्वर सत्य का मूर्त रूप है। वे निहायत सत्यवादी हैं। वे गलती करना नहीं जानते हैं। वे निष्पक्ष हैं। हम सब उनकी संतान हैं। हम गलती करने के आदी हैं और सदैव गलती करते रहते हैं। लेकिन ईश्वर से कभी कोई गलती नहीं होती, और न ही वे कभी किसी कुत्ता, बिल्ली, चींटी जैसे कनिष्ठ से कनिष्ठतम जानवर को दंड देते हैं। वे सदैव जागरुक रहते हैं कि किसी जीव के साथ अन्याय न हो।

संसार की न्याय-पद्धति का एक मौलिक नियम है कि- "चाहे सौ गुनहगार दंड से बच जाएँ पर किसी भी हालत में एक बेगुनाह को सज़ा नहीं होनी चाहिए।" जब साधारण मनुष्य, निरपराधी को सज़ा न दिलाने के मामले में इतना जागरूक है, तो ईश्वर कैसे किसी बेगुनाह को दण्ड देंगे? ईश्वर ऐसा करेंगे, यह असंभव ही नहीं बल्कि कल्पनातीत है। तो फिर वे मनुष्य को गरीबी, बीमारी, दुर्घटना आदि के रूप में दंड क्यों दे रहे हैं? भलाई, सत्य, ईमानदारी और प्रेम का साकार स्वरूप ईश्वर

अगर किसी को सज़ा दे रहे हैं, तो अवश्य उसके लिए कोई सच्चा, न्यायसंगत, समर्थनीय, सुस्पष्ट कारण होगा जैसे कि दंडित व्यक्ति के पूर्व में किए गए छल, कपट, धोखाधड़ी और दूसरों को दुख पहुँचाने वाले कुकर्म आदि पाप।

ईश्वर हमें, हमारे इस जन्म और पूर्व जन्मों के पाप तथा हमारे पूर्वज, दादा-दादी, नाना-नानी, माता-पिता आदि से संचित पापों में हमारे हिस्से के पाप के अनुपात में दण्ड देते हैं।

महान ऋषि-मुनियों ने कहा है- हमारे सारे अच्छे और बुरे कर्मों का असर, पुरस्कार या दण्ड के रूप में, हमारे इस जन्म पर, आने वाले सात जन्मों पर और आगे की सात पीढ़ियों (जैसे बेटा, पोता, पडपोता आदि) पर रहता है।

अनुभवी लोगों का कहना है- "उसके दादाजी धर्मभीरु, उदार और परोपकारी व्यक्ति थे। इसलिए आज यह पोता खुशहाल जीवन बिता रहा है।" हमारे पूर्वजों के सत्कर्म हमें मुश्किलों से बचाते हैं। लोगों को यह भी कहते सुना हैं- "हमारे पुरखों से संचित पुण्यफल और उनकी नेकी से आज हम पर आई मुसीबत टल गई है।" मैंने यह भी देखा है कि जिस परिवार में दादा अंधे हैं, वहाँ बेटा और पोता भी अंधे पैदा हुए हैं।

ईश्वर समदर्शी होते हैं। वे इस प्रकार कभी नहीं सोचते कि "यह अमरीकी है, मैं इसे अधिक चाहता हूँ; यह भारतीय है, इसे मैं कम चाहता हूँ; यह अफ्रीकी है, इसे मैं नापसंद करता हूँ।" वे सभी मनुष्य से प्रेम करते हैं। वे राम, रहीम और जोसफ़ से समान रूप से स्नेह करते हैं। हम उनमें पक्षपात के गुण की कल्पना भी नहीं कर सकते।

ईश्वर मनुष्य जाति से प्रेम करते हैं, उनका संसार के प्रति बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। उनके तीन प्रमुख कर्तव्य हैं- सृष्टि, स्थिति और लय। संरक्षण का कर्तव्य निभाते समय वे हमें हमारे पुण्य और पाप के आधार पर पुरस्कार तथा दंड भी देते हैं। पुण्य-कार्य के बदले पुरस्कार और बुरे कर्मों के फलस्वरूप दण्ड मिलता है। पर यह कर्म के तुरंत बाद नहीं, बल्कि कुछ समय या साल बाद मिलता है। और यह पुरस्कार और दण्ड का सिलसिला एक ही जन्म में समाप्त न होकर सात जन्म और सात पीढ़ियों तक चलता रहता है।

कुकर्मों का करना मानो ख़ुद मुसीबत और दण्ड का स्वागत करना है। किसी को धोखा देकर आज हम हज़ार रुपए कमा सकते हैं, लेकिन ये हज़ार रुपए अपने साथ-साथ विपत्ति भी ले आते हैं। ''ओह! आज मैंने उसे धोखा देकर बहुत पैसे कमाए, बंगला खरीदा, गाड़ी खरीदी।'' ऐसा सोचकर हम खुश होते हैं। किसी को धोखा देने से आज मिलने वाला लाभ बहुत छोटा होता है, जबकि उसके लिए आगे मिलने वाली सज़ा बहुत बड़ी। दूसरों को छलकर, कपट से कमाई गई सम्पत्ति पर मनुष्य गर्व करता है, पर उसके लिए आगे चुकाई जाने वाली कीमत से वह अज्ञात रहता है।

क्या हर कोई गलत रास्ते से पैसे कमा सकता है? हज़ारों, लाखों लोगों में कुछ ही लोग अधिक पैसे कमा सकते हैं, क्योंकि अतीत में उन्होंने कुछ अच्छे कर्म किए होते हैं। लेकिन गलत रास्ते से धन कमाने वाले लोग भविष्य में आने वाली विपत्ति से अनजान रहते हैं। आगे चलकर यही गाड़ी, बंगला, खुशी, मानसिक शांति, धन आदि सुख-सुविधाएँ, बीमारी, गरीबी, समस्याएँ, मानसिक अशांति आदि के कारण बन जाती हैं। जब हम गलत काम करते हैं, तो बेशक समाज या सरकार की सज़ा से बच सकते हैं, पर ईश्वर के दण्ड से कभी नहीं। हम संसार के किसी भी कोने में क्यों न छिप जाएं, पर सज़ा हमारा पीछा कर हमें अवश्य धर दबोचती है। यही सत्य

है, अनंत सत्य और अखण्ड सत्य।

जब आप किसी को शारीरिक या मानसिक रूप से दुख पहुँचाते हैं, तो यह पाप है। और इस पाप की मात्रा और स्वभाव के अनुपात में ही ईश्वर आपको सज़ा देते हैं। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि चार भिन्न लोग एक ही प्रकार का छल करते हैं। पहला व्यक्ति एक अमीर को ठगकर, दूसरा एक मध्यम वर्ग के व्यक्ति को छलकर, तीसरा एक गरीब व्यक्ति को धोखा देकर और चौथा, एक भिखारी को छलकर, हर कोई सौ-सौ रुपए कमा लेता है।

तो क्या ईश्वर इन चारों को एक समान सज़ा देते हैं? कदापि नहीं। इस स्थिति में अमीर को लूटने वाले को कम सज़ा देते हैं क्योंकि अमीर पर इस नुकसान का अधिक असर नहीं होता है। मध्यमवर्ग के व्यक्ति को लूटने वाले को उससे थोड़ा ज़्यादा, क्योंकि नुकसान का उस पर थोड़ा ज़्यादा असर होता है, पर अधिक नहीं। गरीब पर इस नुकसान का असर अधिक होता है, इसलिए उसे लूटने वाले को अधिक सज़ा होती है। और भिखारी को लूटने वाले को अत्यधिक दण्ड मिलता है क्योंकि नुकसान का भिखारी पर अत्यधिक असर होता है। ईश्वर द्वारा दिया जाने वाला दण्ड इन विषयों पर निर्भर करता है कि किस प्रकार के व्यक्ति को, किन हालातों में, किस प्रकार का दुःख दिया जा रहा है।

अपना कर्तव्य-पालन करते समय अगर किसी को दुख पहुँचाते हैं, तो वह पाप नहीं है। मगर किसी को दुख पहुँचाने के डर से अगर हम अपने कर्तव्य से मुकर जाते हैं, तो यह पाप है। यही भगवद्गीता का सार है।

उदाहरण के लिए- न्यायालय में एक खून के मुकदमें की सुनवाई हो रही है। यह साबित हो चुका है कि आरोपी ही खूनी है। वह शादीशुदा है और उसके बच्चे भी

हैं। अगर उसे मौत की सज़ा सुनाई जाय तो उसकी पत्नी विधवा हो जाएगी और बच्चे अनाथ। यदि न्यायाधीश, उसकी इस पारिवारिक स्थिति को ध्यान में रखकर उसे बरी कर देते हैं, तो उनसे अपना कर्तव्य-पालन सही प्रकार न करने का पाप हो जाता है। अगर कानून के अनुसार वे उसे आजीवन कारावास या मौत की सज़ा सुनाते हैं, तो उससे खूनी और उसके परिवार को जो दुःख और व्यथा पहुँचती है, उससे पाप नहीं होता क्योंकि न्यायाधीश इस समय अपना कर्तव्य उचित रूप से निभा रहे हैं।

सी.बी.आई के डेप्युटी-डायरेक्टर श्री माधवन एक ईमानदार और सच्चे पुलिस अधिकारी थे। उन्होंने बोफ़ोर्स भ्रष्टाचार मामले की जाँच की थी, और अपने काम में राजकीय हस्तक्षेप के कारण इस्तीफ़ा दे दिया था। जब उनसे पूछा गया था कि लोगों से पैसे ऐंठने वाले राजनीतिज्ञों के बारे में उनकी क्या राय है, तो उन्होंने कहा था कि यह अंधे-भिखारी से उसकी कमाई लूटने के बराबर है।

"गरीब के आँसू तेज़ धार वाली तलवार की तरह होते हैं"

– तिरुवल्लुवर– तमिल के महान कवि

एक कहावत है – ***"यदि बलवान, बलहीन को दंड देते हैं, तो ईश्वर बलवान को दण्ड देते हैं।"*** उसी प्रकार यदि बलवान और धनी लोग कमज़ोर और गरीब की मदद करें, तो क्या ईश्वर उनकी मदद नहीं करेंगे? अवश्य करेंगे।

हमारे सारे कर्म नीचे दी गई तीन श्रेणियों के अंतर्गत आते हैं।

(1) पाप

(2) पुण्य

(3) वह स्थिति जहाँ पाप और पुण्य दोनों नहीं होते।

ईश्वर की नज़र सदैव हमारे सभी कर्मों पर होती है। हमारे कर्म, उनके स्वरूप, उनके फलस्वरूप होने वाली अच्छाई या बुराई- इन सबको मन में रखकर, इन्हीं के आधार पर वे हमारा पुरस्कार या दण्ड निर्धारित करते हैं। क्या हम ईश्वर की नज़र बचाकर कोई भी काम कर सकते हैं? मंदिर में हम ईश्वर के सामने खड़े होकर उनसे मन ही मन घर, विद्या और नौकरी और अन्य अनेक चीजों की माँग करते हैं। अपनी माँगों के बारे में केवल हम जानते हैं, न कि अपने आसपास वाला कोई। लेकिन हमें यह विश्वास रहता है कि ईश्वर हमारी माँगें जानते हैं, और अवश्य उन्हें पूरा करते हैं। इसका मतलब है कि हमारे मन में चल रहे विचार और हमारी इच्छाओं की ईश्वर को जानकारी होती है। अर्थात् यही सच्चाई है कि ईश्वर से छिपाकर न हम कुछ सोच सकते हैं, न ही हम कुछ कर सकते हैं।

हम मंदिर जाते हैं, और ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। कहते हैं कि मंदिर में झूठ नहीं बोलना चाहिए और गलत काम नहीं करना चाहिए। तो क्या मंदिर के बाहर झूठ बोल सकते हैं? बुरा काम कर सकते हैं? हम यह कैसे मान लें कि ईश्वर की नज़र हम पर केवल मंदिर के अंदर होगी, बाहर नहीं? अगर हम सोचें कि मंदिर के बाहर किए गए बुरे विचार और बुरे कर्म से ईश्वर अनजान रहेंगे, तो क्या यह हमारी मूर्खता नहीं होगी?

हम अपने दैनिक जीवन में ऐसे कई काम करते हैं, जिनको ईश्वर न पसंद करते हैं, और जिनका न समर्थन करते हैं। मंदिर में प्रवेश करते ही हम अच्छे होने का ढोंग करते हैं। हमें लगता है कि मंदिर के बाहर के हमारे बुरे विचार और बुरे कर्मों के बारे में ईश्वर कुछ नहीं जानते हैं। क्या ईश्वर को ठगना मुमकिन है? ऐसा सोचकर क्या हम अपने आप को नहीं ठग रहे हैं?

उदाहरण के तौर पर- रामस्वामी एक दुष्ट व्यक्ति है, पर एक सच्चा भक्त भी। पर

मंदिर में ईश्वर के सामने जब वह प्रार्थना करता है, तो क्या ईश्वर उसके बारे में इस प्रकार नहीं सोचते?– "आओ, रामस्वामी, मंदिर में बड़े प्यार और विनम्रता से तुम मेरी प्रार्थना करते हो। क्या तुम यह सोचते हो, कि कल रात को तुमने जो दुष्कर्म किए, उनसे मैं अनजान हूँ? उससे एक महीना पहले रात को दो बजे तुमने जो पाप किया, क्या उसकी जानकारी मुझे नहीं है? दूसरों को धोखा देने के साथ-साथ तुम मुझे भी धोखा दे रहे हो। तुम्हें अपने पुराने पापों के लिए दण्ड मिलेगा ही। पर आज तुमने अच्छा और ईमानदार बनने का ढोंग रचकर जो पाप किया है, उसके लिए भी तुम्हें अवश्य दण्ड मिलेगा।"

ईश्वर बेईमानों की प्रार्थना कभी नहीं स्वीकारते। पर लोग जब अपनी गलतियाँ स्वीकार कर ईमानदारी से उनसे इस प्रकार प्रार्थना करते हैं कि, "हे ईश्वर! मैंने अपने अज्ञान के कारण कई पाप किए हैं। उसके लिए मुझे खेद है। मैं उन्हें कभी नहीं दोहराऊँगा। कृपया आप मुझे क्षमा कर दीजिए", तो ईश्वर उनकी दया-याचना को मानकर उनकी सज़ा की तीव्रता कम कर सकते हैं, लेकिन सज़ा माफ़ कभी नहीं करते हैं।

हमारे सारे दुखों का प्रमुख कारण है, ईश्वर की बुद्धिमत्ता और ज्ञान से अनजान रहना। ईश्वर मनुष्य से करोड़ों गुना अधिक बुद्धिमान, बलवान और ज्ञानी है। इस सत्य से अनभिज्ञ रहकर मनुष्य दुखों को आमंत्रित करता है।

ईश्वर की शक्ति, उनका ज्ञान और उनकी बुद्धिमत्ता का अंदाजा लगाना मनुष्य की समझ से बाहर है। विश्व की विशालता का भाव देने के लिए खगोल-विज्ञान में इस प्रकार कहा गया है– "विश्व के ग्रहों की संख्याओं को गिनने से अधिक सरल है समुद्र-तट की रेत के कणों को गिनना।" हमारी पृथ्वी इन करोड़ों आकाशकायों में से एक है। सूर्य और धरती के बीच की दूरी को मीटर या किलो मीटर में नापना

मुश्किल है। सूरज की रोशनी को धरती तक पहुँचने के लिए जो समय लगता है, उस समय के आधार पर यह दूरी मापी जा सकती है। सूरज की रोशनी को धरती तक पहुँचने के लिए आठ मिनट लगते हैं। ब्रह्माण्ड में ऐसे कई ज्योतिर्काय हैं, जिनकी रोशनी को धरती तक पहुँचने में हज़ारों साल लग जाते हैं। आजकल उपलब्ध प्रभावशाली दूरबीन और अन्य उपकरणों की सहायता से धरती से इन ग्रहों की दूरी नापी जा सकती है। इनसे आगे भी करोड़ों ग्रह हैं। क्या सृष्टि की विशालता और ग्रहों के बीच की दूरी का अंदाज़ा लगाया जा सकता है? हमारी बुद्धिशक्ति इसके लिए बहुत छोटी पड़ जाती है। अब आप ईश्वर की अद्‌भुत शक्ति की कल्पना कीजिए, जो इस ब्रह्माण्ड को अपनी इच्छानुसार चलाते हैं।

पृथ्वी की जनसंख्या 600 करोड़ है। लेकिन ग्रहों की संख्या इससे कई गुना अधिक है। ऐसे में इस सृष्टि को चलाने वाले ईश्वर की शक्ति, बुद्धिमत्ता और ज्ञान को हम कम कैसे समझ सकते हैं? इस प्रकार सोचना ईश्वर का अपमान करने के बराबर है और उनका अपमान करना बहुत बड़ा पाप है।

ऐसे शक्तिशाली और प्रज्ञावान ईश्वर के बारे में यह सोचना कि, वे हमारी कुयुक्तियों से अनजान हैं, दिखावे की पूजा से हम उन्हें धोखा दे सकते हैं और अपनी अन्याय की कमाई का चढ़ावा देकर उन्हें हम अपने पापों का भागीदार बना सकते हैं, तो यह उनका अनादर है।

मान लीजिए कि आपका कोई सरकार की तरफ से होने वाला काम है, जो किसी मंत्री या किसी अफ़सर की सहायता से हो सकता है। दोनों ही सच्चे और ईमानदार हैं। पर यह काम नियम के विरुद्ध है। आप द्वंद्व में हैं, चिंतित हैं और काम निकलवाने के तरीके ढूँढ़ रहे हैं। इतने में एक तीसरा व्यक्ति आपके पास आकर कहता है– ''यह मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं है। मेरे साथ आइए। मैं मंत्री साहब को चाय

पिलाकर आपका काम करवा देता हूँ।" वह कहता है कि एक कप चाय पीकर मंत्री साहब बहुत प्रसन्न हो जाएंगे और आपका काम कर देंगे। अगर आप उसकी बातों पर विश्वास करके उसके साथ जाते हैं, तो क्या आप मूर्ख नहीं कहलाते? अगर आप उस सच्चे और ईमानदार मंत्री या अफ़सर के बारे में ऐसा सोचते हैं कि एक कप चाय पिलाने से वह नियम के विरुद्ध आपका काम कर देगा, तो यह उसका अपमान होगा। इसी प्रकार असीम बुद्धिशक्ति, बल और ज्ञान वाले ईश्वर के बारे में हम यह सोचते हैं कि वे हमारी विस्तृत पूजाएँ, होम, यज्ञ, धर्मानुष्ठान और शास्त्र आदि से संतुष्ट होकर हमें कई पुरस्कार प्रदान करेंगे, तो क्या यह हमारी मूर्खता नहीं होगी? क्या यह उनका अपमान नहीं होगा?

ईश्वर सच्ची और ईमानदार प्रार्थना, पूजा और धर्मानुष्ठानों को किंचित् श्रेय देते हैं। वे केवल गरीब और पीड़ितों की सहायता, उनका उद्धार जैसे अच्छे कर्मों को ही अधिक श्रेय देते हैं।

अश्वमेध यज्ञ

हम मंदिर पूजा करने जाते हैं। उत्तम पूजा के लिए कर्पूर जलाकर प्रार्थना करते हैं। अत्युत्तम पूजा के लिए फल-फूल, नारियल आदि का चढ़ावा देकर, अपने जन्म-नक्षत्र के नाम से, पुजारी से कहकर ईश्वर की अर्चना करवाते हैं।

इससे बेहतर पूजा-विधि है- दूध, मधु, चंदन-चूर्ण, पंचामृत आदि से ईश्वर का अभिषेक। हवन और यज्ञ को इससे बेहतर विधि माना जाता है। लेकिन हमारे वेदों के अनुसार सर्वश्रेष्ठ पूजा-विधान है अश्वमेध यज्ञ।

अश्वमेध यज्ञ करना साधारण मनुष्य के बस की बात नहीं है। उसके लिए अधिक सम्पत्ति और कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है। साधारण राजा-महाराजाओं के लिए भी यह दुस्तर है। केवल दशरथ और अशोक जैसे सम्राट, जिनके विस्तृत राज्यक्षेत्र होते थे, जिनके अधीन कई अच्छे राजा-महाराजा होते थे, यह यज्ञ कर सकते थे। इसके लिए हज़ारों यज्ञ कुण्ड, विशाल यज्ञ-मण्डप और हज़ारों वेदपारंगत ब्राह्मण विद्वान और पंडितों की व्यवस्था करनी पड़ती थी।

ईश्वर के परम आशीर्वाद पाने के लिए अश्वमेध यज्ञ उच्चतम पूजा-विधि है। महाभारत में इस यज्ञ से संबंधित एक कहानी है। एक बार एक सम्राट ने इस यज्ञ को संपन्न करने के लिए सारी विस्तृत तैय्यारियाँ कर ली थीं। सभी औपचारिक विधियों के बाद यज्ञ आरंभ होने ही वाला था, कि वहाँ एक नेवला प्रकट हो गया। पूँछ के अतिरिक्त उसका सारा शरीर सोने की तरह चमक रहा था। नेवले में बोलने की शक्ति भी थी।

उसने मुख्य पुरोहित से व्यंग्य से कहा- इस यज्ञ को संपन्न कर आपके सम्राट कितने पुण्य कमा पाएंगे? उन्हें तो उस पुण्य का एक अंश भी प्राप्त नहीं होगा, जो एक गरीब ब्राह्मण ने जंगल में अपने अच्छे कर्म के लिए प्राप्त किए थे।

सब लोग आश्चर्यचकित हो गए। एक तो सोने का नेवला, और ऊपर से बोल भी रहा है। सब दंग रह गए। मुख्य पुरोहित ने हिम्मत बटोरकर कहा- "इस यज्ञ से हमारे सम्राट को अत्युत्तम पुण्य प्राप्त होगा। हमारे सम्राट से बेहतर कोई और यह यज्ञ संपन्न कर सकता है क्या? कृपया आप अपना कथन स्पष्ट कीजिए।"

नेवले ने कहा- "एक छोटे से गाँव में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी और दो बेटों के साथ रहता था। वह बेरोज़गार था, और उस छोटे से गाँव में उसकी कमाई का और कोई साधन भी नहीं था। इसलिए काम की तलाश में वह अपने परिवार के साथ पड़ोसी शहर की तरफ़ निकल पड़ा।

वे लोग जंगल के रास्ते से जा रहे थे। दो दिन से भूखे रहने के कारण कमज़ोर भी हो गए थे। थकान मिटाने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठ गए, तो उन्होंने चारों ओर धान के बिखरे दाने देखे। खुशी से उन्हें बटोरकर, कूटकर जंगल में आस-पास मिलने वाली सूखी लकड़ियाँ जलाकर चावल बनाया।

वे लोग अन्न-ग्रहण करने ही वाले थे, वहाँ एक वृद्ध महर्षि आ पधारे। वे भी थके हारे थे और भूखे थे। अतिथि-सत्कार अपना सहज-स्वभाव होने के कारण, ब्राह्मण ने महर्षि का स्वागत कर, अपने हिस्से का खाना उन्हें दे दिया। इससे उनका पेट नहीं भरा तो ब्राह्मण की पत्नी ने अपने हिस्से का खाना उन्हें देने के लिए पति को संकेत किया। उससे भी जब उनकी भूख नहीं मिटी तो ब्राह्मण के दोनों बेटों ने अपने हिस्से का अन्न महर्षि को दे दिया। पूरा खाना समाप्त करने के बाद महर्षि तृप्त हुए और उन

सबको आशीर्वाद देकर वहाँ से चले गए।

ब्राह्मण दो दिन से भूखा था, बहुत मुश्किल से उसने अपने परिवार के लिए अपर्याप्त खाना पकाया था। दो दिन तक भूखा रहने के बावजूद, उसने उस खाने से खुद को और अपने परिवार को वंचित कर, उदार हृदय से, बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा किए, वही खाना एक सज्जन और सम्मान्य महर्षि को समर्पित कर दिया था। अपने इस अनुकरणीय कर्म से उसने उत्तम पुण्य कमाया। जब मैं उस पावन स्थान पर लुढ़का तो, सिवाय पूँछ के मेरा सारा शरीर सोने का हो गया और मुझमें बोलने की शक्ति आ गई। अपनी पूँछ को सुनहरा बनाने के लिए जब मैं आपके यज्ञ के इस पवित्र स्थान पर लुढ़का तो मेरी पूँछ वैसी की वैसी ही रही। इसलिए कहता हूँ कि उस ब्राह्मण के कमाए पुण्य का एक अंश भी आपके सम्राट नहीं कमा पाएँगे।''

अश्वमेध यज्ञ के लिए व्यय की गई सम्पत्ति, उसके लिए किये गए प्रयासों के सम्मुख, ब्राह्मण से की गई अन्नदान की क्रिया अति साधारण लगती है। पर उसके लिए उस ब्राह्मण से प्राप्त पुण्य की कोई सीमा नहीं है। ***दान से प्राप्त होने वाला पुण्य, देने वाले का हृदय, उसका उद्देश्य, दान देते समय उसकी परिस्थिति, लेने वाला व्यक्ति और लेते समय उसकी परिस्थिति पर निर्भर होता है।***

चार सालों में एक बार होने वाली ओलम्पिक्स क्रीड़ाओं में विजेताओं को बहुत सावधानी से चुना जाता है। डाइविंग प्रतियोगिता के विजेताओं के चयन में कोई पक्षपात न हो, उसके लिए दस विभिन्न देशों से दस निर्णायकों को नियुक्त किया जाता है। हर एक को दस अंशों की एक सूची दी जाती है, जिसके आधार पर वे हर प्रतियोगी को अंक देते हैं। वे अंश इस प्रकार होते हैं, जैसे- डाइविंग प्लैटफ़ार्म पर प्रतियोगियों के खड़े होने की विधि, पानी में गोता लगाने का अंदाज़, पानी को छूने से पहले दिखाई जाने वाली कलाबाज़ियों के प्रकार और लक्षण, पानी को छूते समय

देह की स्थिति, पानी के अंदर जाने के बाद उनसे स्थानांतरित पानी की मात्रा आदि। इन्हीं अंशों को ध्यान में रखकर प्रतियोगियों को अंक दिए जाते हैं।

हर अंश के अधिकतम अंक दस होते हैं। सभी निर्णायक अपने अवलोकन के आधार पर सभी प्रतियोगियों को अंक देते हैं। हर निर्णायक द्वारा दिए गए अंक और सभी निर्णायकों द्वारा दिए गए कुल अंकों के आधार पर स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतने वाले प्रतियोगी चुने जाते हैं। इसके बाद, यह पता लगाने के लिए कि अपना प्रदर्शन बेहतर बनाने के लिए इन प्रतियोगियों ने किसी दवा का सेवन तो नहीं किया है, इनकी चिकित्सकीय परीक्षा की जाती है। इस प्रकार की दवा का सेवन गैर-कानूनी है। योग्य प्रतियोगियों को ही पदक मिले, इसके लिए वे अत्यधिक सावधानी बरतते हैं।

ओलम्पिक्स में योग्य विजेताओं को चुनने के लिए, जब साधारण मनुष्य अपनी सीमित बुद्धि और सीमित साधनों के बल पर इतना कष्ट उठाता है, तो कल्पना कीजिए कि मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्म के फलस्वरूप दिए जाने वाले पुरस्कार या दण्ड- आदि को सतर्कता और निपुणता से आँकने के लिए सर्वशक्त ईश्वर के पास कितनी परीक्षाएँ होंगी और इसके लिए वे कितनी सावधानी बरतेंगे। हमारे सुख-दुख और भाग्य-दुर्भाग्य को ईश्वर अत्यंत जागरुकता से निर्धारित करते हैं। उनका कोई भी निर्णय बेमन या आकस्मिक नहीं होता। हम वही पाते हैं जिनके हम हक़दार होते हैं।

जीवन के सुखद और दुखद घटनाओं के लिए हम अपना समय, भाग्य या विधि आदि को ज़िम्मेदार ठहराते हैं। चाहे हम कोई भी नाम दें, पर सच्चाई यही है कि सब ईश्वर का दिया हुआ है। हमारे कर्मों के अनुसार ही हम जीवन में सब कुछ पाते हैं। हमारे भाग्य को ईश्वर नहीं, बल्कि हम खुद निर्धारित करते हैं। अच्छे या बुरे

कर्मों के आधार पर ईश्वर हमारे भाग्य का हिसाब करते हैं।

"ईश्वर पुरस्कार या दण्ड अत्यंत सतर्कता से देते हैं; उन्हें निर्धारित मात्रा से न अधिक देते हैं, न कम; उन्हें निर्धारित समय से न पहले देते हैं, न बाद में; ईश्वर के पुरस्कार या दण्ड योग्य समय पर, योग्य मात्रा में और योग्य रूप में मिलते हैं।"

ईश्वर, जो सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश हैं, वे किसी बात से अनजान नहीं हैं। इसलिए उनकी अदालत में न कोई पूछताछ होती है, न वाद-विवाद, न ही कोई साक्षी। सर्वज्ञ होने के कारण, उन्हें किसी पूछताछ या स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है। उन्हें हर व्यक्ति द्वारा की गई अच्छी और बुरी क्रियाओं का ज्ञान होता है। इसलिए उनके न्याय में किसी प्रकार की भूल की संभावना नहीं होती है। वे ईमानदार और सत्यनिष्ठ न्यायाधीश हैं। वे न कभी गलत फैसला सुनाते हैं, न गलत दंड देते हैं, न ही गलत पुरंस्कार प्रदान करते हैं।

पुण्य

सब लोग जानते हैं कि दूसरों को दुख पहुँचाना पाप है। लोगों से पूछिए कि पुण्य किस प्रकार कमाया जाता है? उनका उत्तर होगा, मंदिर जाने से, पूजा करने से, यज्ञ और अन्य धर्मानुष्ठानों का पालन करने से हम पुण्य कमा सकते हैं। यह पूर्णतया सही नहीं है। जिस प्रकार दूसरों को दुःख देने से पाप मिलता है, उसी प्रकार, दूसरों का दुःख निवारण करने से पुण्य मिलता है। अत्यंत दुःखी लोगों का कष्ट दूर करने से अत्यधिक पुण्य मिलता है।

''योगी ऋषियों से श्रेष्ठ होते हैं''

''वे ज्ञानियों से श्रेष्ठ होते हैं,

अतः हे अर्जुन! तुम योगी बनो''
(भगवद्गीता- अध्याय-6, 46 वां श्लोक)

नारी, स्वर्ण और भूमि से विरक्त होकर, जीवन के सारे आनंद, भोग और कामनाओं क़ो त्याग कर ईश्वर के शरण में आने वाला, ऋषि बन जाता है। यही जीवन की महोन्नत स्थिति है। अगर योगी, ऋषि से भी श्रेष्ठतर है, तो वह और कितना बेहतर व्यक्ति होगा। कौन है सच्चा योगी? भगवद्गीता के अनुसार ''जो दीन दुखियों की मदद करता है, बिना किसी को दुख पहुँचाए, बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा किए, श्रद्धा और विनम्रता से अपना कर्तव्य-पालन करता है, वही सच्चा योगी है।''

जब आप गरीब की मदद करते हैं, तब ईश्वर आपके ऋणी हो जाते हैं।

(बाइबल)

मेरी अटल वाणी है, कि ज़ब आप मेरे गरीब भाइयों में से किसी एक की मदद करते हैं, तब आप सचमुच मेरी मदद कर रहे होते हैं। (ईश्वर)

(बाइबल)

बाइबल के अनुसार समाज के निचले स्तर के लोगों का, गरीब और दुखियारों का हाथ बँटाना ईश्वर की मदद करने के समान है। गीता भी अलग ढंग से इसी बात की पुष्टि करती है।

भगवद्गीता के अनुसार ईश्वर संसार के हर जीव में होते हैं (मनुष्य, जीव जंतु आदि) अर्थात् वे दीन दुखियों में भी हैं। इसलिए, जब हम उन गरीबों की मदद करते हैं, तो वह ईश्वर की मदद होगी। है न? यह प्रश्न उठता है, अगर ईश्वर चाहते तो क्षणभर में उनका दुःख मिटा सकते हैं, तो हम क्यों इनकी मदद करें?

यह एक योग्य प्रश्न है। पर बात यह है कि अपात्र लोगों पर कृपा क़रने के लिए, ईश्वर अपने सिद्धांत के विरुद्ध कभी नहीं जाते। वे उस न्यायाधीश की तरह है, जो सज़ा कम करने के लिए खुद के बनाए कानून का उल्लंघन नहीं करता। उनका कर्तव्य सत्कर्मियों को पुरस्कृत करना और कुकर्मियों को दण्डित करना है। वे स्वयं, खुद के बनाए नियमों से बंधे हुए हैं।

अगर ईश्वर ने अपने ही नियम तोड़कर अपात्र लोगों पर दया दिखाई होती, तो आज संसार में कोई अंधा, बहरा या विकलांग नहीं होता। पर वे निष्पक्ष हैं। उनसे दिए जाने वाले पुरस्कार या दण्ड का आधार केवल मनुष्य का सुकर्म या कुकर्म होता है।

क़ुरान के अनुसार ईश्वर के दरबार में पहुँचने के तीन रास्ते हैं।

पहला रास्ता- प्रार्थना- यह ईश्वर तक की आधी दूरी तय कराएगा।

दूसरा रास्ता- तपस्या- यह ईश्वर के दरबार तक ले जाएगा।

तीसरा रास्ता- गरीबों का दुखहरण- यह ईश्वर के दरबार के अंदर ले जाएगा।

(क़ुरान)

क़ुरान यह भी कहता है कि ईश्वर को अपनी प्रार्थना करने वालों से, गरीब और पीड़ितों की मदद करने वाले अधिक भाते हैं। ईश्वर की पूजा, कर्तव्य-पालन, विनम्रता, अहिंसा और पीड़ितों की मदद- इन्हीं सूत्रों पर सभी धर्म ज़ोर देते हैं।

सबका गंतव्य स्थान एक ही है- ईश्वर। पर उन तक पहुँचने के रास्ते अलग-अलग हैं। चाहे राजमार्ग अपनाओ या पगडंडी, पर जाकर पहुँचोगे तो ईश्वर तक ही। अलग-अलग समय पर अलग-अलग धर्म अस्तित्व में आए। पर हर धर्म की आदि और अंत ईश्वर ही है।

प्रार्थना, भक्ति, पूजा, हवन, यज्ञ, तपस्या- आदि को लोग अधिकतर अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिए संपन्न करते हैं। "मुझे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुखी रहना है, अपनी मृत्यु के बाद स्वर्ग जाना है"- यही अधिकतर लोगों का स्वार्थी उद्देश्य होता है। लेकिन, गरीबों की सहायता, पीड़ितों का दुःखहरण- ये निस्वार्थ क्रियाएँ हैं।

ईश्वर के बारे में यह सोचना कि अपनी असीम बुद्धिशक्ति के बावजूद वे हमारे अच्छे और बुरे विचार और क्रियाओं में अंतर नहीं कर पाते, तो यह हमारी मूर्खता

होगी। उनकी बुद्धिशक्ति और ज्ञान को कम आँकने की हमारी मूर्खता ही हमारे पतन का कारण बन जाती है। इस प्रकार हम अपना गड्ढा खुद खोदते हैं। भाग्य ईश्वर से नहीं लिखा जाता, बल्कि अपने अज्ञान के कारण हम अपना भाग्य खुद गलत लिखते हैं। ईश्वर तो केवल हमारे अच्छे और बुरे कर्मों के आधार पर हमारे भाग्य को निर्धारित करते हैं।

सुधारक और बुद्धिवादियों का कहना है "हमारा जीवन हमारे हाथों में है।" आध्यात्मिक दृष्टि से भी यह कथन सौ प्रतिशत सही है।

अपने तुरंत या नजदीकी भविष्य को बदलने की शक्ति किसी में भी नहीं है। पर अपने आज के कर्मों से अपने दूर के भविष्य को हम बदल सकते हैं। आज के हमारे सत्कर्मों के आधार पर आगे ईश्वर हमें सुखी जीवन प्रदान करेंगे। "अपना भाग्य हम खुद लिख सकते हैं"– इस कथन का भी यही अर्थ है।

मान लीजिए, कि हमारे किसी पूर्व पाप के लिए भविष्य में हमें कड़ी सज़ा निश्चित की गई है। अगर हम किसी प्रतिफल की अपेक्षा किए बिना अच्छे कर्म करें, बुरे कर्मों से अपने आपको बचाएँ, तो ईश्वर इस सज़ा को अवश्य कम कर देंगे या पूरी तरह माफ़ भी कर देंगे। साथ ही अपना आशीर्वाद देकर हमें पुरस्कृत करेंगे।

बैंगलूर के एक धनी–मानी उद्योगपति गरीबों की मदद अपने ही ढंग से करते थे। सर्दियों में, वे अपनी गाड़ी में गरम चादर भरके, आधी रात को घर से निकलते थे। रास्ते में, या पटरियों पर जो काँपते सोते लोग नज़र आते थे वे उन पर चादर ओढ़ा देते थे और चुपचाप वहाँ से निकल पड़ते थे। उन गरीबों को कभी पता न चलता था कि उनकी मदद किसने की थी।

क्या अज्ञात रूप से गरीबों की मदद करना श्रेष्ठ पुण्य कार्य नहीं है ? क्या ईश्वर इसे नहीं देखेंगे ? क्या ईश्वर से उन्हें और उनके वंशजों को इस अद्‌भुत कार्य का लाभ नहीं मिलेगा ? आज वह धनी व्यक्ति जीवित नहीं है पर उनका बेटा कर्नाटक का एक जानामाना उद्योगपति है।

निःस्वार्थ सेवा के चमत्कारों को दर्शाने वाली अमेरिका में घटित एक यथार्थ कहानी सुनाऊँगा। रॉक फेल्लर अमेरिकी थे और विश्व के अत्यधिक धनी व्यक्ति थे। एक बार अपनी अस्वस्थता के कारण वे शय्याग्रस्त हो गए। वे घोर पीड़ा में थे। न ही संसार के बेहतरीन चिकित्सक उनका इलाज कर पा रहे थे और न ही संसार की बेहतरीन दवाएं उनको रोग-मुक्त करा सकती थीं।

उनकी सभी इंद्रिय ठीक-ठाक थीं, पर वे खड़े होने में और चलने में असमर्थ थे। प्रतिदिन उनकी विभिन्न कम्पनियों की दैनिक रिपोर्ट, परामर्श के लिए उनके पास आती थीं, और वे दर्द से चूर, लेटे-लेटे, उन पर अपना आदेश जारी करते थे।

समय के साथ-साथ उनकी स्थिति बद से बदतर होती गई। चिकित्सक भी घबरा गए- चकरा गए। अंतिम विकल्प के रूप में उन्होंने मनोवैज्ञानिकों की सलाह लेने का निश्चय किया। मनोवैज्ञानिकों ने उनकी जाँच की और रॉकफेल्लर से कहा- "अब से आप गरीबों की सहायता कीजिए। आपकी रोगमुक्ति के लिए अब शायद वही एकमात्र और अंतिम मार्ग है।"

रॉकफ़ेल्लर एक चतुर व्यवसाई और अच्छे प्रशासक थे। धन कमाने की, उसकी रक्षा करने की और उसकी वृद्धि करने की कला में वे पारंगत थे। पर उन्होंने न कभी निःस्वार्थ कर्म किए थे, न ही गरीब और पीड़ितों की मदद। पर अब जब मनोवैज्ञानिकों की सलाह मानने के सिवाय और कोई चारा नहीं था, तो उन्होंने कुछ

लाख डालर गरीबों की मदद के लिए दे दिए। चमत्कारिक रूप से उनकी देह स्थिति सुधर गई और चलने-फिरने की शक्ति लौट आई।

गरीबों के प्रति उदारता के फल का अनुभव होते ही, उन्होंने कुछ और लाख डालर गरीबों के उद्धार के लिए खर्च किए। उनका स्वास्थ्य लौट आया और वे फिर से सामान्य और सक्रिय हो गए। तभी उन्होंने रॉकफेल्लर फाउंडेशन (भारत की धर्मार्थ संस्थाओं के बराबर की) नामक संस्था की स्थापना की जो पूरे विश्व में 'परोपकारिता' की पर्यायवाची मानी जाती है। उन्होंने गरीबों की मदद और उद्धार के लिए करोड़ों डालर खर्च किए। आज भी रॉक फेल्लर फाउंडेशन विश्व की सबसे बड़ी परोपकारी संस्थाओं में से एक है।

अमेरिका के लोग दान की महत्ता जानते हैं। इसलिए वहाँ की सभी व्यवसायी संस्थाएं और अधिकांश लोग, अपनी कमाई का एक अंश धर्मार्थ अलग रख देते हैं।

पर हमारे देश में परिस्थिति भिन्न है। यहाँ लाखों धनी लोग हैं। उनमें से 95 प्रतिशत लोग मंदिर, मस्जिद या गिरजाघरों को दान देते हैं। वे कभी पीड़ितों की मदद के लिए आगे नहीं आते हैं।

एक कर्मचारी, जिसने अपनी ज़िंदगी के कई साल कम्पनी की सेवा में बिताए हो, जब अपनी पत्नी के आपरेशन के लिए, अपने मालिक से उधार माँगता है, तो मालिक का उत्तर यह होता है- "व्यापार मंद चल रहा है। मुझे खेद है कि मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता।" पर तुरंत ही, किसी मंदिर में कुंभाभिषेक के लिए चंदा माँगने आए लोगों को खुशी-खुशी कुछ हज़ार रुपए दे देता है।

कुछ लोग बिजली के पंखे और ट्यूब लाइट पर अपना नाम बड़े-बड़े अक्षरों में

लिखवाकर उन्हें मंदिरों में लगवाते हैं। ये लोग गरीबों की मदद न कर मंदिरों में दान क्यों देते हैं? इसका कारण क्या है? ये दानी लोग यह सोचते हैं कि- "इस प्रकार हमारा नाम सदा ईश्वर की आँखों के सामने रहेगा और बदले में इनके लिए खर्च किए गए पैसों से कई गुना ज़्यादा वे हमें लौटाएँगे। लेकिन गरीबों की मदद करके क्या लाभ होगा? ईश्वर को भी हमारे कार्य के बारे में पता नहीं चलेगा, तो हमारे निवेश का हमें कोई लाभ नहीं मिलेगा।" हमारे स्वार्थी विचार, ईश्वर की सर्वज्ञता और शक्ति को न समझने की हमारी भूल हमें अधोगति की ओर ले जाती है।

मानवीयता

एक सामाजिक संस्था ने विश्व के विभिन्न देशों के लोगों के मानवीय गुणों का सर्वेक्षण किया, तदनुसार उन देशों को क्रमांकित किया। इसमें भारत का 136 वां स्थान है। अधिकतर पश्चिमी देश पहले पच्चीस स्थानों के अंतर्गत आते हैं।

पिछड़े राष्ट्र (Third world countries) इस क्रम में अपना स्थान सौ से भी नीचे पाते हैं। इस सूची में सबसे ऊपर अमीर और विकसित देश हैं और सबसे नीचे गरीब और पिछड़े देश हैं।

मानवीय गुण अधिक होने वाले देश अमीर और स्वस्थ हैं। वहाँ के लोग बेहतरीन शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा और अच्छी सामाजिक-व्यवस्था से संपन्न होते हैं। जिन देशों में मानवीय गुणों की कमी है, वहाँ गरीबी, बीमारी, अकाल और भूख पायी जाती है।

मानवीयता किसे कहते हैं? दूसरों का आदर करना, उनको दुख न पहुँचाना और उनका दुःख हरण करना आदि गुणों को मानवीयता कहते हैं। इन्हीं गुणों का ईश्वर आदर करते हैं और यही गुण हमारी पुण्य-प्राप्ति के साधन हैं। जिस व्यक्ति में अधिक मानवीय गुण हैं, वह समाज में ऊँचा होता है। उसे ईश्वर की दया और आशीर्वाद प्राप्त होते हैं। जिस देश में ऐसे लोग अधिक संख्या में होते हैं, वह देश समृद्ध और सभी क्षेत्रों में विकसित होता है।

जनता की सेवा, ईश्वर की सेवा है।

(स्वामी विवेकानंद)

मंदिर की मूर्तियों में ईश्वर को देखने वाला व्यक्ति, भक्ति के निचले स्तर पर होता है। विधवा के आँसू पोंछने वाला, भूखे को खाना खिलाकर उसकी भूख मिटाने वाला, दूसरों के दुख हरण को ईश्वर की सेवा मानने वाला व्यक्ति भक्ति के उच्चतम स्तर पर होता है।

(स्वामी विवेकानंद)

बहुत सक्रियता और उत्साह से हम मंदिरों का निर्माण करते हैं। केवल कुंभकोणम् में ही दो सौ से भी अधिक मंदिर पाए जाते हैं। पर समृद्ध पश्चिमी राष्ट्रों में गिरजाघर के निर्माण को अधिक महत्व नहीं देते हैं। वहाँ बड़े-बड़े शहरों में भी चार या पाँच से अधिक गिरजाघर देखने को नहीं मिलते हैं।

पश्चिमी देशों के ईसाई लोग सेवा मनोभाव के होते हैं। वे गरीब देशों के पहाड़ी और पिछड़े इलाकों में अस्पताल खोलकर गरीबों की चिकित्सा करते हैं। चाहे बच्चों की संख्या कम ही क्यों न हो, वे उनके लिए छोटे-छोटे घरों में पाठशाला आरंभ कर देते हैं। आगे चलकर यही छोटी-छोटी पाठशालाएँ बड़ी-बड़ी संस्थाएँ बन जाती हैं और असंख्य पीड़ितों की मदद करती हैं।

ईसाई समुदाय न केवल अपने देश में बल्कि पूरे विश्व में गरीबों की सेवा को अधिक महत्व देता है। उसकी अपनी कमियाँ और न्यूनताएँ होने के बावजूद वह आज एक विकसित, समृद्ध और प्रगतिशील समुदाय के रूप में उभर आया है। जापान के सिवाय, विश्व के पहले बीस समृद्ध राष्ट्र ईसाई राष्ट्र हैं।

क्या ईश्वर ने बिना किसी ठोस कारण ही, इन राष्ट्रों को समृद्धि प्रदान की है? इन राष्ट्रों में अभिनंदन करने, कदर करने और सीखने योग्य ढेर सारी बातें हैं। केवल मित्रों से ही नहीं, बल्कि अपने शत्रुओं से भी हमें अच्छे गुण सीखने चाहिए और जीवन में उनका पालन करना चाहिए। तभी हम अच्छा और आनंददायी जीवन बिता सकते हैं।

ईश्वर किसी मनुष्य या प्राणी को उसकी योग्यता से कम, ज़्यादा या गलत दंड नहीं देते हैं। उसी प्रकार किसी को कम, ज़्यादा या गलत पुरस्कार भी नहीं देते हैं। ईश्वर जो भी देते हैं, मनुष्य उसका हक़दार होता है। चाहे वह अमीर हो, मध्यमवर्गीय या गरीब, रोगी हो या तंदुरुस्त, शिक्षित हो या अशिक्षित, उसकी स्थिति जैसी भी हो, पर ईश्वर दक्षता और सतर्कता से परखकर उसे पुरस्कार या दण्ड देते हैं।

इसलिए गरीब का अमीर से, रोगी का तंदुरुस्त से, कुरूप का सुंदर से, भाग्यहीन का भाग्यशाली से ईर्ष्या करना अर्थहीन है।

चूँकि अच्छे व्यक्ति ने अच्छे कर्म किए हैं, ईश्वर ने उन्हें सुखी जीवन प्रदान किया है। उस व्यक्ति को देखकर सभी को इस प्रकार की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। ''मैं भी अच्छा काम करके ईश्वर का कृपापात्र बनूँगा। मैं भी उस सुखी व्यक्ति जैसा या उससे भी ऊँचा स्थान पाऊँगा।''

गीतासार	मेरी व्याख्या
जो भी हुआ, अच्छा हुआ	ईश्वर ने मनुष्य को जो भी पुरस्कार या दंड दिए थे, वे सही और न्यायसंगत थे, और उन्हें दक्ष और सतर्क हिसाब के बाद दिया गया था।
जो भी हो रहा है, अच्छा हो रहा है।	ईश्वर मनुष्य को जो भी पुरस्कार या दंड दे रहे हैं, वे सही और न्यायसंगत हैं और उन्हें दक्ष और सतर्क हिसाब के बाद दे रहे हैं।
जो भी होगा, अच्छा होगा	ईश्वर मनुष्य को जो भी पुरस्कार या दंड देंगे, वे सही और न्यायसंगत होंगे और उन्हें दक्ष और सतर्क हिसाब के बाद दिया जाएगा।

"संसार में ईश्वर की इच्छा के बिना एक परमाणु भी नहीं हिल सकता।" "वे ही सभी वस्तु और घटनाओं के कारण कर्त्ता हैं।"

ईश्वर के बारे में ये विचार सौ प्रतिशत सही हैं। ये बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के शब्द हैं। ऋषि-मुनि भी केवल सत्य ही बोलते हैं। वे लोगों का गलत मार्गदर्शन नहीं करते हैं। समय के साथ-साथ, उनके विचारों के साथ कई और विचार भी जुड़ गए हैं। जिस प्रकार राजहंस पानी को त्यागकर केवल दूध को ही ग्रहण करता है, उसी प्रकार हमें भी अपने विवेक का उपयोग कर इन कथनों में से ज्ञानियों द्वारा कथित सत्य को ही ग्रहण करना चाहिए।

ईश्वर ने धनी लोगों को सुविधापूर्ण जीवन प्रदान किया है। उन लोगों के पास दूसरों की सहायता कर पुण्य कमाने के कई साधन हैं। वे बिना किसी बलिदान के, अपने सुख को त्यागे बिना, किसी के सामने झुके बिना; अपनी सम्पत्ति के बल पर गरीबों की सेवा कर सकते हैं। इससे वे ईश्वर की कृपा के पात्र बनकर अपनी वर्तमान स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं या उसमें और उन्नति कर सकते हैं। आजकल की कॉर्पोरेट दुनिया में कंपनी कर्मचारियों के लिए नारा है- "काम में सुधार की हमेशा गुंजाइश होती है।" यही बात आध्यात्मिक विषयों के लिए भी लागू होती है।

यह मत सोचिए कि केवल धनी लोग ही गरीबों की सहायता कर पुण्य कमा सकते हैं। कृपया वह कहानी याद कीजिए जो एक नेवले ने महाभारत में गरीब ब्राह्मण और अश्वमेध यज्ञ के बारे में सुनाई थी।

मेरी फैक्टरी में एक महिला निरीक्षक है जिसकी एक छोटी सी बेटी है। वह लड़की आठवीं कक्षा में पढ़ती है। उसने अपनी माँ से मेरे धर्मार्थ कार्यकलापों के बारे में

सुना है। वह स्कूल में दोपहर में खाने के लिए अपने साथ खाना ले जाती है। जिस दिन कक्षा की कोई और लड़की खाना नहीं लाती है, तो वह अपना खाना उसे दे देती है। *गौर करें, कि वह अपना खाना बाँटती नहीं है, बल्कि उसे पूरे का पूरा दे देती है।* यह एक श्रेष्ठ प्रकार की सहायता है जो कोई किसी के लिए सकता है। वह खुद भूखी रहने के लिए तैयार है, पर दूसरी भूखी लड़की को खिलाना चाहती है। उसकी इस क्रिया में सच्चा त्याग है। मैं भी लोगों की कई प्रकार की मदद करता हूँ पर उनमें ऐसा सच्चा त्याग भाव नहीं होता है। ईश्वर ने मुझे आवश्यकता से अधिक जो सम्पत्ति दी है, उसी को मैं पीड़ितों के लिए खर्च करता हूँ। इसलिए ईश्वर भी मेरे इन परोपकारी कार्यों से उस लड़की की मदद को ही अधिक श्रेष्ठ मानेंगे।

ऐसे कितने ही गरीब लोग हैं, जो पीड़ित लोगों की सार्थक सेवा करते हैं। हम नियमित रूप से जो नेत्र शिविर का संचालन करते हैं, उसके लिए एक साठ साल का समाज सेवक अपने गाँव से रोगियों को लाता है। पूरा दिन उनके साथ रहता है और शिविर के बाद आगे के इलाज के लिए उनको कोयंबतूर रवाना कर, वह अपना गाँव लौटता है। साठ साल की एक बूढ़ी औरत सप्ताह में एक बार धर्मपुरी के सरकारी अस्पताल में गरीब रोगियों के हाथ बँटाने जाती है। एक और औरत है जो रोज़ शाम को झोपड़पट्टी के गरीब माँ-बाप के बच्चों को उचित शिक्षा देती है। बिना अधिक धन खर्च किए, लोगों की मदद करने के कई मार्ग हैं, जैसे दुःखी लोगों की मदद करना, रक्तदान और नेत्रदान शिविरों का आयोजन करना, तड़पते लोगों को दिलासा देना, उलझे हुए और संभ्रांत लोगों का मार्गदर्शन करना आदि। जहाँ चाह वहाँ राह।

अब हम भिन्न प्रकार की बाधाओं का श्रेणीकरण करेंगे। 'क' अपनी पत्नी और बच्चों के साथ यात्रा पर निकलता है। वह स्वयं गाड़ी चला रहा है। रास्ते में गाड़ी का एक पहिया पंक्चर हो जाता है और स्टेप्नी में भी हवा नहीं होती है। इससे उसे और उसके परिवार को कष्ट होता है। 'च' एक कारखाने का मालिक है। कोई बिल

चुकाने के लिए उसे निर्धारित दिन, बैंक में पैसे भरने हैं, पर उसके पास उतने पैसे नहीं हैं। अगर समय पर रुपए नहीं भरे गए तो उसकी प्रतिष्ठा और कारोबार दोनों पर बुरा असर होता है जो उसके लिए बहुत कष्टदायी बात है।

'ट' एक कॉलेज का विद्यार्थी है और उसके पास परीक्षा शुल्क देने के लिए पैसे नहीं हैं। 'त' की पत्नी शय्याग्रस्त है, और उसकी दवा के लिए 'त' के पास पैसे नहीं हैं। 'प' एक छोटे बच्चे की माँ है। उसका पति कहीं चला गया है और बहुत दिनों से लौटा नहीं है। बच्चा दूध के लिए रो रहा है और माँ के पास दूध के लिए पैसे नहीं हैं।

इनमें से कौन अत्यधिक दु:खी है? किसी एक का दु:ख कम करने का अवसर मिलने पर आप इनमें से किसकी मदद करेंगे? अनुकम्पा की सहज प्रवृत्ति से आप या तो 'त' की, या 'प' की मदद करेंगे। नि:संदेह, यह सही भी है और इसके लिए आप ईश्वर के प्रेमपात्र भी बनेंगे। हमेशा गरीब पीड़ितों के दुखनिवारण को ही अग्रता देनी चाहिए।

बच्चे, स्त्रियाँ और बूढ़े लोगों को दी जाने वाली मदद श्रेष्ठ होती है। अगर मदद पाने वाले ये लोग गरीब भी होते हैं, तो यह श्रेष्ठता दुगनी होती है। इसीलिए शायद बाइबल में कहा गया है कि ***"मेरे गरीब भाइयों में से किसी एक की मदद, मेरी मदद के बराबर होगी।"***

(ईश्वर)

वस्तुत: हम भारतीय एक प्रकार से भाग्यशाली हैं। यहाँ हज़ारों पीड़ित लोग हैं, जिनकी हम मदद कर सकते हैं। उनकी सहायता करके पुंण्य कमाने के कई मौके भी हैं। पर दौलतमंद पश्चिमी राष्ट्रों में, ऐसे लोगों का मिलना कठिन है जो सचमुच दु:खी हों। गरीब दु:खी लोगों की संख्या उन राष्ट्रों में बहुत कम हैं। जितने भी हैं, उनकी मदद के लिए वहाँ की सरकार अपना हाथ आगे बढ़ाती है।

एक बड़े दफ़्तर में लगभग 100 लोग काम कर रहे हैं। वहाँ का मैनेजर एक ईमानदार, निष्पक्ष, मेहनती और काबिल व्यक्ति है। उस व्यक्ति में निम्नांकित पाँच गुण हैं, जो जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक हैं। (1) सत्यता (2) ईमानदारी (3) परिश्रमी स्वभाव (4) निरुपद्रवी स्वभाव (5) गरीबों का कष्ट-हरण करने का गुण

उन सौ कर्मचारियों में प्रत्येक का वेतन 5000 रु. प्रति महीना है। मैनेजमेंट उससे कहती है, कि उन सौ लोगों में से दस लोगों को तरक्की के लिए चुने जिनमें हर दो के अलग पद और अलग वेतन होंगे।

पहले वर्ग के पद के हर एक का वेतन 10,000/- प्रति महीना, दूसरे वर्ग के पद के हर एक का वेतन 9000/- प्रतिमाह, तीसरे वर्ग के पद के हर एक का मासिक वेतन 8000/- रु. चौथे वर्ग के पद के हर एक का वेतन 7000/- रु. प्रतिमाह और पाँचवे वर्ग के पद के हर एक का मासिक वेतन 6000-/ रु, इस सूची के आधार पर उसे अब चयन करना है।

मैनेजर के पास उन दस लोगों में प्रत्येक की विस्तृत जानकारी है, जैसे कि उनकी नियुक्ति की तारीख, उनकी उपाधियाँ, उनके दफ़्तर में आने-जाने का समय, साल में उनसे ली गई छुट्टियों की संख्या, काम के प्रति उनकी लगन, उनकी कार्यक्षमता आदि। वह स्वयं उस दफ़्तर में पाँच सालों से काम कर रहा है, और इन सालों में वहाँ काम करने वालों का उसने नजदीकी से अवलोकन किया है और उनके प्रति अपनी राय बना ली है। इन जानकारियों और उन कर्मचारियों के आचरण के बारे में अपनी राय के आधार पर, वह उनकी कार्यक्षमता, ईमानदारी और उच्च पद के लिए उनकी योग्यता का एक दूसरे से तुलना कर अंत में उन लोगों का चयन करता है।

उसके कुछ सगे-संबंधी भी उसी दफ़्तर में काम कर रहे हैं। पर वे काबिल नहीं हैं। उसके कुछ सहयोगी उसके साथ निष्ठा और विनम्रता से पेश आते हैं और कुछ निष्ठ और विनम्र होने का दिखावा करते हैं। कुछ लोग उसके बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बोलते हैं और उसकी खुशामदी करते हैं। ये सभी लोग काबिल नहीं हैं। पर वह इन लोगों की उपेक्षा कर, दक्ष और सक्षम लोगों को तरक्की के लिए चुनता है।

चुने गए अभ्यर्थियों में कुछ ने, चाहे इसके प्रति अनावश्यक विनम्रता न दिखाई हो, चाहे दफ़्तर में इससे मिलने की कोशिश न की हों, या कभी इसके बारे में कुछ बुरा भी कहा हो, पर उसने इन बातों की उपेक्षा कर इनको चुना है क्योंकि ये दक्ष और सक्षम हैं, और अपना काम पूरी लगन से करते हैं। दफ़्तर को सक्षम रूप से चलाने के उद्देश्य से, मैनेजर तरक्की के लिए केवल ऐसे लोगों को जागरुकता से चुनता है। सक्षम और योग्य लोगों को तरक्की देना ही उसका उद्देश्य है।

जब एक साधारण सा, दफ़्तर का मैनेजर खुशामदी, झूठी विनम्रता, सिफ़ारिश, स्वजन-पक्षपात आदि का अवगणन कर, केवल ईमानदार, परिश्रमी और योग्य लोगों को चुनता है, तो क्या असीम बुद्धिशक्ति और ज्ञान के होते ईश्वर अपनी आशिष देने के लिए सही व्यक्ति को चुनने में अत्यंत सतर्क और जागरुक नहीं होंगे? एक कथन है- ***कपटी भक्त से ईमानदार नास्तिक बेहतर होता है।***

किसी नास्तिक के अपने बारे में बुरा कहने से ईश्वर को बुरा नहीं लगता। ईश्वर की महत्ता, न नास्तिक की निंदा से घटती है, न ही भक्त की प्रशंसा से बढ़ती है। नास्तिक के ताने और भक्त की प्रशंसा का ईश्वर पर कोई असर नहीं होता है। वे इन सब से परे हैं और लोगों की आलोचनाओं से अविचलित हैं।

जिस प्रकार दफ़्तर का एक अच्छा मैनेजर अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को उनकी

योग्यता के आधार पर आँकता है, न कि उनकी खुशामद करने की काबिलियत पर, उसी प्रकार ईश्वर भी हमें हमारे दैनिक आचरण के आधार पर आँकते हैं, न कि हमारी मंदिर जाने की, या पूजा करने की क्रिया के आधार पर। हमें इस तथ्य से अवगत रहना चाहिए कि ईश्वर असीम बुद्धिमान और ज्ञानी हैं।

ऐसे कई नास्तिक हैं, जो सदाचारी हैं, ईमानदार हैं, विनम्र हैं, सहृदयी हैं और जीवन में अच्छे काम करके अपनी पत्नी और बच्चों के साथ खुशहाल जीवन बिता रहे हैं। आपने भी ऐसे नास्तिकों को देखा होगा या उनके बारे में सुना होगा। लेकिन ईश्वर ऐसे नास्तिक लोगों को ऐसा सुखी जीवन कैसे प्रदान कर सकते हैं? ईश्वर उनको आँकते समय उनके पूजा न करने या मंदिर न जाने के स्वभाव की अवज्ञा कर, उनके अच्छे गुण और परोपकारी क्रियाओं को ध्यान में रखते हैं। ऐसे भक्तों की कमी नहीं है, जो एक अव्यवस्थित और स्वार्थी जीवन बिताते हैं, बुरे कर्म करते हैं और नियत रूप से मंदिर जाकर पूजा करते हैं। ऐसे भक्तों को ईश्वर केवल दण्ड ही देते हैं। वे जानते हैं कि ये गोमुख व्याघ्र हैं।

ईश्वर को कोई ठग नहीं सकता है। जो ठगने की कोशिश करते हैं, उनका विनाश होता है। मान लीजिए दो लोग एक ही प्रकार की भूल करते हैं, एक बिना किसी उद्देश्य से और दूसरा ठगने के उद्देश्य से। क्या दोनों को एक ही प्रकार का दण्ड मिलेगा? कदापि नहीं। ईश्वर हमेशा उन लोगों को दण्ड देते हैं, ज़ो उन्हें धोखा देने की कोशिश करते हैं। ये ठग अपना गड्ढ़ा खुद खोदते हैं।

जो लोग ठगने का सोचते हैं, वे खुद ठगे जाते हैं।

(तमिल कहावत)

इस कहावत के अनुसार, दूसरों को दुख देने की हमारी सोच ही ईश्वर को असंतुष्ट

कर हमें दण्ड दिलाती है। ईश्वर का क्रोध या उनकी असंतुष्टि पाने का सामान्य तरीका है, दंडनीय कर्म करना या दूसरों को कष्ट देना। दूसरा तरीका है, ठगने का सोचना और उस बुरी सोच के कारण दण्ड पाना। ईश्वर हमारे बुरे विचारों के बारे में जानते हैं और बुरा सोचने के पाप के लिए हमें दण्ड देते हैं।

धर्मपुरी जिले के बरगूर नामक छोटे शहर में अंधे बच्चों की एक पाठशाला है। पिछले कई सालों से, जर्मनी की क्रिश्चियन ब्लिंडन मिशन नामक एक लोकोपकारी संस्था, इस पाठशाला की हर प्रकार से मदद कर रही है। जर्मनी के स्कूली बच्चे भी अपने जेब खर्च का एक भाग बचाकर इस पाठशाला के लिए अलग रखते हैं। दूर देश भारत, उसमें भी दूरस्थ शहर बरगूर और वहाँ के अंधे बच्चे! उन्होंने न कभी भारत को देखा है, न बरगूर को, न ही उन बच्चों को। फिर भी वे सोचते हैं कि उन्हें इन गरीब दुखियारों की सहायता करनी चाहिए।

यहाँ भारत में ऐसे लोग हैं जो अपने, अपने परिवार और बच्चों के उद्धार के लिए सदा स्वार्थयुक्त पूजा, अनुष्ठान, अभिषेक आदि में आसक्त रहते हैं। आपके अनुसार ईश्वर इनमें से किस पर अपनी आशिष बरसाएँगे? उन निःस्वार्थ स्कूली बच्चों पर जिन्होंने उन अंधे बच्चों की मदद की, जिन्हें उन्होंने कभी नहीं देखा, यां उन स्वार्थी लोगों पर जिन्होंने अपने अलावा कभी किसी और के बारे में नहीं सोचा। अगर हम सोचते हैं कि ईश्वर को अच्छे लोगों को चुनना नहीं आता, तो हमसे बड़ा मूर्ख कोई नहीं होगा।

लोग अक्सर कहते हैं, "मैं बड़ी मुसीबत में फँसा था। तभी मैंने अमुक ईश्वर की प्रार्थना की और मुसीबत टल गई। फिर दूसरी मुसीबत आई तो मैंने अमुक ईश्वर की पूजा की तो वह मुसीबत भी टल गई। हमारी मदद करने की इच्छा और शक्ति अमुक ईश्वर से अधिक अमुक ईश्वर में है। तुम भी अमुक ईश्वर की शरण में जाओ, तुम्हारे

दुख को हरने की शक्ति केवल उन्हीं में है, और वे ही सबसे अधिक शक्तिशाली हैं।''- अगर किसी ईश्वर में आपके दुखहरण की शक्ति है, तो उन दु:खों को मूलत: दिया किसने है? ध्यान से सोचिए। क्या यह वही ईश्वर नहीं हैं, जिन्होंने मूलत: आपको कष्ट दिए थे? लोगों द्वारा, बीमारियों द्वारा, दुर्घटनाओं द्वारा, मुसीबत चाहे जिस किसी रूप में भी आए, पर वह आपके पापों के लिए ईश्वर का दिया दण्ड होता है।

व्यक्ति की भलाई और बुराई का कारण वह खुद होता है,
न कि कोई और।

तमिल पंडित- कणियन पूंगुंद्रनार

जीवन में हमें मिलने वाले पुरस्कार या दण्ड दूसरों से नहीं दिए जाते। ये हमारे पूर्व में किए गए पुण्य और पाप कर्मों के आधार पर ईश्वर से दिए जाते हैं। कष्ट देने वाले ईश्वर यह भी जानते हैं कि उसका परिहार कब हो, और कष्ट-हरण का समय भी वे खुद निश्चित करते हैं। आपकी प्रार्थना के आधार पर वे आपका कष्ट-हरण नहीं करते।

जितना हो सके, ईश्वर से अकारण निवेदन या आग्रह न करें। ईश्वर सर्वशक्त और सर्वज्ञ हैं। वे जानते हैं कि हमें कब, कैसे और क्या दिया जाए। उन्होंने अपना एक श्रेष्ठ न्याय-तंत्र विकसित किया है। हम उस सुंदर, परिपूर्ण, सुस्पष्ट तंत्र में दखल न दें। सैकड़ों कर्मचारियों वाला एक बड़ा दफ़्तर, एक वरिष्ठ अधिकारी के नियंत्रण में है। वह बहुत ही स्पष्टवादी, ईमानदार, सच्चा और योग्य व्यक्ति है। वह धन, प्रशंसा, दूसरों की सिफ़ारिश, नेताओं की धमकियाँ आदि से प्रभावित नहीं होता है। जब भी किसी खास विषय की उसे जानकारी मिलती है, और उसके बारे में उसे निर्णय लेना होता है, तो वह हमेशा न्यायसंगत और सही निर्णय लेता है। उसके पास किसी प्रकार

की सिफ़ारिश ले जाने से या उससे किसी प्रकार की सहायता माँगने से हर कोई डरता है। जो भी उसे ठीक से जानता है, वह यही कहता है– "अरे। यह मामला तो उसके अधीन है और निर्णय लेने वाला भी वही है। उस पर दबाव डालने में कोई अर्थ नहीं है। अगर हम योग्य हैं, तो अवश्य हम उसके निर्णय से लाभान्वित होंगे।" जब एक ईमानदार और अच्छा व्यक्ति इस प्रकार का योग्य व्यवहार कर सकता है, तो क्या हम उस ईश्वर से अन्याय की अपेक्षा कर सकते हैं, जिन्होंने इस सृष्टि की रचना की है, जो इस विश्व का नियंत्रण कर रहे हैं और जो हमसे करोड़ों गुना अधिक बुद्धिमान, ज्ञानी और बलवान हैं। अतः आप अपनी व्यक्तिगत माँगों से उन्हें परेशान मत कीजिए। "हे ईश्वर, मुझ पर कृपा कीजिए।"– इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना कीजिए।

अगर आप हमेशा उनसे किसी न किसी चीज़ का आग्रह करते रहेंगे तो वे आपके इस तंग करने के स्वभाव से खीज उठेंगे। लेकिन, अगर आप सब कुछ उनके हाथ में सौंप, केवल प्रतीक्षा करते रहेंगे, तो शायद वे आपको आशीर्वाद देंगे।

तुलना

हमारा सहज स्वभाव है कि हम अपने आप की दूसरों से तुलना कर दुःखी हो जाते हैं। इस स्वभाव की सबसे बड़ी कमज़ोरी है कि हम अपनी तुलना अपने से बेहतर लोगों से कर, दुखी हो जाते हैं। अगर कोई हमसे अधिक खूबसूरत है, तो हम उससे अपनी तुलना खूबसूरती के आधार पर करते हैं। पर अन्य विषय जैसे सम्पत्ति, पत्नी, बच्चे- आदि में हम उससे बेहतर स्थिति में हो सकते हैं। फिर भी हमें खेद रहता है कि हम उतने खूबसूरत नहीं हैं, जितना वह है। उसी प्रकार सम्पत्ति, अच्छी पत्नी, सुखी परिवार, अच्छा स्वास्थ्य आदि प्रत्येक विषय में हम अपनी तुलना अपने से अधिक भाग्यशालियों के साथ कर दुःखी हो जाते हैं।

क्या ज़िंदगी में कम से कम एक बार हमने अपनी तुलना अपने से कम किस्मतवर लोगों से की है? ऐसे कई लोग हैं, जिन्हें दिन में एक बार का खाना नसीब नहीं होता, जिनका खुदं का घर नहीं है और इसलिए सड़क पर गुज़ारा कर रहे हैं, जिनके पास बच्चों की किताब और कलम खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं, जिनके पास पत्नी की दवा के लिए पैसे नहीं हैं, जिनके पास बच्चों के लिए दूध खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। क्या हम कभी ऐसे अभागे लोगों से अपनी तुलना करते हैं? उनसे अपनी तुलना करने से हमें पता चलता है कि हम कितने खुशनसीब हैं। तभी हमें इस सुस्थिति में रखने के लिए हम ईश्वर का आभार मान सकते हैं, और इससे हमें अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए शारीरिक और मानसिक शक्ति भी मिलती है।

इस समय हमें इस कथन को याद करना चाहिए ***''मैं जूतों के लिए अपना दुखड़ा रो रहा था जब तक मैंने एक टांगहीन को देखा।'' ''ईश्वर जो देते हैं उसे कोई***

ठुकरा नहीं सकता, ईश्वर जो नहीं देना चाहते हैं, उसे कोई दे नहीं सकता'' अगर ईश्वर कोई पुरस्कार या दण्ड देना चाहते हैं, तो विश्व की कोई भी शक्ति या सारी शक्तियाँ मिलकर भी उन्हें रोक नहीं सकतीं। उसी प्रकार ईश्वर कोई पुरस्कार या दण्ड नहीं देना चाहते हैं, तो कोई और उसे दे भी नहीं सकता।

सेना के भूतपूर्व प्रमुख जनरल पद्मनाभन ने एक मुलाकात में कहा, *''कश्मीर में, जब भी मैं, मोरचा या आतंकवादियों के गुप्त स्थान पर जाता हूँ, तो मैं ईश्वर के बनाए सुरक्षा-चक्र पर अधिक विश्वास करता हूँ, न कि अपने सैनिकों द्वारा निर्मित सुरक्षा-चक्र पर।''*

हम अपनी स्वास्थ्य-संबंधी समस्याओं की जाँच कराने डॉक्टर के पास जाते हैं। वह हमारा रक्त, मूत्र आदि की परीक्षा कर हमें बताता है कि हमें मधुमेह की समस्या है। वह हमसे यह भी पूछता है कि हमारे माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी में से क्या कोई इस बीमारी का शिकार था, और कहता है कि, अगर उनमें से कोई था, तो अवश्य हम भी इस रोग से ग्रस्त होंगे। डाक्टर यह भी कहता है कि, खाने पर नियंत्रण रखकर, नियमित व्यायाम करके, शरीर को सक्षम रखने के बावजूद यह रोग हमें अवश्य होगा।

वैद्यकीय शोध से यह बात सामने आई है कि, आपके चमड़े का रंग, बालों का रंग, आँखों का रंग, आपकी शरीर-गठन, आपका स्वास्थ्य और कुछ हद तक आपका स्वभाव, आपके माता-पिता, दादा-दादी और नाना-नानी के लक्षणों पर ही आधारित होते हैं। 'जीन' के आधार पर ही ये लक्षण आपको प्राप्त होते हैं। 'जीन' के स्वभाव और लक्षण आपकी आनुवांशिकता से निर्धारित होते हैं। आपके माता-पिता, दादा-दादी और नाना-नानी के जीन के आधार पर आपके 'जीन' निर्धारित होते हैं। इसलिए, आपके माता-पिता, दादा-दादी और नाना-नानी की शरीर-गठन, स्वास्थ्य

और स्वभाव का आप पर प्रभाव रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध जिस बात का पता आज लगा रही है, हमारा हिन्दू-धर्म सदियों पहले उसे बता चुका है। किसी व्यक्ति से अर्जित पुण्य और पाप उसकी अगली सात पीढ़ियों तक प्रवहित होते हैं। कितना महान् है हमारा हिन्दू धर्म।

अगर आप चाहते हैं कि आपके बच्चे और उनकी अगली पीढ़ियाँ सुखी रहें, तो आप बहुत सारे अच्छे काम कीजिए। आपके अच्छे कर्म ही आगे उनकी रक्षा कर सकते हैं। कृपया मूर्खों की तरह यह मत सोचिए कि आगे केवल आपकी सम्पत्ति और आपका धन उनकी रक्षा करेगा।

यह आपका कर्तव्य है कि आप अपने बेटे-बेटियों के लिए थोड़ी सी धनसम्पत्ति छोड़ें, लेकिन अधिक सम्पत्ति का छोड़ना केवल उनको बिगाड़ने के बराबर है। गलत रास्ते से कमाया अधिक धन, बुरे दोस्त और बुरी आदतों को आकर्षित करता है जिसके फलस्वरूप ज़िंदगी बिगड़ जाती है। सीमित धन, सीमित सम्पत्ति और ढ़ेर सारे गुण उन्हें एक अत्युत्तम स्थिति पर पहुँचाते हैं और आगे बढ़ने में उनकी मदद करते हैं।

आध्यात्मिकता, ईश्वर को जानना, सार्थक जीवन किस प्रकार बिताया जाए- इन बातों के बारे में आपको बीस साल की उम्र में ही जान लेना चाहिए न कि जब आप साठ साल के हो। अधिकतर ज़िंदगी जी लेने के बाद, साठ साल की उम्र में सीखने से आप ज़्यादा कुछ नहीं कर पाएंगे। जब आप छोटी उम्र में यह सब सीखते हैं, तो यही ज्ञान, अपना जीवन सही ढंग से जीने में, फलस्वरूप अपने बच्चे, समाज और देश की सेवा करने में अधिक मददगार साबित हो सकता है।

"परमाणु की न सृष्टि की जा सकती है, न ही उसका विनाश किया जा सकता है।"

वैज्ञानिक सिद्धांत

सृष्टि के प्रारंभ से अब तक न किसी नए परमाणु का सृजन हुआ है, न किसी का नाश। परमाणु इतने सूक्ष्म होते हैं कि उन्हें केवल सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखा जा सकता है। संसार की सभी वस्तुएँ जैसे कि पेड़-पौधे, पत्थर, मकान और मनुष्य, जीव-जंतु आदि की शरीर-रचना इन्हीं परमाणुओं से हुई है। परमाणुओं को एक रूप से दूसरे रूप में बदला जा सकता है, पर उनका नाश नहीं किया जा सकता। लकड़ी के जलने से कोयला बनता है, कोयले के जलने से राख। इस प्रकार जो परमाणु लकड़ी में थे वे कोयले में होते हैं, और वे ही राख में, पर उनका नाश नहीं होता। यह एक प्रमाणित सार्वत्रिक वैज्ञानिक तथ्य है। आज के इस विकसित आधुनिक विश्व में भी यही सत्य है। आज ही नहीं, भविष्य में भी परमाणु का न सृजन हो सकता है, न विनाश। यही सत्य, ईश्वर की महत्ता बताता है।

निम्नलिखित विषयों पर गौर करने की मैं नास्तिकों से गुजारिश करता हूँ।

(1) विश्व की जनसंख्या आज 600 करोड़ तक पहुँच गई है। इनमें प्रत्येक व्यक्ति की अंगुलि छाप विशिष्ट और विभिन्न है। यह भिन्नता किसने बनाई?

(2) सभी 600 करोड़ लोगों की मुखचर्या एक दूसरे से अलग है। हर चेहरे में दो आँखें, दो कान, एक नाक और एक मुँह है। पर सबका अपना-अपना विशिष्ट आकार है और कोई भी एक दूसरे की प्रतिकृति नहीं है। अत्यधिक साम्यता होने के बावजूद जुड़वों में भी सूक्ष्म भिन्नताएँ होती ही हैं। ये भिन्नताएँ किसने बनाईं?

(3) बच्चे के सही माँ-बाप को सिद्ध करने के लिए "डी.एन.ए. जाँच" की जाती है। कुछ बुरे लोग लड़कियों को प्यार के जाल में फँसाकर, उनके गर्भवती होने पर, उन्हें छोड़कर भाग जाते हैं। पुलिस से पकड़े जाने पर भी वे इसमें अपना पात्र नकारते हैं। केवल डी.एन.ए. परीक्षा से ही बच्चे के पिता की पहचान सिद्ध होती है, और उसके अत्याचार का भण्डाफोड़ होता है। जिस प्रकार पिता के जीन बच्चे में प्रवहित होते हैं, उसी प्रकार उसके पाप और पुण्य भी बच्चे में

प्रवहित होते हैं। इन प्रक्रियाओं को बनाया किसने?

(4) सभी देशों में, सभी प्रांतों में, सभी समुदाय और समाज में पुरुष और स्त्री का अनुपात 50:50 ही कायम रखा गया है। कभी-कभार यह 49:51 या 52:48 हो सकता है। पर मानव-इतिहास में कभी भी 70:30 या 60:40 नहीं हुआ है। यह असंतुलन युद्ध, स्त्री-भ्रूण हत्या आदि मनुष्य की क्रूर और स्वार्थी क्रियाओं के कारण हुआ है। कौन है जो निर्धारित करता है कि किसके यहाँ बेटा हो और किसके यहाँ बेटी? कौन है जो स्त्री-पुरुष के इस अनुपात को बनाए रखता है?

अरे! नास्तिकों, कृपया ईमानदारी से सोचो।

पापस्वीकार

जीवन में सभी प्रकार के पाप कर, उन्हें धोने के लिए कुछ लोग मंदिर जाकर ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। कुछ लोग 48 दिन की छोटी अवधि का व्रत रख, अय्यप्पा की उपासना करने जाते हैं। कुछ लोग रामेश्वरम् जाकर, वहाँ के 22 पवित्र झरनों का पानी अपने ऊपर छिड़ककर, रामनाथ स्वामी की पूजा करते हैं; कुछ लोग कुंभ मेला के समय रोज़ गंगा में नहाते हैं। वे सोचते हैं कि इस प्रकार पवित्र-स्थलों की यात्रा करने से, ईश्वर की पूजा और प्रार्थना करने से, उनके सारे पाप क्षमा कर दिए जाएंगे। कुछ लोगों का यह विश्वास है कि तीन बार कुंभाभिषेक के दर्शन से वे हत्या के पाप से भी मुक्त हो सकते हैं। (कुंभाभिषेक- मंदिरों में कई सालों में एक बार मनाई जाने वाली धार्मिक विधि) इस प्रकार विचार कर, क्या हम ईश्वर की बुद्धिशक्ति और ज्ञान का अपमान नहीं कर रहे हैं?

शबरीमाला की यात्रा करने वाले भक्तों की संख्या हर साल बढ़ती जा रही है। लाखों लोग 48 दिन का कठिन और कठोर व्रत रखकर स्वामी अय्यप्पा के दर्शन के लिए थकाऊ यात्रा तय करते हैं। ईश्वर के नाम पर ऐसे व्रत रखने के लिए उनके पास पैसे भी हैं और मनोबल भी। ये सराहनीय गुण है। ईश्वर की कृपा पाने के लिए वे धन भी खर्च करते हैं, और कष्ट भी उठाते हैं। अगर यही धन व्यय और त्याग वे ईश्वर के गरीब और पीड़ित बच्चों के लिए करते, तो ईश्वर उनसे और अधिक खुश होंगे। ऐसे कई विद्यार्थी हैं, जिनके पास किताब खरीदने या परीक्षा शुल्क देने के लिए पैसे नहीं हैं, ऐसे कई रोगी हैं, जिनके पास दवा खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं, ऐसी कई माएँ हैं जिनके पास रोते बिलखते बच्चों के दूध के लिए पैसे नहीं हैं। अब आप खुद विचार करें, कि पूजा और यात्रा में खर्च होने वाले पैसों से ऐसे लोगों की

सहायता की जाए तो स्वामी अय्यप्पा और कितने प्रसन्न होंगे। निश्चय ही अपने दर्शन के लिए आने वाले भक्तों से बढ़कर गरीबों की मदद करने वाले भक्तों पर ईश्वर अधिक कृपा करते हैं।

पैगम्बर मोहम्मद ने कहा है *"ऐसे कुछ लोग हैं, जो नियत रूप से प्रार्थना करते हैं, सभी धार्मिक विधि-विधानों का पालन करते हैं, मक्का की पवित्र यात्रा भी करते हैं; पर ये अति आसानी से झूठ बोलते हैं और लोगों को धोखा देते हैं और बुरे रास्ते पर चलकर अन्यों की संपत्ति छीनते हैं। ये लोग पाखण्डी होते हैं।"*

पाखण्डी, गाय की खाल में छिपा भेडिया होता है। वह किसी हत्यारे या चोर से भी नीच होता है। अपनी और अपने परिवार की भूख और कष्ट मिटाने के लिए चोर दूसरों के पैसे लूटता है। एक हत्यारा गुस्से के आवेश में या किसी द्वेष से हत्या करता है। पर एक पाखण्डी को इस बात का ज्ञान होता है कि वह गलत कर रहा है, और उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। उसका यह मानना होता है कि पूजा या प्रार्थना करने से ईश्वर उसे माफ़ कर देंगे। ऐसी मान्यताएँ भ्रामक और मूर्खतापूर्ण होती हैं।

जो लोग अपनी गलतियों पर पछतावा कर उन्हें फिर से न दोहराने की ईश्वर से ईमानदारी से वादा करते हैं और उन गलतियों के लिए ईश्वर से क्षमा माँगते हैं, उन्हें शायद ईश्वर कुछ हद तक माफ़ कर देते हैं। ईश्वर की सम्पूर्ण क्षमा केवल ऐसे लोगों को मिलती है, जो एक ईमानदार और निर्मल जीवन बिताते हैं और अपना जीवन गरीबों की मदद में व्यय करते हैं। कई धार्मिक नेता और अन्य लोग, जनता को यह गलत सलाह देकर गुमराह कर रहे हैं कि अमुक पूजा करने से उनके पाप धुल जाएंगे, अमुक व्रताचरण से उन्हें जीवन में तरक्की मिलेगी। आज हमारे समाज और देश की हीन स्थिति के ज़िम्मेदार यही लोग हैं।

हम सब ईश्वर की संतान हैं। उनकी नज़र में हम सब बराबर हैं। क्या ईश्वर का, किसी एक संतान के पाप को, अकारण ही माफ़ कर देना दूसरी संतान के प्रति नाइंसाफी नहीं होगी? ईश्वर सदैव निष्पक्ष होते हैं। उनके कानून, नियम और आदेश सबके लिए समान हैं। अपनी संतान के प्रति उनके व्यवहार में पक्षपात न कभी हुआ है, न कभी होगा।

ऐसे कितने ही सज्जन हैं, जो दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि वे न कभी किसी को दुःख पहुँचाएंगे न गलत काम करेंगे, और ईमानदारी से पैसे कमाएँगे। निःसंदेह, यही अच्छी और प्रशंसनीय बात है कि, वे कोई ताज़े कुकर्म नहीं करेंगे। पर उन पापों का क्या जिन्हें उन्होंने अपने पिछले जन्मों में किया हो? उन पापों को कम करने के लिए या पूर्णतया धो डालने के लिए, उन्हें इस जनम में गरीब और पीड़ितों की मदद आदि अच्छे कर्म करने होंगे। अगर उन्होंने अपने पूर्व जन्मों में कोई पाप न किया होता, तो ईश्वर उन्हें यह जन्म कभी न देते, बल्कि उन्हें परमानंद और जन्मरहितता का वरदान दे देते। इसलिए उन्हें भी अच्छे कर्म करने चाहिए।

सहायता करने वाले व्यक्ति के उद्देश्य और नीयत के आधार पर सहायता के स्वभाव और लक्षण का आभास हो सकता है। एक सामाजिक समारोह में, अंधों की एक पाठशाला के लिए, अ, ब, क, ड़- इन चार लोगों में हर कोई 2000 रुपए का दान देता है। 'अ' यह सोचकर देता है कि उसे पीड़ित अंधों की मदद करनी चाहिए। वह उनका दुःख जानता है और उसे कम करना चाहता है। 'ब' यह सोचकर देता है, कि आज 2000 रुपए दान देने से, कुछ साल बाद ईश्वर उसे उससे कई गुना ज़्यादा लौटाएंगे। 'क' यह सोचकर देता है कि इस प्रकार के दान देने से उसे अच्छा प्रचार मिलेगा। अधिक लोग उसके बारे में जानेंगे और समारोह में उपस्थित संवाददाता अगले दिन के अखबार में उसके बारे में लिखेंगे। 'ड' अनिच्छा से, मन ही मन कोसता हुआ, यह सोचकर देता है,- "इन तीनों ने दान दे दिया. अगर मैं

नहीं दूँगा तो मेरा नाम खराब हो जाएगा। मुझे इस समारोह में आना ही नहीं चाहिए था। मेरे 2000 रुपए अब व्यर्थ हो गए।''

उन चारों के मन में चल रहे इन विचारों को कोई नहीं जान सकता है। वैसे 'ड' तो इस प्रकार पेश आता है, मानो अंधे बच्चों की फिक्र दूसरों से ज़्यादा उसी को है। क्या ईश्वर इन चारों को एक ही प्रमाण के पुण्यफल प्रदान करते हैं? कदापि नहीं। ईश्वर इनके उद्देश्य, नीयत और इनके विचारों के बारे में जानते हैं। वे 'अ' को सर्वाधिक पुण्यफल देंगे, क्योंकि उसने बिना किसी चीज़ की अपेक्षा किए ही, मदद की है। 'ब' को उससे थोड़ा कम क्योंकि उसने प्रतिफल की अपेक्षा से मदद की है। 'क' को उससे भी कम, क्योंकि उसने प्रचार के खातिर मदद की है, और 'ड' को बहुत कम क्योंकि उसने अनिच्छा से दान दिया है।

दूसरों को मदद करने के जोश में ***हमें, भिखारियों और सुस्त लोगों को बढ़ावा नहीं देना चाहिए और समाज के लिए कंटक बने आलस्य को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए।*** हमें अपना सहाय-हस्त केवल चुनिंदे, सुपात्र लोगों की तरफ बढ़ाना चाहिए। हमारे परोपकारी स्वभाव के बारे में जानने वाले कई अपात्र लोग हमें ठग, हमसे मदद लेने की कोशिश करते हैं। ऐसे कई अनाथाश्रम, अंधों की पाठशालाएँ, विकलांगों की पाठशालाएँ और आश्रम हैं, जो दान के रूप में पैसे इकट्ठे करते हैं, पर उन पैसों में से आधा भी सही उद्देश्य के लिए खर्च नहीं करते। हमारे देश में ठगों की कमी नहीं है। हमें सावधानी से सत्पात्र लोगों को ढूँढ़ना चाहिए। इसलिए दूसरों की मदद करने की कोशिश में आप लोग धोखा न खाएँ।

कई ऐसे मौकों पर, मैंने कई लोगों को उनकी मदद करने के उद्देश्य से उधार दिए हैं। पर किसी ने भी उसे पूरी तरह से नहीं लौटाया। कई बार ऐसा होने के बाद, मैंने निश्चय कर लिया कि आइंदा मैं किसी को उधार नहीं दूँगा। अगर मैं किसी की मदद

करना चाहता हूँ, तो वह पैसे मैं उधार के रूप में नहीं बल्कि, तोहफ़े के रूप में उसे दूँगा। कुछ सालों से मैं यही रीत अपना रहा हूँ। जो भी मुझसे उधार माँगने आता है, मैं उससे भी यह बात स्पष्ट कर देता हूँ। मैं आज तक किसी भी हालत में, किसी के लिए भी ज़मानतदार नहीं बना हूँ। मेरे ऐसे निर्णयों ने मुझे कई परेशानियों से बचाया है।

ऐसे कई लोगों से हमारा आमना-सामना हो जाता है, जो दूसरों को धोखा देकर, गलत रास्ता अपना कर अमीर बन जाते हैं, और गाड़ी बंगला और अन्य सुविधाओं से भरा वैभवपूर्ण जीवन बिताते हैं। ऐसे भी लोग देखने को मिलते हैं, जो ईमानदार और गुणी होते हैं, दूसरों की मदद करते हैं, पर खुद कष्ट और परेशानियों से भरा यातनामय जीवन बिताते हैं। ऐसी स्थिति में हम यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं, कि क्या सचमुच ईश्वर का अस्तित्व है? पर यहाँ हम सिर्फ़ वर्तमान स्थिति को देख रहे होते हैं। हमें सहनशीलता से ईश्वर की कार्य-विधि का विश्लेषण कर उसे समझना चाहिए। हम, आज जो लोगों की स्थिति देख रहे हैं, वह उनके पुराने पुण्य या पाप के लिए ईश्वर से दिया गया पुरस्कार या दण्ड है। अगर उनके जीवन की 15-20 साल की लंबी अवधि पर नज़र डालें, तो हम देख सकते हैं कि अच्छे लोग अंत में सुखी रहते हैं और बुरे लोग सज़ा पाते हैं।

जब हम एक नारियल का पेड़ लगाते हैं, तो रोज़ उसमें पानी देते हैं। उसे कीटों से बचाते हैं, उसकी निराई करते हैं और सात लंबे साल तक उसकी सावधानी से देखभाल करते हैं। हमें पक्का विश्वास होता है, कि आठवें साल से वह फल देने लगेगा और अगले 70-80 साल तक देता रहेगा। यही तथ्य भी है। क्या यही विश्वास हमें ईश्वर पर भी है? अगर आज हम कोई अच्छा काम करते हैं, तो उसके फल की, एक महीना या एक साल के अंदर हम अपेक्षा करते हैं। फल न मिलने पर निराश हो जाते हैं; अपने अच्छे काम जारी रखने में उदासीनता दिखाते हैं। पर हम

यह कभी नहीं भूलें, कि अच्छे कर्मों के अच्छे फल बहुत धीरे-धीरे मिलते हैं, पर मिलते लंबे समय तक हैं। और हमें ज्ञानी और संतों की यह बात भी नहीं भूलनी चाहिए कि यह कर्म और प्रतिफल का सिलसिला सात जन्म और सात पीढ़ियों तक चलता रहेगा।

"अच्छे कर्म करने की अपेक्षा रखो"
"दूसरों की मदद करना कभी न बंद करो"
"दूसरों को खिलाकर खुद खाओ"

आति चूडी- प्रख्यात तमिल कविता

"अच्छे कर्म सदैव काम आएँगे"

(कहावत)

क्या उपर्युक्त उक्तियाँ सत्य नहीं हैं? इन्हें हमने प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ा था। पर क्या केवल परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए पढ़ा था? अपने, अपने बच्चों के, अपने देश के उद्धार के लिए इन्हें अपने जीवन में भी लागू करना आवश्यक नहीं है?

मनुष्य के अच्छे कर्म किस प्रकार उसकी रक्षा करते हैं, यह बताने वाली महाभारत की एक कहानी इस प्रकार है। कुरुक्षेत्र के महायुद्ध में कर्ण, अर्जुन के बाण से बुरी तरह घायल हो गया था। उसका रथ मिट्टी में धँस गया था और सारथी उसे छोड़ भाग गया था। कर्ण रथ को ऊपर उठाने की कोशिश कर रहा था, पर उठा नहीं पा रहा था। वह मरण-यातना में था। पर यमराज उसके प्राण ले जाने में असफल थे क्योंकि कर्ण के जीवन भर के अच्छे कर्मों के पुण्य के कारण, धर्म उसकी रक्षा कर रहा था। कर्ण तब तक नहीं मर सकता था जब तक उसके सारे पुण्य उससे छिन नहीं जाते। तभी श्रीकृष्ण एक बूढ़े ब्राह्मण के भेष में दान माँगने उसके पास आए। उस दयनीय स्थिति में कर्ण ने कहा- "मैंने अपना सब कुछ दान कर दिया है। अब मेरे

पास देने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। कृपया ऐसी कोई चीज नहीं माँग लेना, जिसे मैं आपको दे न सकूँ। मुझसे केवल ऐसी वस्तु माँगना जिसे देने के मैं योग्य हूँ।''

श्री कृष्ण ने कहा- *''तुमने अपने पूरे जीवन में धर्म का पालन कर बहुत पुण्य कमाए हैं; और अब मैं जो माँगने जा रहा हूँ, उसे देकर और भी अधिक पुण्य कमाओगे। तुम्हारे वह सारे पुण्य तुम मुझे दे दो।''* बिना झिझके कर्ण ने तुरंत अपने सारे पुण्य ब्राह्मण रूपी कृष्ण को दे दिए और धर्म के इस सुरक्षा चक्र से बाहर होते ही, वह अर्जुन से हत हो गया।

यह कैसी विडम्बना है कि ईश्वर को मनुष्य से सहायता माँगनी पड़ी। यहाँ कर्ण ईश्वर से भी ऊँचा हो गया। विश्व के किसी अन्य धर्म में कर्ण जैसा व्यक्ति नहीं है। वह अद्वितीय है। इस कहानी की यही सीख है कि ईश्वर कर्ण जैसे अच्छे व्यक्ति को दैवी स्तर तक उठाने के लिए, स्वयं नीचे आने से हिचकिचाते नहीं। हमने हिंदू महाकाव्यों में ईश्वर को अपने भक्तों के काम करते देखा है। ईश्वर महान है। कभी उनकी बुद्धिशक्ति, ज्ञान और महत्ता को कम मत समझिए। ऐसा सोचना ही अपने आप में एक पाप है।

एक व्यक्ति को हत्या के जुर्म के लिए आजीवन कारावास की सज़ा मिली और वह जेल में सज़ा भुगत रहा है। उसके अच्छे व्यवहार जैसे; जेल अधिकारियों की आज्ञा का पालन करना, बिना किसी विरोध के जेल-जीवन अपनाना, भोजन के समय कतार में अनुशासन का पालन करना, आदेशित काम को ईमानदारी से करना- आदि के आधार पर हर साल उसकी सज़ा की अवधि कम की जा रही है। सज़ा की अवधि में यह कटौती, सज़ा की आरंभिक सालों में कम और बाद के सालों में अधिक है। जब तक यह जेल से छूटेगा, तब तक जेल में उसके अच्छे व्यवहार के कारण, उसकी सज़ा बीस साल से घटकर 14-15 साल की हो जाएगी।

उसी प्रकार ईश्वर भी हमारे पुराने कुकर्मों के लिए हमें भविष्य में मिलने वाली सज़ा को, हमारे आज के अच्छे कर्मों के आधार पर, आधा या तीन चौथाई कम कर देते हैं। और उस सज़ा को भुगतने के लिए हमें मानसिक स्थैर्य भी देते हैं।

मनुष्य ने कम्प्यूटर बनाए जो एक ही क्षण में करोड़ों का हिसाब कर देते हैं। अगर मनुष्य में इतना बुद्धिबल है, तो आप कल्पना कर सकते हैं ईश्वर में कितनी बुद्धिशक्ति होगी। हम ईश्वर की बुद्धि, ज्ञान और शक्ति की न कल्पना कर सकते हैं, न ही उन्हें माप सकते हैं। आज के इस वैज्ञानिक प्रगति के युग में, अंतरिक्ष नियंत्रण में अपनी प्रतिभा के कारण, अमेरिका, 'नासा' द्वारा सैकड़ों उपग्रहों को एक ही समय पर खोज निकाल रहा है, उनका नियंत्रण कर रहा है, उनसे संदेशों का ग्रहण कर रहा है और उन तक संदेश पहुँचा रहा है। जब सीमित ज्ञान और बुद्धिशक्ति वाला मनुष्य सैकड़ों उपग्रहों का नियंत्रण कर सकता है, तो क्या ईश्वर के लिए ऐसी एक व्यवस्था बनाना कठिन है, जिसमें धरती से ऊपर एक उपग्रह में स्थित स्वयं तक, धरती के हर मनुष्य के मस्तिष्क में चलने वाले विचार, उसकी कार्य-विधि, व्यवहार, बात-चीत आदि का संकेत पहुँच सके। इन जानकारियों के आधार पर ही ईश्वर हमें उचित समय पर पुरस्कार या दण्ड देते है.

हम कभी यह न सोचें कि ईश्वर की इच्छाएँ-अनिच्छाएँ होती हैं, हमारी तरह उनकी सीमाएँ होती हैं; वे भी हमारी प्रशंसा और दुर्वचन से विचलित होते हैं। हम यह सोचने की भूल न करें, कि वे केवल कुछ ही भाषाएँ समझ सकते हैं, और संस्कृत के मंत्र सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं, और इसी प्रसन्नता की मनोदशा में हमारी माँगें पूरी कर देते हैं। क्या वे, अफ्रीकी या अंटार्टिका के एस्किमो लोगों की भाषा नहीं जानते ? मंदिर में प्रवेश से रोके जाने वाले भक्त के खातिर उडुपी के मंदिर में श्री कृष्ण की मूर्ति अपने आप घूम गई थी। क्या वह भक्त संस्कृत जानता था ? और अनपढ़ शिकारी कण्णप्पा, जिसने शिवजी को मांस (जो ईश्वर को चढ़ाने के लिए

निषिद्ध है) का चढ़ावा दिया, वह संस्कृत जानता था? क्या ईश्वर ने इनकी प्रार्थना स्वीकार, इन्हें अपने आशीर्वाद नहीं दिए?

हम अपना काम करवाने के लिए, कभी-कभी किसी अफ़सर को रिझाने की कोशिश करते हैं, उसके छोटे-मोटे काम कर देते हैं, उस पर किसी उच्च अधिकारी या नेता से दबाव डलवाते हैं, या रिश्वत देकर उसे भ्रष्ट करने की कोशिश करते हैं। लेकिन ऐसे कई अफ़सर हैं, जो इन सबसे प्रभावित नहीं होते। प्रशंसा, प्रलोभन और पैसों का उन पर कोई असर नहीं होता, न ही वे किसी आधिकारिक शक्ति से भयभीत होते। अपने विवेक और नियम के अनुसार वे अपना कर्तव्य-पालन करते हैं। जब मनुष्य ही इतना समदर्शी हो सकता है, तो इश्वर की समदर्शिता को हम मनुष्य की समदर्शिता से कम कैसे समझ लें? ऐसा कभी मत सोचिए। ऐसा सोचना ही अपने आप में एक पाप है। कृपया आप यह पाप मत कीजिए।

एक तमिल कहावत के अनुसार- ***अगर आप अपने पड़ोस के बच्चों की देखभाल करेंगे, तो आपके बच्चे अपने आप उपकृत होंगे।*** इसका सही अर्थ यह है कि जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो उससे पुण्य कमाते हैं और वही पुण्य हमारे बच्चों की रक्षा करते हैं।

ईश्वर ने हम सब की सृष्टि की है। हम सब उनके बच्चे हैं। जब कोई हमारे बच्चों को दुःख देता है, तो हम भी दुःखी होते हैं और दुःख देने वाले से नाराज़ होते हैं। उसी प्रकार ईश्वर भी अपने बच्चों को दुःख देने वालों से नाराज़ होते हैं। जब दूसरे लोग आपके बच्चों की मदद करते हैं, तो आप प्रसन्न होते हैं, और मदद करने वालों से प्यार से पेश आते हैं। उसी प्रकार ईश्वर भी आपसे स्नेह करते हैं, जब आप उनके अन्य बच्चों से प्रेम करते हैं। कृपया ध्यान रखिए। ऐसा काम करना पाप है, जो ईश्वर को नापसंद हो।

ईश्वर की पसंद का काम करना पुण्य है। हमारे आज के अच्छे कर्म ही आगे चलकर, हमारे और हमारे बच्चों के सुखी जीवन का रूप ले लेते हैं। इसलिए हमें सदैव ईश्वर के पसंद के ही कर्म करने चाहिए। हम पूजा, हवन, यज्ञ आदि अपने स्वार्थी उद्देश्य के लिए करते हैं; अपने परिवार और बच्चों के सुखी जीवन के लिए करते हैं। हम चाहे छिपाने की कोशिश करें, पर ईश्वर हमारा स्वभाव, इन पूजाओं के पीछे हमारे उद्देश्य के बारे में जानते हैं। जब हम सच्चाई, ईमानदारी, निःस्वार्थता से काम करते हैं, और निराश, पीड़ित गरीबों की मदद करते हैं, तब ईश्वर को हमारी निःस्वार्थता की जानकारी होती है और इसके लिए वे हमें अधिक श्रेय भी देते हैं।

आप से निवेदन है कि आज और अभी आप एक डिब्बा या लिफ़ाफा लीजिए और उस पर लिखिए- ***''धर्मार्थ है- मंदिरों में दान के लिए नहीं।''*** जब भी मिलें, उसमें सिक्के या पैसे डालते जाइए। पूजा, हवन और अन्य धार्मिक कार्यों के लिए जो पैसे आप खर्चना चाहते हैं, उन पैसों को भी उसमें भरिए। कई बार आप दुखी, गरीब लोगों से टकराते होंगे, तब ये पैसे उनके दुख दूर करने के लिए इस्तेमाल कीजिए।

अपने शहर की सरकारी, कार्पोरेशन और म्युनिसिपल पाठशालाओं का चक्कर लगाइए। वहाँ केवल गरीब बच्चे ही पढ़ते हैं। वहाँ के प्रधानाध्यापकों से मिलकर कहिए कि आप वहाँ के पितृहीन और विकलांग गरीब बच्चों को पाठ्यपुस्तक, नोट बुक, समवस्त्र आदि दान देना चाहते हैं। आप खुद उन बच्चों से मिलके अपने हाथों से ये चीजें उन्हें दे सकते हैं। दिसम्बर और जनवरी के महीनों में, उन बच्चों को अपना परीक्षा शुल्क भी देना होता है। उस समय आप वह पैसे भरकर उनकी मदद कर सकते हैं। आप सरकारी अस्पतालों में भी जाकर, वहाँ के कुछ मरीजों को चुनकर सीधा उनकी मदद कर सकते हैं।

"ईश्वर को ईश्वर के ही रूप में देखिए, न कि गणेश जी, मुरुगा, राम, श्रीकृष्ण, ईसा-मसीहा या अल्लाह के रूप में। जब हम ईश्वर को ईश्वर के सच्चे रूप में देखते हैं, तो हमारा मन विशाल होता है, हम मत और धर्मों को भूल जाते है, और हममें नई चेतना का संचार होता है। हमें अपने आपको संकीर्ण घेरों से बाहर निकालना है। अपना परिवार, अपनी जाति, अपने दोस्त- इन छोटे दायरों में से हम बाहर निकलें। अपने इन छोटे दायरों को विस्तृत और चौड़ा बनाएं, नगर से भी चौड़ा, राज्य से भी चौड़ा, देश से भी चौड़ा, विश्व से भी चौड़ा और ब्रह्माण्ड से भी चौड़ा।"

विश्व के विभिन्न देशों पर नज़र डालिए। वहाँ के लोगों का और उनकी गतिविधियों का अवलोकन कीजिए। तभी आप उनसे उनकी अच्छाइयाँ और अच्छे गुण सीख सकते हैं। जब भी किसी व्यक्ति से मिलते हैं, तो आप उसमें उसके अच्छे गुण ढूँढ़ने की कोशिश कीजिए। अगर एक भी अच्छा गुण दिखाई दिया, तो तुरन्त उसे उससे ग्रहण कीजिए और अपने जीवन में उसे अमल में लाइए। तभी, आपका, आपके परिवार का और आपके देश का उद्धार हो सकता है।

बुद्धिवादी और आत्मसुधार के विश्लेषक सफलता के यही मंत्र बताते हैं, कि परिश्रम करो, सही योजना बनाओ, अपने निश्चय पर डटे रहो, हार से निराश न हो, दृढ़प्रतिज्ञ रहो, रात-दिन मेहनत करो- तो सफलता तुम्हारी अवश्य होगी। पर, केवल इतने गुणों के होने से ही सफलता नहीं मिलेगी। अगर पहले से आपने पुण्य कमाके रखे हैं, तो ही सफलता आपकी होगी। "केवल परिश्रम करना तुम्हारे हाथ में है। फल तो ईश्वर के हाथ में है।" बुद्धिवादी ऐसे कुछ ही लोगों का उदाहरण देते हैं, जो इन गुणों के कारण सफल हुए हैं। लेकिन, ऐसे हज़ारों लोग हैं, जिन्होंने इतने सारे गुणों के होते हुए भी जीवन में कभी सफलता नहीं प्राप्त की। ये लोग आसानी से अपनी हार की उपेक्षा कर देते हैं। ऐसे लोग भी देखने को मिलते हैं, जो इन गुणों

के बिना भी सफल हुए हैं।

निःसंदेह, यह बात सही है कि सफलता के लिए परिश्रम, योग्यता, ईमानदारी, समर्पण भाव और दृढ़ता आदि आवश्यक है, पर ये काफ़ी नहीं हैं। इन सबसे अधिक हमें ईश्वर के आशीर्वाद की आवश्यकता होती है जो बहुत अहम् है। और ये आशीर्वाद आपको, आपके अच्छे कर्मों से संचित आपके पुण्य के आधार पर ही मिलते हैं। ईश्वर तब तक हमें आशीर्वाद देते रहेंगे जब तक हम अच्छे कर्म करते रहेंगे।

हमारे मन में आने वाले विचार और हमसे लिए जाने वाले निर्णय, हमारे भाग्य से निर्धारित होते हैं। हमारा भाग्य, हमारे अच्छे और बुरे कर्मों पर आधारित होता है। जब हमारा भाग्य अच्छा होता है, तो हम सही निर्णय लेने के लिए प्रेरित होते हैं, और जब हमारा भाग्य बुरा होता है, तो हम गलत निर्णय लेते हैं, और हमें हार का सामना करना पड़ता है।

इस बात को स्पष्ट करने वाला प्रसंग इस प्रकार है। गुजरात भूकम्प के संदर्भ में एक व्यक्ति, खुद को और अपने परिवार को बचाने के लिए, अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर, जल्दी में, फ्लैट में से निकलकर लिफ्ट से उतरा। जैसे ही वह तहखाना पहुँचा, तो उसने वहीं खड़ी अपनी चार दिन पुरानी नई गाड़ी देखी। वह उसे भी बचाने के लिए प्रलोभित हो गया। अपनी पत्नी और बच्चों को रास्ते में खड़ा रहने के लिए बोल, वह खुद गाड़ी की चाबी लाने के लिए फिर से लिफ्ट से ऊपर गया। उसकी पत्नी और बच्चे रास्ते पर जाने की बजाय लिफ्ट के पास उसका इंतजार करते रहे। कुछ ही क्षणों में पूरा मकान गिर गया और सब के सब मर गए।

उस निर्णायक क्षण में उसके पास दो विकल्प थे। एक, वह अपनी पत्नी और बच्चों

को लेकर, गाड़ी को वहीं छोड़कर भाग सकता था; दो, वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ-साथ गाड़ी को भी वहाँ से ले जा सकता था। पर उसके भाग्य के अनुसार, उसे अपने परिवार के साथ मरना था, तो उसने दूसरा विकल्प अपनाया। उनके पूर्व संचित पापों के आधार पर उनकी मृत्यु तय थी। ऐसी स्थिति में वह ऐसा निर्णय कैसे लेता जिसे लेने से वह बच जाता। वह केवल ऐसा निर्णय ही ले सकता था, जो उसे, अपने परिवार के साथ मृत्यु तक ले जाता। ऐसे क्षणों में ईश्वर खुद ऐसे निर्णय लेने की प्रेरणा देते हैं।

पश्चिमी पुरातत्वज्ञों ने तमिलनाडु की तट-रेखा के पास एक पुरातन डूबे हुए शहर का पता लगाया है। उन्होंने यह भी पता लगाया है कि वहाँ सभ्य जनजाति का निवास था और वहाँ की सभ्यता अत्यंत पुरातन है। उनके हिसाब से यह 7000 साल पुरानी सभ्यता है। हड़प्पा और मोहंजोदड़ो की सभ्यताएँ जो आज तक सबसे पुरानी मानी जा रही थीं, वे केवल 5000 साल पुरानी हैं। उससे 2000 साल पहले ही हमारा देश उतना ही सभ्य था।

प्राचीन काल में, भारत न केवल सबसे पुराना देश था बल्कि सबसे सम्पन्न और विकसित देशों में से एक था। आज भारत की गिनती सबसे गरीब राष्ट्रों में की जा रही है। इस पतन के लिए ज़िम्मेदार कौन है ? अलग-अलग लोगों के अनुसार इसके अलग-अलग कारण है- जैसे भ्रष्टाचार, भ्रष्ट राजनेता, बढ़ती आबादी, जाति-धर्मों की बढ़ती संख्या और उनके बीच की विषमता। पर सही कारण है, मनुष्य द्वारा किए जाने वाले पाप। एक व्यक्ति से किया गया पाप उस अकेले के पतन का कारण बनता है, और जब देश के बहुत सारे लोग पाप करते हैं, तो वह पाप पूरे देश के पतन का कारण बन जाता है। कुल मिलाकर स्वार्थी और चरित्रहीन लोग देश के पतन के लिए ज़िम्मेदार हैं।

"सम्पत्ति की हानि से, कोई हानि नहीं होती है।"

"स्वास्थ्य की हानि से, थोड़ी-बहुत हानि होती है।"

"चरित्र की हानि से, सब कुछ नष्ट हो जाता है। "

अंग्रेजी कहावत

"जो लोग चरित्रहीन होते हैं, वे बुरे कर्म करके सभी प्रकार के पापों का संचयन करते हैं। अगर ऐसे लोगों की संख्या अधिक हो, तो जिस देश में वे रहते हैं, उस देश का पतन होता है। "

सरल उपाय

इस संसार में लोगों ने धन प्राप्ति, अच्छा-स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि, अच्छी पत्नी, गुणी बच्चे, प्यार में सफलता, चुनावों में विजय, आदि की प्राप्ति के लिए कई सरल उपाय ढूँढ़ लिए हैं। इन सबकी प्राप्ति के लिए अष्ट लक्ष्मी यंत्र, कुबेर यंत्र, महालक्ष्मी यंत्र आदि कई प्रकार के तावीज उपलब्ध हैं। इनमें भी साधारण, विशेष और शीघ्र फल के लिए साधारण, विशेष और अति विशेष तावीज मिलते हैं। व्यक्ति का भाग्य उभारने के लिए रत्न, मणि और मायिक सूत्र हैं। बिना किसी मेहनत के तुरंत अमीर बनने के लिए वास्तु-शास्त्र और संख्या शास्त्र के उपाय उपलब्ध हैं। नादान लोगों को, तुरंत धन और भाग्य की प्राप्ति और अधिकार प्राप्ति का लोभ देकर ढोंगी लोग, कई प्रकार के सरल उपाय बेचते हैं।

निर्बल और मूर्ख लोगों को धन-सम्पत्ति का लालच देकर उन्हें ठगने के लिए और स्वयं पैसा बनाने के लिए धोखेबाज लोग ये तंत्र अपनाते हैं। अगर ऐसे सुलभ मार्गों से कोई पैसा कमा सकता, तो आज हममें से हर कोई अमीर होता। और उस समय ईश्वर अप्रासंगिक हो जाते। इन तंत्रों को अपनाकर आज तक कोई भी अमीर नहीं बना है। अगर बना है, तो वह केवल सांयोगिक होगा।

ईश्वर ऐसे टेढ़े-मेढ़े मार्गों को न मानते हैं, न उन्हें बढ़ावा देते हैं। वे सीधे और प्रगतिशील मार्गों को ही मानते हैं। जीवन एक बहुत बड़ा संघर्ष है, जो लहरों के विरुद्ध तैरने के बराबर है। जब करोड़ों लोग, सच्चाई की राह पर चलकर संघर्ष कर रहे हैं, तो ऐसे सुलभ और टेढ़े-मेढ़े रास्ते अपनाने वाले लालची लोगों पर, ईश्वर कृपा कैसे कर सकते हैं? आप कभी न सोचिए, कि ईश्वर ऐसा कभी कर सकते हैं।

आप भी उन लोगों की तरह धोखा न खाएँ, जिन लोगों ने अधिक ब्याज की लालच में अपना पैसा किसी बेईमान पूँजीपति के पास जमा किया और अन्त में ब्याज के साथ-साथ मूल-धन भी खो दिया। जो लोग ग़लत तरीक़े से धन कमाते हैं, वहीं लोग अपना धन ऐसे धोखेबाज संस्थाओं में जमा करते हैं, और अंत में खो देते हैं। ईमानदार लोग जो सच्चाई से पैसे कमाते हैं, वे ऐसे गलत निवेश नहीं करते। ऐसे लोगों को कोई धोखा भी नहीं दे सकता। ईश्वर की हमेशा उन पर कृपा होती है, और सही निर्णय लेने में वे उनकी मदद भी करते हैं।

ज्योतिषी हमारा जन्म-समय, जन्म स्थान और जन्म तिथि के आधार पर, हिसाब लगाकर हमारे भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में बताते हैं। आजकल के अमीर घरों में, माँ-बाप अपने बच्चे के जन्म-समय और जन्म-तिथि को निर्धारित करते हैं। वे वांछित समय पर, आपरेशन द्वारा बच्चे को माँ के पेट से बाहर निकालने का, डाक्टरों से अनुरोध करते हैं। डाक्टर भी इनकी बात मानते हैं, और पूर्व निर्धारित तिथि और समय पर बच्चे का जन्म होता है।

जन्म-काल को निर्धारित करने की शक्ति, विज्ञान ने आपके हाथ में थमा दी है। इससे आगे गरीब, मूर्ख और रोगी बनकर पैदा हो सकने वाले बच्चों के भाग्य बदलकर आप उन्हें, अमीर बुद्धिमान और स्वस्थ बना सकते हैं। अगर हर कोई ऐसा उपाय अपनाता, तो संसार में हर कोई अमीर, बुद्धिमान और स्वस्थ होता। सारा देश, सारा संसार समृद्ध होता। और तब शायद हमें ईश्वर की दया और आशीर्वाद की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

अगर यह बात सच है, कि ईश्वर से निर्धारित दण्ड या पुरस्कार बदले नहीं जा सकते, तो किसी भी व्यक्ति के जन्म-समय, जन्म-तिथि और जन्म स्थान पर आधारित ज्योतिष सच नहीं हो सकता। शायद उसमें थोड़ी सच्चाई रही हो, जब

लोगों में जन्म-समय निर्धारित करने की शक्ति नहीं थी। पर आजकल के इस विवेकपूर्ण युग में, हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं, कि या तो ज्योतिष झूठा है या सुस्पष्ट नहीं है।

संत इलंगो, जो तमिल महाकाव्य सिलप्पधिगारम् के रचयिता हैं, तमिल राजा पांडियन के दूसरे बेटे थे। जब वे छोटे थे, तो यह घटना घटी थी। एक दिन एक ज्योतिषी, राजा पांडियन के दरबार में आया और उसने राजा, रानी, उनका पहला पुत्र और दूसरे बेटे इलंगो की जन्मकुण्डलियाँ देखीं। चारों कुण्डलियों के गहरे अध्ययन के बाद उसने राजा से कहा कि, राजा के बाद राज्य का भार उनका बड़ा बेटा नहीं, बल्कि दूसरे बेटे इलंगो संभालेंगे। इस कथन ने पूरे राज परिवार का चैन उड़ा दिया। पहला बेटा बहुत निराश हो गया। इलंगो को ज्योतिषी की यह बात नहीं भायी। उनको वह राज्य नहीं चाहिए था, जो परम्परा के अनुसार उनके बड़े भाई का होने वाला था। साथ ही, उन्हें ज्योतिष को गलत साबित करना था। बहुत विरोध के बाद भी, उन्होंने संत बनने का निर्णय लिया और पवित्र जीवन प्रवेश कर संत इलंगो कहलाने लगे। बाद में पहला बेटा ही राजा बना।

यह एक सच्ची कहानी है, और उस जमाने में भी ज्योतिष-शास्त्र को गलत साबित किया गया था। उन दिनों केवल नामी और योग्य ज्योतिषी को ही शाही जन्मकुण्डलियाँ देखने का अवसर मिलता था, और केवल ज्ञानी ज्योतिषी में ही राजा के सामने अप्रिय भविष्यवाणी करने का साहस होता था। जब ऐसे अच्छे और योग्य ज्योतिषी को गलत साबित किया गया था, तो हम ज्योतिष-शास्त्र पर विश्वास कैसे करें?

महाभारत में ज्योतिष-शास्त्र से संबंधित एक प्रसंग है। धर्मराज का भाई सहदेव एक ज्योतिषी था। पाण्डव और कौरवों के बीच के महान कुरुक्षेत्र युद्ध से पहले

दुर्योधन ने उससे मिलकर विनती की कि वह युद्ध प्रारंभ करने के लिए एक तारीख तय करे। यद्यपि दुर्योधन उसका शत्रु था, फिर भी सहदेव ने धार्मिक तत्वों का पालन कर, युद्ध के प्रारंभ के लिए शुभ दिन और शुभ-घड़ी निश्चित की। अगर उस निश्चित समय और दिन पर युद्ध प्रारंभ हुआ होता तो अवश्य कौरव ही जीतते।

इससे पाण्डव विचलित हो गए। इस संकट के लिए उन्होंने सहदेव को दोषी ठहराया। सहदेव सच्चा और सिद्धांती व्यक्ति था। इसलिए वह असत्य बोलकर या धोखा देकर, गलत दिन निश्चित नहीं कर सकता था। अब किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था, कि क्या करें। लेकिन श्रीकृष्ण जानते थे कि भाग्य के अनुसार कौरव नहीं जीत सकते। जीत सिर्फ पाण्डवों की होने वाली थी। इसलिए उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे किसी भी हालत में निर्धारित समय पर युद्ध शुरू होने नहीं देंगे।

अपनी युक्ति से उन्होंने युद्ध अलग समय पर प्रारंभ करवाया और पाण्डव जीत गए। उनके भाग्य में जीत लिखी थी, और वे जीत गए। इससे हम क्या बोध ले सकते हैं? एक निपुण ज्योतिषी द्वारा अति सावधानी से हिसाब लगाकर समय निर्धारित किए जाने के बावजूद, ईश्वर उस निर्णय को भाग्य के अनुसार बदल देते हैं। अंत में ज्योतिष-शास्त्र भी हार जाता है। अतः जो भाग्य में लिखा होता है, वही होता है। हमारे भाग्य को कोई नहीं बदल सकता। ईश्वर से निर्धारित हमारे भाग्य को बदलने में असमर्थ ज्योतिष-शास्त्र पर अपना पैसा, समय और शक्ति व्यय करना क्या हमारी मूर्खता नहीं होगी? कृपया विचार करें।

मैं भी ज्योतिष शास्त्र को मानता था। मैंने भी कई बेहतरीन ज्योतिषियों से परामर्श किया था, पर किसी ने मेरी प्यारी बेटी हेमलता की मृत्यु की भविष्यवाणी नहीं की। मैंने भी अपनी बेटी हेमलता की मौत के बाद ज्योतिष शास्त्र में विश्वास खो दिया। मैंने ऐसे कई लोग देखे हैं जिन्होंने ज्योतिष शास्त्र का अंधानुकरण कर अपना जीवन

बिगाड़ लिया है। अब मैं राहुकाल, शुभघड़ी, अशुभ-घड़ी आदि में विश्वास नहीं करता। क्या संसार में ऐसा कोई देश है, जो राहुकाल और यमगण्ड-काल (ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार यह अशुभ-समय होता है) आदि देखकर बस, रेल, जहाज या हवाई-जहाज का समय निर्धारित करता है? मैंने सन् 2000 और सन् 2004 में खरीदी गई अपनी दोनों गाड़ियों की डिलीवरी राहुकाल में ली। मैं जानता हूँ कि ईश्वर ऐसा कभी नहीं कहेंगे कि "बालसुब्रह्मण्यम् ने गाड़ी राहुकाल में ली है, इसलिए उसें सज़ा मिलनी चाहिए।" मैंने बैंगलूर में एक नया फ्लैट मंगलवार के दिन खरीदा जिस दिन को किसी काम के लिए अशुभ माना जाता है। और उस घर में मैंने कोई पूजा भी नहीं करवाई।

वास्तुशास्त्र भी लोगों को ठगने का एक और जरिया है। मैं कभी किसी सुलभ मार्ग या सरल उपायों पर विश्वास नहीं करता। जीवन में जिन बातों का मैं अनुसरण करता हूँ, उन्हीं का मैं, दूसरों को उपदेश देता हूँ। विनयपूर्वक मैं, आपसे कहना चाहूँगा कि आप मेरे ज़ीवन में, मेरी कथनी और करनी में अंतर नहीं देख पाएँगे।

मैराथन एक लंबी दौड़ है जिसमें 26 कि.मी. की दूरी तय की जाती है। एक बार अमरीका के एक मैराथान में, सौ से भी अधिक लोगों ने भाग लिया था। जो अव्वल आया, उसे भेंट, पुरस्कार और प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया। एक हफ्ते के बाद एक संवाददाता ने पता लगाया कि उस विजेता ने 26 किमी. की पूरी दूरी तय नहीं की थी। कुछ कि.मी. दौड़ने के बाद, उसने छोटा रास्ता पकड़ लिया था और उस रास्ते से थोड़ी दूर दौड़ने के बाद फिर से उसने मुख्य रास्ता पकड़ा था। 26 किमी. दौड़ने के बजाय, केवल बीस कि.मी. की दूरी तय कर वह आखिरी मंजिल तक दूसरे लोगों से पहले पहुँच गया। इसका पता लगने पर उससे उसके पुरस्कार, प्रमाण-पत्र सब छीन लिए गए। दौड़ में जीतने के लिए आसान रास्ता अपनाकर उसने स्वयं ही अपमान को आमंत्रित किया था।

जीवन भी मैराथन है, लंबी दौड़ है। हम सब खुशी, शांति और सम्पत्ति की तलाश में दौड़ रहे हैं। कुछ लोग आसान रास्ते अपनाते हैं, जैसे तावीज़, संख्याशास्त्र, वास्तुशास्त्र आदि। जब आप इस प्रकार के सुलभ मार्ग अपनाते हैं, तो क्या ईश्वर, सीधे और सच्चे रास्ते पर दौड़ने वाले लोगों की अवज्ञा कर, आपको अधिक लाभ से पुरस्कृत करते हैं? अगर ईश्वर ऐसे लोगों की मदद करते हैं, तो क्या यह ईमानदार लोगों के प्रति अन्याय नहीं है? ईश्वर ऐसी गलती कभी नहीं करते बल्कि उन्हें सज़ा देते हैं। अरे, आसान मार्ग को अपनाने वालों, ज़रा सोचो। आपको कभी इसका कोई अच्छा प्रतिफल नहीं मिलेगा, बल्कि ईश्वर का क्रोध और क्रोध के फलस्वरूप दण्ड मिलेगा। जो भी व्यक्ति ऐसे छोटे रास्तों को अपनाता है, वह अंत में अवश्य सज़ा पाता है। ईश्वर धोखेबाजों को हमेशा सज़ा देते हैं। पर जो भी सज़ा वे निर्धारित करते हैं, उसे तुरंत नहीं, पर कई साल बाद देते हैं। यही सत्य है।

आप सोच सकते हैं, "ओह, धोखाधड़ी तो अमरीका के मैराथन में हुई थी। इसका मतलब है, अमरीका में भी धोखेबाज़ लोग हैं।" जी हाँ, धोखेबाज़ लोग संसार के हर देश में पाए जाते हैं। खूनी, लुटेरे, बलात्कारी, धोखेबाज लोग तो हर देश में मौजूद हैं। इनकी प्रतिशतता अगर अमरीका और अन्य विकसित राष्ट्रों में 5 प्रतिशत है, तो अन्य गरीब, पिछड़े राष्ट्रों में (भारत भी इनमें से एक है) 90 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त अमरीका जैसे राष्ट्रों में गुनहगार सज़ा से बिरले ही बचते हैं। वहाँ 90 प्रतिशत गुनहगार पकड़े भी जाते हैं, और उन्हें सज़ा भी होती है। पर भारत में 90 प्रतिशत अपराधी और उपद्रवी लोग, अधिकार, पैसा और राजकीय प्रभाव का प्रयोग कर सज़ा से बच जाते हैं। भारत में अमीर और प्रभावशाली लोगों के मामले में कानून अशक्त हो गया है।

पर, अमेरिका और अन्य विकसित राष्ट्रों में, कानून, अमीर और प्रभावशाली सहित सभी लोगों पर बराबर लागू होता है। इस धरती पर सबसे प्रभावशाली व्यक्ति है,

अमेरिका के राष्ट्रपति। एक बार अमेरिका के (वर्तमान) राष्ट्रपति बुश के भाई की बेटी एक शराब-घर में मद्यपान करती हुई पकड़ी गई। उसकी उम्र 21 साल से कम थी, और अमेरिका में 21 साल से पहले मद्यपान करना मना है। इसलिए उसे न्यायालय ले जाया गया और उसे जुर्माना भी भरना पड़ा। इंग्लैंड के प्रधानमंत्री हैं, टोनी ब्लेयर। एक बार उनका अठारह साल का बेटा, शाम के बाद एक पार्क की बेंच पर नशे की हालत में पाया गया। पुलिस उसे पुलिस-स्टेशन ले गई और उसने उस पर आरोप लगाया। इस बात का जब टोनी ब्लेयर को पता चला तो उन्होंने कहा - "पुलिस अपना काम कर सकती है। अगर पुलिस मुझे बुलाती है, तो मैं पुलिस-स्टेशन जाने के लिए भी तैय्यार हूँ।" यह घटना सन् 2003 में घटी थी।

क्या हमारे देश में बड़े से बड़ा जुर्म करने के बावजूद, हमारी पुलिस एक छोटे शहर के नेता को गिरफ्तार कर सकती है? कभी नहीं। अगर करती भी है, तो करने वाले का तबादला हो जाता है या उसकी निंदा की जाती है। ऐसा समाज कैसे कभी आगे बढ़ सकता है? ऐसे समाज की ईश्वर भी कैसे मदद कर सकते हैं?

धार्मिक विधि और अनुष्ठान

हमारे समाज में हम विधि और अनुष्ठानों को कुछ ज़्यादा ही महत्व देते हैं, पर उनके पीछे की भक्ति, मानवीयता, अनुशासन, नैतिकता आदि मूल सिद्धांतों को भूल जाते हैं। लोगों को अनुशासित बनाने के लिए और सुखी जीवन का मार्गदर्शन करने के लिए, अपने क़ाल और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर हमारे ऋषि-मुनियों ने कुछ विधि और अनुष्ठान बनाए। समय के साथ-साथ आवश्यकताओं और परिस्थितियों में बदलाव आते ही, कई विधि और अनुष्ठान आज असम्बद्ध लगने लगे हैं। ऐसे विधि-विधान और अनुष्ठानों को त्यागने में हमारी समझदारी है।

पुराने जमाने में ब्राह्मण जाति की एक प्रथा थी। पति के मर जाने पर, पत्नी को सर मुंडवाना पड़ता था, वह केवल सफेद साड़ी ही पहन सकती थी और उसका किसी भी शुभ-समारोह में जाना वर्जित था। अपनी छात्रावस्था में मैंने ऐसी कई जवान विधवाओं को ऐसी दयनीय अवस्था में देखा था। आजकल जब शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है, लोग अधिक सुसंस्कृत हो रहे हैं, तो इस प्रथा का पालन नहीं हो रहा है। आज एक भी विधवा इस नरक से गुजरती हुई नहीं दिखाई देती और आजकल अनेक विधवा-विवाह भी संपन्न हो रहे हैं। तो क्या हमने अपने आपको नहीं बदला है?

तमिलनाडु में, मंगलवार, शनिवार और रात के समय को शादी के लिए अशुभ माना जाता है। पर पड़ोसी राज्य आंध्रप्रदेश में, शादियाँ अधिकतर रात को ही होती हैं, और मंगलवार और शनिवार के दिन भी।

विधि और अनुष्ठान हर देश में अलग-अलग होते हैं, और कई बार एक ही देश

के कई भागों में भी। सैकड़ों देशों में, हज़ारों प्रथाएँ हैं। एक देश के लिए जो शुभ मानी जाती है, वही दूसरे देश के लिए अशुभ। पर हम इन विधि, अनुष्ठान और प्रथाओं को अवांछित महत्व न दें। इसके बजाय हम इनके मूल में छिपी मानवीयता और सहायक मनोवृत्ति के सिद्धांतों का अनुसरण करें। ईश्वर व्यक्ति से पालन किए जाने वाले विधि-अनुष्ठान या प्रथाओं को अहमियत नहीं देते, बल्कि उनका पालन करने वाले व्यक्ति के हृदय, व्यवहार और उद्देश्य को। ईश्वर के नाम से दूसरों को दुख देने वाले जिन विधि-अनुष्ठानों का आचरण होता है, उन्हें हमें त्याग देना चाहिए। जो आज के लिए अप्रस्तुत है, और दूसरों को दुःख देते हैं, ऐसे रिवाजों को त्यागने से ईश्वर भी क्रोधित नहीं होंगे।

"हम ऐसे धर्म को निकाल फेंकें,

जो एक विधवा के आँसू नहीं पोंछता,

और भूखे गरीब को भोजन नहीं देता।"

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद के उपर्युक्त कथन पर गौर कीजिए। केवल धर्मानुष्ठान से ईश्वर संतुष्ट नहीं हो जाते, क्योंकि वे हमेशा उस अनुष्ठान के पीछे छिपा उद्देश्य देखते हैं। क्या उन्होंने कण्णप्पा द्वारा समर्पित मांस (जो नैवेद्य के लिए निषिद्ध है) को नहीं स्वीकारा था? इसीलिए ईश्वर की बुद्धिशक्ति और ज्ञान को कम मत समझिए।

जीवन में किसी भी व्यक्ति की सफलता को उससे संचित सम्पत्ति के आधार पर मापा नहीं जा सकता। हज़ारों में, केवल एकाध अमीर लोग ही शांतियुत, सुखमय जीवन बिता सकते हैं। बाकी सब धन कमाने की कष्टकर प्रक्रिया में, मन की शांति

खो चुके होते हैं। केवल धन ही जीवन नहीं है। अगर हम संयत रूप से अमीर हैं, तो धन हमारी रक्षा करेगा। अगर हम अत्यधिक अमीर हैं, तो उसका सेवक बनकर हमें ही धन की रक्षा करनी पड़ेगी।

जीवन में कुछ आवश्यकताएँ धन से भी महत्वपूर्ण होती हैं, जिन्हें धन से पूरा किया नहीं जा सकता है। स्वास्थ्य, शिक्षा, अच्छी पत्नी, गुणी बच्चे और एक शांतियुत सुखी-घर- ये सारे पैसों से खरीदे नहीं जा सकते हैं। संसार की सारी सम्पत्तियाँ मिलकर भी, आपको एक सुखी घर नहीं दे सकतीं। ***"धन को आपका गुलाम होना चाहिए। आपको धन का नहीं।"*** अधिक धन हमेशा अपने साथ अधिक संकट ले आता है। ग़लत तरीक़े से कमाए गए पैसे, तुरंत ही तीव्र परेशानी और जटिल समस्याएँ ले आते हैं।

एक अमीर आदमी 'अ' का उदाहरण लीजिए। उसके कई कारोबार और औद्योगिक संस्थाएँ हैं। उसके पास कई बंगले और गाड़ियाँ हैं। उसकी अमीरी से लोग जलते भी हैं। लेकिन वह रातों को ठीक से सो नहीं पाता है। वह रात भर अगले दिन के उन व्यवहारों के बारे में सोचता रहता है, जिन्हें उसे संभालना होता है। जैसे- अगले दिन, दफ़्तर के बिल कैसे भरे जाएँ, उधार की किश्त कैसे चुकाई जाए, बैंक को लौटाने के लिए कुछ लाख का इंतजाम कैसे किया जाय, आदि। यह एक दिन की कहानी नहीं है, बल्कि हर रात चलती रहती है। करोड़ों का कारोबार चलाने के बावजूद, उसे पैसों की तंगी हमेशा रहती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि अधिक पैसे कमाते-कमाते वह नए-नए कारोबार शुरू कर देता है।

'ब' एक साधारण रूप से अमीर कारोबारी है, जो अत्यंत होशियार है। उसका एक बड़ा सा व्यापार है। उसके पास भी गाड़ी, बंगला आदि हैं। उसे व्यापार-निधि की तंगी नहीं है। अगर कभी कारोबार में घाटा हुआ तो, उसे संभालने के लिए उसके

पास आरक्षित धन है। वह हमेशा अपनी आवश्यकता से अधिक पैसे अपने पास रखता है। जब उसे केवल दस हज़ार रुपयों की आवश्यकता होती है, तो वह अपने पास पंद्रह हज़ार रूपये रखता है। अगर कभी उसे एक लाख रुपयों की जरूरत पड़ती है, तो वह उस व्यक्ति से दो लाख रुपए ले लेता है, जिसे उसने उधार दिया होता है। इस प्रकार जीवन में उसे कभी घाटा नहीं होता है। ऐसे में, इन दोनों में अधिक धनी कौन है ?

'अ' अपने ही पैसों का गुलाम है। वह उस खजांची की तरह है, जो बैंक में करोड़ों रुपयों का लेन-देन करता है, पर उन्हें भोग नहीं सकता। वह एक रखवाले की तरह अपना धन और संपत्ति का ध्यान रखता है, पर उनका उपयोग नहीं कर सकता। पैसों की वृद्धि करने में ही वह अपना सारा जीवन बिता देता है। वह अभागा, सचमुच समझदार नहीं है। इसी को "माया" कहते हैं। वह मायाजाल में फँस गया है। संसार के ऋषि-मुनि, महात्मा लोग, धार्मिक नेता, विज्ञानी, दार्शनिक आदि महान् लोगों में कोई भी अमीर नहीं था। अपने उदात्त विचार और सेवा-मनोभाव से इन्होंने समाज की सेवा की और लोगों के हृदय में उच्च और आदरणीय स्थान पा लिया। इसीलिए, उनके नाम इतिहास में आज भी अंकित हैं। उनके जीवित न रहने पर भी, उनके नाम और जीवनी आज भी लोगों के दिलों में जीवित हैं। कई सदियों बाद आज भी विश्व उन्हें याद करता है। तमिलनाडु में, विवाह के संदर्भ में, बुजुर्ग लोग वर-वधु को सभी षोडश सम्पत्तियाँ प्राप्त करके महान् जीवन बिताने का आशीर्वाद देते हैं। सुखी, अर्थपूर्ण और महान् जीवन बिताने के लिए षोडश सम्पत्तियों का होना आवश्यक है। (धन, स्वास्थ्य, बुद्धिशक्ति, सदाचार, अच्छा जीवन-सांथी, गुणी बच्चे आदि) सोलह सम्पत्तियों में से धन भी एक है। लेकिन आजकल लोग गलत सोचते हैं, कि केवल धन ही प्रमुख है, और अगर वे धन प्राप्त कर सकते हैं, तो संसार की हर चीज पा सकते हैं। यह एक अपरिपक्व विवेचन है। सोलह सम्पत्तियों में से किसी एक का भी अभाव हो, तो मनुष्य एक अच्छा सुखी जीवन नहीं बिता सकता है।

हम, अपने साथ वापसी का टिकट लेकर, इस दुनिया में आए हैं। हम एक दिन अवश्य वापस जाने वाले हैं। उस टिकट पर हमारी वापसी का दिनाँक भी लिखा होता है। पर इसका हमें ज्ञान नहीं होता है। वह दिन कल भी हो सकता है, या पाँच साल बाद या पचास साल बाद। हमारी मौत सुखद हो सकती है, या पार्श्ववायु से पीड़ित होकर, हम कई साल शय्याग्रस्त रह सकते हैं। चलने-फिरने में, असमर्थ होने के कारण हम खुद के लिए और दूसरों के लिए उपद्रवी बन सकते हैं। अपनों की उपेक्षा के पात्र बन, नरक-यातना का अनुभव करने के बाद हमारी मौत दयनीय हो सकती है।

जब हम मरते हैं, तो अपने साथ कुछ नहीं ले जाते हैं। महान् पंडित पत्तिनार ने कहा है, "जब तुम मरोगे तो तुम्हारे साथ टूटी हुई सुई भी नहीं आएगी।" टूटी हुई सुई एक बेकार वस्तु है। अपने साथ बेकार वस्तु भी नहीं ले जा सकते हैं, तो और क्या ले जा पाएँगे। कुछ भी नहीं। सारी ज़िंदगी अपनी समझकर जिस सम्पत्ति को बटोरा, वह आपके मौत के समय कामं नहीं आती और उसे आप अपने साथ लें भी नहीं जा सकते। आपके साथ जो आता है, वह है, जीवन में आपसे संचित पुण्य और पाप। इन्हीं के आधार पर ईश्वर यह तय करते हैं कि किस जीव का अगला जन्म किस देश में होगा, किन माँ-बाप के यहाँ होगा और किन गुणों के साथ होगा।

विश्व के विभिन्न भागों में, हर क्षण सैकड़ों जीव पैदा होते हैं। कई साल से बच्चे के लिए तरस रहे, अमरीका के एक अमीर माँ-बाप के यहाँ, सद्गुणी और सदाचारी बेटा बनकर एक जीव पैदा होता है। और एक जीव साधारण रूप से विकसित ब्राजील के मध्यम वर्गीय माँ-बाप के यहाँ साधारण गुण और चरित्र लेकर उनका तीसरा बेटा बनकर पैदा होता है। और एक जीव, भारत के गरीब माँ-बाप जिनकी पहले से ही दो बेटियाँ हैं, और तीसरी भी बेटी हुई तो उसे मारने का आशय रखते हैं, उनके यहाँ हीन गुण और चरित्र वाली तीसरी बेटी बन कर पैदा होता है। और

एक जीव दुर्गुणी, दुराचारी और विकलांग बनकर, अकाल पीड़ित गरीब अफ्रीकी देश इथियोपिया में अपने माँ-बाप का आठवाँ बेटा बनकर पैदा होता है।

प्रत्येक बच्चे के बीच-गुण, चरित्र, स्वास्थ्य, माँ-बाप, देश आदि कितनी भिन्नताएँ! इस बात को ईश्वर ही निर्धारित करते हैं, कि कौन सा बच्चा किस माँ-बाप के यहाँ पैदा हो, किस देश में पैदा हो और किन गुणों के साथ पैदा हो।

ईश्वर जो निष्पक्ष हैं, न्यायपारायण हैं, और जिनकी असीम बुद्धिशक्ति, ज्ञान और बल है, वे किस बात के आधार पर यह निर्णय करते हैं, कि कौन सा बच्चा कहाँ, कब, कैसे और किन माँ-बाप के यहाँ पैदा हो। यह उस बच्चे के पूर्व जन्म में संचित पुण्य और पाप के आधार पर ही हो सकता है। केवल उन्हीं के आधार पर वे निष्पक्ष, न्यायसंगत, सही और सुस्पष्ट निर्णय ले सकते हैं। हमारा हिन्दू धर्म, जो पूर्वजन्म, वर्तमान जन्म और आने वाले जन्मों के बारे में कहता है, वह ईश्वर की सही व्यवस्था को संपूर्ण रूप से समझकर उसको स्पष्ट करता है। कितना महान् है, हमारा हिन्दू धर्म। आप भी ज़रा सोचिए।

मनुष्य के जीवन की हर घटना, उसके भाग्य के मुताबिक़ ही घटती है। हमारे जीवन को हमारा भाग्य निर्धारित करता है। हमारे पाप और पुण्य के आधार पर ही ईश्वर हमारे साथ बुरा या अच्छा करते हैं। यह सोचकर कि हम केवल अपने दूर भविष्य को बदल सकते हैं, (जिसे हम लगातार अच्छे काम करके स्वयं बदल सकते हैं) न कि नज़दीकी भविष्य को, हमें हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रहना चाहिए, बल्कि उस दिशा में भी सच्ची कोशिश करनी चाहिए।

यह मानकर कि हम अपने वर्तमान जीवन को नहीं बदल सकते, हमें निष्क्रिय और व्यर्थ नहीं बैठना चाहिए। मान लीजिए एक विद्यार्थी कहता है- ''मैं पढ़ने में

होशियार नहीं हूँ। ईश्वर ने मुझे कोई बुद्धिशक्ति नहीं दी है। अगर आप लगातार मुझसे पढ़ने के लिए आग्रह कर रहे हैं, तो मैं भी क्या करूँ? मेरा भाग्य इतना ही है।'' तो क्या एक बेटे का अपने पिता के साथ इस तरह से बात करना उचित है?

अगर आपका जवान बेटा नौकरी ढूँढ़ने से, या ढूँढ़ने की कोशिश भी करने से इनकार करता है, अपने गलत दोस्तों के साथ घूमता है और खुद को आलसी बनाने के लिए ईश्वर को ज़िम्मेदार ठहराता है, तो क्या यह न्यायसंगत है? तब तो सभी लोग जो गुनाह करते हैं और अपने कर्तव्य से मुकर जाते हैं, वे अपने भाग्य को कोसकर आसानी से अपनी ज़िम्मेदारी का परित्याग कर सकते हैं।

हर व्यक्ति को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, और सफलता की ओर बढ़ते रहना चाहिए, चाहे हर कदम पर उसे हार का सामना क्यों न करना पड़े। 'दृढ़ता', उच्चतम गुणों में से एक है, जिसे अर्जित करने की हर मनुष्य को कोशिश करनी चाहिए। फल का ख्याल किए बिना (चाहे वह फल हार ही क्यों न हो) अपना कर्तव्य निभाना ही मनुष्य का चरम उद्देश्य है। यही गीता का सार भी है। जीवन की सारी घटनाएँ भाग्य और परिश्रम के संयोग के फल हैं। मान लीजिए आपके भाग्य के अनुसार आपको एक लाख़ रुपयों का मुनाफ़ा होने वाला है। अपने प्रयत्न और परिश्रम से आप उसे सवा लाख तक बढ़ा सकते हैं, और अपने आलस्य से उसे पचहत्तर हज़ार तक घटा भी सकते हैं।

उसी प्रकार अपने भाग्यानुसार हमें मिलने वाली सज़ा की कठोरता को अपने प्रयत्न से घटा सकते हैं, और अपने आलस्य से बढ़ा सकते हैं। दोनों हमारे ही हाथ में हैं।

अब इसे एक अलग दृष्टिकोण से देखें। मान लीजिए आप एक नया कारोबार आरंभ करते हैं। उसकी सफलता या विफलता आपके भाग्य पर निर्भर होती है। उसमें 90

प्रतिशत का योगदान भाग्य का होता है, बाक़ी दस प्रतिशत परिश्रम का। पर भाग्य के अनुसार आपको कारोबार में विफल होना ही है। इसलिए अपने परिश्रम के बावजूद आप विफल होते हैं या आपको घाटा होता है। पुनः आप दोबारा प्रयत्न करते हैं। इस बार नतीजे में भाग्य का योगदान 80 प्रतिशत होगा और परिश्रम का 20 प्रतिशत। इस बार भी, भाग्य के मुताबिक आपको हारना है और आप हार जाते हैं। अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ आप तीसरी बार कोशिश करते हैं। इस बार भाग्य का 60 प्रतिशत और परिश्रम का 40 प्रतिशत प्रभाव आपके फल पर है। इस बार भी भाग्य के आगे झुककर आप हार जाते हैं। फिर से असाधारण दृढ़ता से आप अपना चौथा प्रयत्न भी करते हैं। इस बार आपके नसीब का 40 प्रतिशत और परिश्रम का 60 प्रतिशत प्रभाव आपके फल पर है। आपके भाग्य के अनुसार इस बार भी आपकी हार होने वाली है। लेकिन ईश्वर आपकी अनुकरणीय दृढ़ता पर नज़र रखे हुए है। ''अरे! बार-बार विफल होने के बावजूद यह आदमी टूटा नहीं है। वह सफलता के लिए लगातार प्रयत्न कर रहा है। यह सचमुच कर्तव्यनिष्ठ वीर है। मुझे इस व्यक्ति के परिश्रम को अधिक महत्व देना चाहिए- इस प्रकार सोचकर वे आपका भाग्य दोबारा लिखते हैं और आपको सफलता प्रदान करते हैं।

ऊपर बताई गई भाग्य और परिश्रम के प्रभाव की प्रतिशतता काल्पनिक अंदाज़ा है. आपको केवल इसके पीछे का बोध ग्रहण करना चाहिए।

आपको असफल करके भी, ईश्वर
आपके प्रयत्न और परिश्रम को पुरस्कृत करते हैं।

तिरुवल्लुवर- महान् तमिल कवि

ईश्वर की हमें मदद न मिलने पर भी, हमारे सच्चे प्रयत्न और अविरत परिश्रम हमें चाहे छोटी ही सही, पर मान्यता और पुरस्कार प्राप्त करवाते हैं। वैसे ईश्वर के लिए

असाध्य इस ब्रह्माण्ड में कोई भी काम नहीं है। प्रयत्न और परिश्रम की महत्ता बताने के लिए कवि ने ईश्वर की महत्ता को घटाया है। आपके सच्चे और अविरत प्रयत्न आपको छोटे-छोटे लाभ प्राप्त करवाते हैं। आप अपना प्रयत्न लंबे समय तक जारी रखते हैं तो, यही छोटे-छोटे लाभ मिलकर, एक दिन बहुत बड़ी सम्पत्ति बन जाते हैं, जिस प्रकार करोड़ों.बूँदें मिलकर समुंदर बन जाती हैं।

माँ-बाप अपने बच्चों के लिए अपना समय, ताकत और पैसा खर्च करते हैं। बच्चों को पालने के लिए उन्हें सुशिक्षित बनाने के लिए, वे कई तकलीफें उठाते हैं, कई त्याग करते हैं। वे अपने बच्चों को उच्चतम शिक्षा दिलाना चाहते हैं। पैसा खर्च करने के मामले में असमर्थ होने के बावजूद कई माँ-बाप अच्छी शिक्षा के लिए पैसों की परवाह नहीं करते। अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाते हैं। अगर स्कूल दूर हैं, तो अपने निवास को स्कूल के करीब स्थानांतरित करते हैं। अगर अच्छा स्कूल दूसरे शहर में है, तो वे खुद बच्चों के साथ उस शहर में बस जाते हैं।

अमरीका में रहने वाले कुछ माँ-बाप नहीं चाहते कि उनके बच्चे अमरीकी संस्कृति के बीच पढ़ें। अपनी सारी सुख-सुविधाएँ और अपने होनहार भविष्य का बलिदान कर अपने बच्चे को एक अच्छे वातावरण में शिक्षा प्रदान करवाने की इच्छा से वे भारत लौट आते हैं। बच्चों के लिए माँ-बाप से किए जाने वाले त्याग, स्वारस्यकर होते हैं।

बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए बड़े-बड़े प्रयत्न और त्याग की आवश्यकता है। पर क्या केवल इनसे बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो जाएगा? अगर गलत रास्ते से कमाए गए पैसों से बच्चों की पढ़ाई के लिए खर्च करेंगे, तो बच्चों का उद्धार नहीं होगा। अच्छी शिक्षा प्राप्ति के बावजूद, आपका पाप उनका भविष्य बिगाड़ देगा। आपका, एक सार्थक जीवन बिताना ही आपके बच्चों के लिए, आपकी सबसे बड़ी

देन है। आपके अच्छे कर्म आपके बच्चों की बहुत मदद करेंगे। अच्छे स्कूल में शिक्षा प्राप्त कई लोग आज बुरा जीवन बिता रहे हैं और उच्च स्थानों से नीचे की तरफ़ जा रहे हैं। गाँव के किसी साधारण स्कूल में शिक्षा प्राप्त कई लोग आज सच्चाई, ईमानदारी और मेहनत का जीवन बिता रहे हैं और जीवन में सफल भी हुए हैं। ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी स्कूलों में पढ़ाई की है, और अपने माँ-बाप की उपेक्षा कर उनके साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं। और कुछ लोग ऐसे हैं जो गाँव की पाठशालाओं में साधारण शिक्षा प्राप्त करते हैं, पर अपने माँ–बाप के साथ प्यार और गौरव का व्यवहार करते हैं और जीवन में प्रगति पाते हैं।

मेरे एक ब्राह्मण मित्र हैं, जो बैंगलूर में रहते हैं। उनका बेटा और बहू, दोनों कंप्यूटर इंजीनियर हैं और कुछ साल पहले दोनों, अमरीका की दो अलग–अलग कंप्यूटर कंपनियों में काम कर रहे थे। दोनों को अच्छा वेतन मिलता था और वे एक आरामदेय जीवन बिता रहे थे। मेरे दोस्त एक सरकारी मुलाजिम थे। सेवा–निवृत्ति के बाद बेटे का आमंत्रण स्वीकार कर, वे अपनी पत्नी के साथ बेटे के यहाँ अमरीका चले गए। और छः महीने वहाँ रहे भी। पर उन दोनों को अमरीकी जीवन–शैली नहीं भायी और उन्होंने भारत लौटने का फैसला कर लिया। तभी बेटे ने अपनी पत्नी से कहा– "मेरे माता–पिता की देखभाल करना और उनको सुख देना मेरा कर्तव्य है। अगर वे अमेरिकी जीवन नहीं पसंद करते और भारत में ही रहना चाहते हैं, तो मैं भी भारत लौट जाऊँगा और उनकी देखभाल करूँगा।" उसकी पत्नी भी मान गई और चारों बैंगलूर लौट आए। आज उनको बैंगलूर में अच्छी नौकरियाँ मिली हैं और सब खुश हैं।

उनके जीवन में और एक महत्व की घटना घटी। अमरीका जाने से पहले बेटे ने अपनी माँ से वादा किया था कि माँ को नापसंद ग़लत काम, वह किसी भी हालत में नहीं करेगा। उनमें से एक था मांसाहार का वर्जन। एक बार छुट्टियों में अमेरिका से

भारत आते समय, हवाई-जहाज में, उसे गलती से मांसाहारी खाना दिया गया और अनजाने में उसने उसे खा भी लिया, लेकिन बाद में जब उसे पता चला तो वह बहुत व्याकुल हो गया। घर पहुँचते ही वह अपनी माँ के कदमों पर गिर पड़ा, उन्हें सारी हक़ीक़त बताई, रोया और उनसे क्षमा माँगी।

इस भ्रष्ट संसार में, इन ब्राह्मण माँ-बाप के यहाँ सच्चरित्र बेटा कैसे पैदा हुआ? उन्होंने अपने इस जीवन में और पूर्व जन्मों में पुण्य कमाए होंगे, और उसी के फलस्वरूप यह पुत्ररत्न पैदा हुआ होगा। अगर आप चाहते हैं कि आपका बेटा जीवन में ऊँचा उठे, बुढ़ापे में आपकी देखभाल करे, तो आपको उसे उत्तम शिक्षा दिलाने के अलावा अच्छे कर्म करके पुण्य भी कमाने होंगे। इसके अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

जब आप किसी को दुख देकर, कोई पाप करते हैं, तो उसका कुल 16 लोगों पर असर होता है। आप पर; जिसे दुःख देते हैं, उस पर; आपके आगे के सात जन्मों के सात लोगों पर, और आगे की सात पीढ़ियों के सात लोगों पर। जब आप कोई पाप करते हैं, तो उसका फल कम से कम 16 लोग भुगतते हैं। उसी प्रकार, जब आप मुसीबत में किसी की मदद करते हैं, तो उससे भी कम से कम 16 लोगों को लाभ होता है। आपको कभी किसी को दुःख नहीं देना चाहिए (सिवाय अपने कर्तव्य-पालन के समय) और जितना हो सके दूसरों की मदद करनी चाहिए।

ईसाई धर्म को अस्तित्व में आकर 2000 साल हुए। इन 2000 सालों में आज वह सारे विश्व में फैल गया है, और जिन देशों में ईसाई लोग रहते हैं, वे देश समृद्ध, धनी और पुरोगामी हैं। विश्व के बीस अत्यंत समृद्द देशों में, जापान को छोड़कर बाक़ी 19 देशों में ईसाई धर्म का आधिपत्य है। और दूसरी तरफ़ महानतम् हिंदू धर्म विश्व का सबसे प्राचीन धर्म है और शायद 20,000 या 30,000 साल या उससे भी पुराना है।

पर हमारे लोग गरीब, भूखे, अशिक्षित और बीमार हैं। ईसाइयों ने भी गलतियाँ की हैं, गलत काम किए हैं। इसके बावजूद, उन्होंने गरीब और दुःखी लोगों को विद्यादान और वैद्यकीय सेवाएँ उपलब्ध कराने की समाजसेवा भी की है। उसके बदले में ईश्वर ने उन्हें अच्छे प्रतिफल दिए हैं। आप इस कथन पर गौर कीजिए। मदद करने वाले हाथ, प्रार्थना करने वाली जीभ से अधिक पवित्र हैं।

क्यों न हम 'सेवा' जैसा अच्छा और उदात्त गुण उनसे सीखें और उसे अपनाएँ? ऐसा करने से ही हम उन्नति कर सकते हैं। अच्छे गुण चाहे जिसमें भी हो, हमें उससे अवश्य सीखने चाहिए। हाल ही में, मैं धर्मपुरी के एक विकलांग और अनाथ बच्चों के स्कूल में गया था। वहाँ बिना दो पैर और एक हाथ के बच्चे को देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ। उस बच्चे की पीड़ा देखकर मैं व्याकुल हो गया। जब आप किसी मानसिक और शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के आश्रम जाएँगे, या ऐसे किसी व्यक्ति से मिलेंगे तो आप सबको भी ऐसा ही लगेगा।

इन लोगों को साधारण मनुष्य बनाने की अगर ईश्वर ने हमें शक्ति दी होती, तो अवश्य हम बिना हिचकिचाए उस शक्ति का प्रयोग करते और उनको उनकी परेशानी से मुक्त करवाते। ईश्वर, जो सर्वशक्त हैं, क्या वे उनकी मदद करते हैं? नहीं। इन अभागों को मरने तक, हर घड़ी, हर घण्टा, हर दिन यह पीड़ा सहनी पड़ती है।

वास्तव में ईश्वर ने ही उन्हें उनके पिछले पापों के बदले में यह दण्ड दिया है। ऊपर कोई नरक नहीं है। यही सच्चा नरक है। अरे! पापियों जान लो, आने वाले जन्मों में, आपके लिए भी ऐसा ही नरक आरक्षित किया गया है।

ईरान में जनवरी सन् 2004 को हुए भूकम्प में 30,000 लोग मारे गए। कुछ लोग पूछते हैं– एक ही समय पर एक ही जगह, एक साथ 30,000 लोग कैसे मर सकते

हैं, क्या उन 30,000 लोगों में एक भी अच्छा आदमी नहीं था? ईश्वर ऐसी घटनाएँ कैसे घटने देते? क्या सचमुच ईश्वर का अस्तित्व है? क्या हम ही गलती से मान लेते हैं कि ईश्वर है?– इस प्रकार के कई प्रश्न हमारे मन में उठते हैं।

विश्व की जनसंख्या 600 करोड़ है। हर साल इसमें एक प्रतिशत लोग मरते हैं और दो प्रतिशत पैदा होते हैं। अर्थात जन्मदर 2 प्रतिशत है और मृत्युदर एक प्रतिशत। जनसंख्या विस्फोट के लिए कारण है जन्मदर में एक प्रतिशत की अधिकता। हर वर्ष कुल जनसंख्या का एक प्रतिशत मरता है। अर्थात् हर साल 6 करोड़ लोग मरते हैं। और हर दिन पूरे विश्व में 1,64,383 लोग मरते हैं। (6 करोड़ 365 दिन से विभक्त) प्रतिदिन इतने लोग एक ही जगह नहीं, बल्कि विश्व भर में मरते हैं। इसलिए रोज़ की इस बात का अधिक महत्व नहीं होता। यह बात अखबारों में छापी भी नहीं जाती। पर 30,000 लोगों का एक ही समय और एक ही स्थान पर मरना विरल घटना है। इसलिए यह बहुत महत्व का माना जाता है और इसे अखबारों में बड़ा समाचार बनाकर छापा जाता है। इसी को हम पढ़ते हैं और हमारे मन में कई प्रश्न उठने लगते हैं। पर आँकड़े के हिसाब से यह कोई बड़ी बात नहीं है।

मृत्यु शरीर की होती है, आत्मा की नहीं। यह एक प्रकार से, एक घर से दूसरें घर में स्थानांतरित होने के बराबर है। शरीर को छोड़ने के बाद आत्मा नया जन्म लेती है। मृत्यु कुछ लोगों के लिए दंड है, तो कुछ लोगों के लिए वरदान। पर किसके लिए सज़ा है, और किसके लिए वरदान? हर मनुष्य अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक सारी ज़िंदगी पाप करता रहता है। किसी व्यक्ति ने अगर, पुण्य से अधिक पाप किए हैं, तो मौत उसके लिए सज़ा है। मौजूदा घर से कम सुविधाओं वाले घर में, या झोपड़ी में, या रास्ते पर स्थानांतरित होने के बराबर ही उसका अगला बुरा जन्म भी होता है। वह शायद गरीब अफ्रीकी माता-पिता का आठवाँ और विकलांग बच्चा बनकर पैदा हो सकता है।

उसी प्रकार किसी व्यक्ति ने, अपने जीवन-काल में, पाप से अधिक पुण्य किए हैं, तो मौत उसके लिए वरदान है। मौजूदा घर से बेहतर सुविधाओं वाले घर में, या बड़े बंगले, या महल में स्थानांतरित होने के बराबर ही, वह भी एक बेहतर जन्म पाता है। उसका पुनर्जन्म धनी अमेरिकी माता-पिता के यहाँ, सच्चारित्र वाले, पहले बेटे के रूप में हो सकता है।

इस प्रकार, मौत, मनुष्य से किए गए पुण्य या पाप के आधार पर, ईश्वर से उसे दिया गया दण्ड या वरदान साबित हो सकती है। पर किसी मनुष्य की मृत्यु, अवश्य, उसके परिवार वालों, बंधु-बांधवों और उस व्यक्ति पर निर्भर लोगों के लिए सज़ा होती है।

किसी को कभी दुःख न देने वाला, और जितना हो सके दूसरों की मदद करने वाला एक व्यक्ति, अपनी पत्नी और बच्चों को दयनीय स्थिति में छोड़कर मर जाता है। हमारे मन में प्रश्न उठता है कि क्या ऐसे व्यक्ति को मौत देना ईश्वर को सही लगता है? उस व्यक्ति के लिए उसकी मृत्यु ईश्वर का वरदान है। ईश्वर इस प्रकार सोचकर उसे मौत देते हैं- "वाह! कितना गुणी व्यक्ति है। उसे इस दयनीय हालत में और अधिक दिन कष्ट उठाने देना नहीं चाहिए। उसका पुनर्जन्म ऐसी जगह होना चाहिए जहाँ उसे, अच्छे माता-पिता, अच्छे परिवार वाले और अच्छा वातावरण मिले और यह सुखी रहे।"

पर; उस गुणी व्यक्ति की मौत, उसकी पत्नी, उसके बच्चे, माँ-बाप और उस पर निर्भर लोगों को ईश्वर से दी गई सज़ा होती है।

कार, संसार में कई घटनाएँ, कई कारणों से घटती हैं। शायद हम इन कारणों झने में असमर्थ हैं, और हमें समझाने वाला भी कोई नहीं है। किसी दिन यह
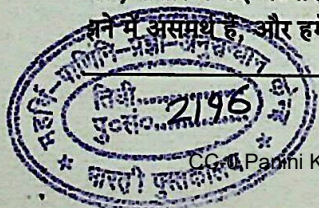
कारण हम पर स्पष्ट होगा। इसलिए, ईश्वर के अस्तित्व के बारे में हमें मन में शंका नहीं रखनी चाहिए।

अपने अज्ञान और सीधेपन के कारण अशिक्षित लोग, ईश्वर के बारे में अपनी शंका व्यक्त करते हैं। पर शिक्षित लोगों को ऐसा नहीं करना चाहिए। हमें ईश्वर पर अटल विश्वास होना चाहिए। "चाहे मेरा जीवन ही क्यों न छीन लिया जाए, पर मैं ईश्वर पर कभी अविश्वास नहीं करूँगा।"- हमें ईश्वर की कृपा पाने के लिए सबसे आवश्यक है, ईश्वर में सच्चा, स्पष्ट और अटल विश्वास का होना। ईश्वर भी ऐसे निष्ठावान लोगों को ही प्यार करते हैं।

दहेज - एक कुप्रथा

आजकल, अनेक घरों में लोग अपने ही परिवार वालों को दुःख देकर अधिक पाप के भागी बन रहे हैं। घर के बेटे, बेटियाँ, बहुएं आदि अपने बूढ़े माता-पिता का अपमान और अनादर करते हैं; भोग-विलास और आमोद-प्रमोद में आसक्त लोग, बच्चों के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा करते हैं; शराबी विवाहित पुरुष प्रतिदिन अपनी पत्नियों को सताते हैं; भाई-बहन एक दूसरे को कष्ट पहुँचाते हैं, और इतना ही नहीं, विवाहित पुरुष अपने माँ-बाप के साथ मिलकर, दहेज के लिए पत्नियों को पीड़ित करते हैं। इन पापों को पूर्णतः रोकना शायद नामुमकिन है, पर कम से कम हम इन्हें अवश्य कम कर सकते हैं। केवल मानव जाति को ही नहीं, बल्कि जानवरों को पीड़ा देना भी पाप है। मांसाहारियों, ज़रा सोचिए।

एक साल पहले की एक घटना के बारे में, मैं आपको बताना चाहता हूँ। मेरी पहचान के सेलम् के एक वयोवृद्ध वकील, मेरी फैक्ट्री के पास रहने वाले, उनके किसी रिश्तेदार से मिलने, गाड़ी से धर्मपुरी आए। वापस लौटते समय उनकी गाड़ी बंद पड़ गई। गाड़ी को चालू करने की ड्राइवर की सारी कोशिशें बेकार हो गई। पर उस वकील को किसी भी हालत में, उसी दिन सेलम् लौटना ही था। मुझे इस समस्या के बारे में पता चला और मैंने उनसे कहा कि वे गाड़ी को यहीं छोड़कर बस से सेलम् चले जाएं, और मैं मैकेनिक को बुलाकर गाड़ी ठीक करवाकर, सेलम् भेजूँगा। गाड़ी ठीक करवाने के लिए, ड्राइवर को देने के लिए वे अपने साथ अधिक पैसे नहीं लाए थे, और वे हिचकिचा रहे थे। मैंने उनसे कहा "आप चिंता मत कीजिए। मैं अपने पैसों से गाड़ी ठीक क़रवाकर सेलम भेजूँगा।"

अगले दिन जब ड्राइवर गाड़ी लेकर सेलम लौटा, तो उन्होंने उससे पता लगवाकर मुझसे खर्च किए गए पैसे लौटा दिए। मेरे यह कहने के बावजूद कि वह बहुत छोटी राशि थी, और वे उसे लौटाने का कष्ट न उठाएं, उन्होंने उसे आग्रहपूर्वक लौटाया। उनके यह पैसे लौटाने के आग्रह से मैं सचमुच चकित हो गया। शायद उन्होंने सोचा होगा, कि बिना किसी सही कारण के, उन्हें किसी से पैसे नहीं लेने चाहिए। अगर वे अभी, या बाद में, या किसी और रूप में वे पैसे नहीं लौटा पाए, तो वे मेरे ऋणी रहेंगे। अगर आगे भी पैसों के रूप में, या मेरी किसी मदद के रूप में उन्हें पैसे लौटाने का मौका नहीं मिला, तो शायद वे ऋण चुकाए बिना ही मर जाएंगे। शायद उनके, मेरे पैसे लौटाने के आग्रह के पीछे यही कारण था। इसी कारण कुछ योगी और महर्षि, लोगों के घर नहीं जाते हैं और वहाँ भोजन ग्रहण नहीं करते हैं।

कुछ लोग ऐसे हैं, जो अपनी पत्नियों को, उनके माता-पिता के यहाँ से अधिक पैसा और सोना लाने के लिए सताते हैं, मजबूर करते हैं। उनके इस प्रकार के व्यवहार से वे कितने पाप संचित कर रहे होंगे। अगर माँ-बाप अमीर हैं, और अपनी इच्छा से अपनी बेटियों को कुछ दे रहे हैं, तो उसे लेने में कोई आपत्ति नहीं है। और ऐसे माता-पिता जो बहुत मुश्किल से उधार के पैसों से अपनी बेटियों की शादी करवाते हैं, उन गरीबों पर दबाव डालना और उन्हें कष्ट देना सचमुच में बड़ा पाप है।

विवाह समारोह में, आप ईश्वर का नाम लेकर यह प्रतिज्ञा करते हैं कि आप हर अनिष्ट, अनर्थ और मुश्किल से अपनी पत्नी की रक्षा करेंगे और उसके हर सुख-दुःख में भागीदार रहेंगे। (शादी संपन्न करने वाले पंडित के मंत्रों का यही अर्थ है) आप यह प्रतिज्ञा अग्नि-देव के सम्मुख, सैंकड़ों, दोस्त परिवारजनों के सामने करते हैं और अरुंधति और अन्य पवित्र नक्षत्रों के आशीर्वाद लेकर आप अपनी पत्नी को अपना और अपने जीवन का भाग बना लेते हैं। पर कुछ ही समय में क्या हो जाता है?

आप अपना वचन भूल जाते हैं, और यह भी भूल जाते हैं कि वह आपके जीवन का एक अविभाज्य हिस्सा है। तभी आपकी लालच और अतृप्त इच्छाएं उभर आती हैं। खुद आप और आपके माता-पिता और बहनें, पैसे और अन्य वस्तुओं के लिए अपकी पत्नी को सताते हैं। कभी आप भी उनके साथ मिल जाते हैं और कभी उस बात से बेखबर होने का नाटक करते हैं। शादी के समय अग्नि के सामने की गई प्रतिज्ञा का क्या हुआ? अब आप उसे भूल गए हैं। अपनी पत्नी और उसके माता-पिता को सताते हैं। क्या आप विश्वासघाती नहीं हैं? क्या आपको लगता है, कि इन पापों का संचयन कर, आप ईश्वर की सज़ा से बच सकते हैं? कभी नहीं।

समाज में कुछ दुर्बल वर्ग के लोग हैं, जिनकी रक्षा करनी पड़ती है। वे हैं, औरतें, बच्चे और वयोवृद्ध। इनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। पुराने जमाने में भी युद्ध के समय, इन लोगों को छोड़ दिया जाता था। अगर कोई इन तीन वर्गों में से किसी को भी दुःख देता है, तो वह अधिक पाप संचित करता है। उसी प्रकार कोई इनकी मदद करता है, तो वह अधिक पुण्य कमाता है। एक कथन है- ''भूंत-पिशाच भी औरतों पर दया करते हैं।'' तो इस वर्ग के लोगों को दुःख देकर क्या आप पाप नहीं कमाएंगे? कृपया सोचिए।

शिबि महाराज की कहानी हम सब जानते हैं। एक व्याध ने एक कबूतर को घायल किया और वह कबूतर महाराज के शरण में आया। कबूतर की हालत पर तरस खाकर महाराज ने उसकी सहायता करने का वचन दिया। जब शिकारी ने कबूतर को राजा के हाथों में देखा, तो उसने राजा के सामने यह माँग रखी कि महाराज उसे वह पक्षी लौटा दें या फिर अपने शरीर से उस पक्षी के वजन के बराबर का मांस दे दें। महाराज ने शिकारी को पक्षी लौटाने के बजाय अपना मांस देने का निश्चय किया। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर कि शरण में आने वाला केवल एक पक्षी था और उसका पीछा करने वाला केवल एक शिकारी था, जो राजा की प्रतिष्ठा के मुकाबले का नहीं था, महाराज शिबि का यह व्यवहार स्तुत्य और अद्वितीय है; कभी-कभी यह शंका भी

होती है, कि क्या यह सच्ची कहानी है या काल्पनिक।

लेकिन आप अपनी उस पत्नी का मांस धीरे-धीरे काट रहे हैं जो ईश्वर को छोड़कर आपके शरण में आई है। एक साधारण पक्षी के खातिर अपने मांस की बलि चढ़ाने वाले शिबि महाराज की तुलना में, अपने खातिर अपनी ही पत्नी का मांस चीरने वाले अपने आप को आप कहाँ देख पाते हैं? क्या इस विश्वासघात व्यवहार के लिए ईश्वर से मिलने वाली सज़ा से आंप बच सकते हैं?

रामायण में रावण के साथ अंतिम युद्ध में, श्री राम उदात्त और उदार थे। दिन के युद्ध के अंत में श्री राम ने देखा कि रावण अपने सारे शस्त्रास्त्र खोकर निहत्था खड़ा था। अपने आप को बचाने के लिए उसके पास कोई अस्त्र नहीं था। राम अपने शत्रु को इस शस्त्रहीन स्थिति में मारना नहीं चाहते थे। युद्ध में शत्रु को मारना पाप नहीं था, और वैसे भी प्रातः युद्ध के प्रारंभ के समय रावण के पास सारे अस्त्र भी थे। इसके बावजूद श्रीराम ने रावण को उस दिन लौटकर, अगले दिन युद्ध पुनरारंभ करने को कहा। लेकिन आप और आपके माता-पिता, ऐसी जवान वधुओं को यातना देते हैं जो एक अपरिचित घर में, अपरिचित सास-ससुर के साथ रहने आई हैं, और जिनकी रक्षा करने वाला या जिन्हें दिलासा के दो शब्द सुनाने वाला वहाँ कोई नहीं है। कितना क्रूर व्यवहार है।

वह भी कैसी पत्नी? वह पत्नी जो आपको भगवान मानती है, वह पत्नी जो हादसे के शिकार आपको किसी अस्पताल में देख अधिक दुःखी होती है, और आपके माँ-बाप से भी ज़्यादा आँसू बहाती है। वह पत्नी, जो ऐसी स्थिति में, जब वह अपनी जान देकर, मौत से आपको बचा सकती है, तब अपनी जान देने से एक क्षण के लिए भी हिचकिचाती नहीं है, ऐसी गुणी पत्नी को आप यातना दे रहे हैं।

संसार में सबसे श्रेष्ठ संबंध है, माँ-बच्चे का। यह संबंध भी कभी-कभी पति-पत्नी

के रिश्ते के सामने गौण हो जाता है। संसार में आपकी पत्नी ही वह पहली व्यक्ति है, जो आपकी बरबादी के समाचार से अधिक विचलित होती है। उसके बाद ही आपकी माँ का स्थान होता है। ऐसी पत्नी को आप यातना देते हैं, तो क्या इससे अधिक विश्वासघाती कार्य इस दुनिया में और कोई है? आप यह सब केवल पैसों के लिए करते हैं। एक वेश्या भी एक रात में हज़ारों रुपए कमा सकती है। उन पैसों के लिए आप अपनी ऐसी पत्नी को दुःख देते हैं,- जिससे आपने अग्नि के सम्मुख विवाह किया था, जिसकी मरते दम तक रक्षा करने का वचन दिया था, जिसको भूत-पिशाच भी क्षमा कर देते हैं, जो आपको भगवान मानकर आपके शरण में आई है, जो आपके सामने बिना किसी प्रकार की सुरक्षा के खड़ी है, जो आपकी जान बचाने के लिए, अपने प्राणों को त्यागने के लिए तैय्यार है।

क्या आपको अपने विश्वासघात का बोध नहीं है?

क्या आपको अपने अत्याचार का बोध नहीं है?

क्या आपको इस बात का ज्ञान नहीं है कि आप कितने पाप कर रहे हैं?

यह सब करके क्या आप सोच सकते हैं, कि आपके इन कार्यों के लिए ईश्वर से मिलने वाली सज़ा से आप बच सकते हैं? आप संसार में कहीं भी जाइए, किसी भी कोने में छुप जाइए, पर सज़ा से कभी नहीं बच सकते।

पश्चिमी देशों में दहेज-प्रथा नहीं है और इसलिए इस प्रकार के पाप भी नहीं होते हैं। पर केवल पिछड़े देशों में ही लोग दहेज-प्रथा के कारण पाप कर रहे हैं। जवान वधुओं के साथ आपके बुरे व्यवहार से प्राप्त पापों की सज़ा से आप हरगिज़ बच नहीं सकते हैं।

जो लोग दहेज लेने में लगे हैं, उन्हें जान लेना चाहिए कि वे महा पाप कर रहे हैं। आप क्यों अपार पाप संचित कर रहे हैं? क्या आप जैसा मूर्ख कोई और है?

सच्ची उन्नति

जीवन में सफलता पाने के लिए नीचे दिए गए पाँच गुण अत्यावश्यक हैं।

(1) सच्चाई (2) ईमानदारी (3) फलापेक्षा किए बिना परिश्रम करना (4) दूसरों को दुख नहीं देना (सिवाय अपना कर्तव्य निभाते समय) (5) गरीबों का दुख दूर करना।

ये गुण सभी सफल लोगों में भरपूर देखने को मिलते हैं। हमें भी एक सफल और सार्थक जीवन पाने के लिए, इन गुणों को अपने जीवन का आधार बनाना चाहिए।

जीवन एक बड़ा और लंबा संघर्ष है। अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए हमें लहरों के विरुद्ध तैरना पड़ता है। रास्ते में कई संकट और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। केवल वह व्यक्ति जो उनका सामना करने के लिए और उन्हें नियंत्रित करने के लिए तैयार है, जीवन में विजयी बनता है।

जब आप लोगों के साथ अंधेरे कमरे में होते हैं, तो यह अपेक्षा मत रखिए कि वहाँ कोई और दिया जलाए। सबसे पहले आप दिया जलाइए। ईमानदार समाज के लोगों के बीच ईमानदार रहना आसान है। लेकिन हमारे पापयुक्त समाज में ईमानदार और परिशुद्ध बनकर रहना बहुत मुश्किल है। हम जिधर भी देखें, वहाँ स्वार्थ, धोखाधड़ी, कपट, भ्रष्टाचार, घूस, स्वजन-पक्षपात और शोषण है। हमें ऊपर बताए पांच गुणों का पालन कर ईमानदारी से जीवन बिताने का प्रण लेना चाहिए। ज़मीन पर चलना आसान है, पर रस्सी पर चलना बहुत मुश्किल। पश्चिमी देशों में इन गुणों का पालन करना

सरल है, पर उनका पालन हमारे समाज में करना बहुत मुश्किल है। *नेता लोग, गैर कानूनी ढ़ंग से मद्य बनाने वाले, स्वार्थी व्यापारी, मिलावट करने वाले और अन्य शोषकों को दोष मत दीजिए। वे वैसे ही रहेंगे। उन्हें सुधारने की कोशिश करना, उनके अत्याचारों के बारे में प्रश्न करना, या उनसे न्याय की अपेक्षा करना बेकार है।*

उन्हें सुधारना नामुमकिन है। उनकी उपेक्षा कर देनी चाहिए। क्या कभी कोई चूहा एक पहाड़ से टकरा सकता है? ईश्वर ने इन्हें समाज में फलने फूलने क्यों दिया है? हम यह मान सकते हैं कि दूसरे पापियों को सज़ा देने के उद्देश्य से ईश्वर ने इन्हें पनपने दिया है।

ऊपर बताए गए गुणों का पालन करते समय, उनमें से किसी एक गुण पर भी, सौ प्रतिशत खरा उतरने की कोशिश मत कीजिए। 90 प्रतिशत ही खरे उतरे, तो भी काफ़ी है। अगर सभी गुणों पर, इस जनम में आप 90 प्रतिशत खरे उतरे तो वही सबसे बड़ी कामयाबी होगी। आगे, यह ऐसे ही व्यक्ति की कहानी है, जिसने अच्छे गुणों का सौ प्रतिशत पालन करने की कोशिश की और अंत में दूसरों के लिए खुद गलत उदाहरण साबित हुआ।

बैंगलूर में एक ईमानदार व्यापारी था जो मशीनरी का फालतू-पुरज़ा बेचता था। कारोबार में हिसाब-किताब रखने में, कर चुकाने में वह 100 प्रतिशत ईमानदार था। सरकार की बाकी चुकाने में उसने एक रुपए का भी धोखा नहीं किया था। और न ही किसी को कभी एक रुपया घूस दिया था। उसके ईमानदार होने से, अन्य व्यापारियों को, और घूस न देने के कारण भ्रष्ट अधिकारियों को, वह खुद एक समस्या बन गया था।

गलत व्यवहार करने वाले व्यापारी और भ्रष्ट अधिकारी, इस ईमानदार आदमी के लिए समस्याएं खड़ी कर उसका सर्वनाश करने की कोशिश करने लगे। खुद यातनाओं का शिकार होने के बावजूद उसने अपनी ईमानदारी नहीं त्यागी। एक समय ऐसा आया कि वह उन यातनाओं को और अधिक नहीं सह सका। इसलिए उसने अपनी दुकान बंद कर दी।

उसकी ईमानदारी से कोई प्रभावित नहीं हुआ। लोग यह सोचने लगे कि, उसने अपनी ईमानदारी से क्या हासिल किया। अपनी ईमानदारी के कारण उसे अपनी दुकान बंद करनी पड़ी। इसलिए लोगों को लगा कि यह असाध्य है कि कोई ईमानदार भी रहे और सुखी जीवन भी बिताए।

मैंने लोगों को यह आलोचना करते हुए सुना है कि "महात्मा जी के ईमानदार होने के बावजूद, आज उनके बच्चे और पोते सम्पन्न नहीं हैं।" लोग सोचते हैं कि *अमुक लोग महान हैं, आदर्श नेता हैं, आदरणीय व्यक्ति हैं, पूजा के योग्य महात्मा हैं लेकिन जीवन में हम उनका अनुसरण नहीं कर सकते। अगर हम उनका अनुसरण करेंगे, तो इस संसार में नहीं टिक सकेंगे, हम धन-हीन हो जायेंगे और हमारी पत्नी और बच्चे दयनीय जीवन बिताएँगे।*

इसलिए, इन पाँचों गुणों का 90 प्रतिशत पालन करके, इस भौतिक जीवन में सफल होना ही बेहतर है। आपके सफल होकर, अमीर बनने पर लोग आपको मानते हैं, आपकी बातों पर विश्वास करते हैं, और आपके विचार और आचरण का अनुसरण करते हैं। हमारे समाज में, ऐसे लोगों का मिलना दुर्लभ है, जो अच्छे गुणों का उपदेश देते हैं और साथ ही उनका पालन भी करते हैं। अगर आप इस वर्ग के अंतर्गत आते हैं, तो आप पर अशिक्षित और साधारण लोगों के लिए एक आदर्श उपस्थित करने का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व होता है। आपको यह सिद्ध करना पड़ेगा, कि अच्छे लोग

भी संपन्न और सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

इस प्रकार अच्छा और ईमानदार जीवन बिताकर दूसरों के लिए एक आदर्श निश्चित कीजिए। इससे, ईश्वर आपसे अधिक प्रसन्न होंगे और आपके लिए एक बड़ा सिंहासन प्रदान करेंगे। प्रारंभिक आलोचनाओं के बाद, आपके आसपास के लोग, धीरे-धीरे आप ही के रास्ते पर आएँगे। स्वामी विवेकानंद ने कहा था, "मुझे सौ ईमानदार और निस्वार्थी युवक दीजिए। मैं इस देश का भविष्य बदल दूँगा।" इन युवकों में से क्यों न आप भी एक हों?

ईश्वर ने हमें छठा ज्ञानेंद्रिय दिया है। हमें पाँच इंद्रियों वाले जानवरों की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए। शिक्षित, ज्ञानी और सोचने की शक्ति रखने वाले लोगों को योग्य रूप से विश्लेषण कर सही निर्णय लेना चाहिए। पहले बताए गए पाँच गुणों का अगर हम जीवन में पालन करें, तो हम अपने देश को बेहतर बना सकते हैं। अपने पास हमारा मार्गदर्शन करने के लिए, अत्युत्तम हिन्दू-धर्म के होते हुए भी आज हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत नीचे हैं। चाहे जितने स्कूल और कालेज आरंभ करें, चाहे जितने उद्योग निर्माण कर लोगों को नौकरियों का प्रबंध करें, बीमारियों के निर्मूलन के लिए चाहे जितने अस्पताल आरंभ करें, पर जब तक ये पाँच गुण हममें नहीं हैं, तब तक न हमारा या हमारे देश का उद्धार होगा। चाहे जितनी समझदारी से सरकार अलग-अलग परियोजनाएँ बनाएँ, उन्हें कार्यान्वित करें और निश्चित करें कि उनसे लोगों को लाभ मिले, पर ईश्वर हर एक व्यक्ति को उसके पाप कर्मों के आधार पर कई अन्य विधानों से दण्ड देते हैं।

वे कभी किसी, पापियों के देश को संपन्न होने नहीं देंगे। भूकंप, आंधी, तूफान और अन्य प्राकृतिक प्रकोप ईश्वर के पापियों को सज़ा देने के विधान हैं। एड्स और सार्स जैसी बीमारियां क्यों विश्व भर में फैल रही हैं? पापियों को दण्ड देने के लिए

ईश्वर ने इन्हें बनाया हैं। चाहे आप कितने ही बुद्धिमान, समर्थ और चालाक़ क्यों न हों, अगर इन पाँच गुणों का पालन आप नहीं करेंगे, तो आपकी सारी क्षमताएँ ईश्वर की इच्छा के आगे कुछ भी नहीं हैं।

यदि हम ईश्वर को, उनकी इच्छा- अनिच्छाओं को सही प्रकार से समझें और अपना जीवन उनके निर्देशन के अनुसार बिताएँ, तो हम संपन्न पश्चिमी देशों के स्तर तक उठ सकते हैं। उनसे उधार लेने के वजाय हम उन्हें उधार देने लायक बन सकते हैं। आप, आपके बच्चे, और उनके बच्चे ऊँचा उठ सकते हैं; समाज ऊँचा उठ सकता है और हमारा देश भी अधिक ऊँचाई तक पहुँच सकता है।

कम्प्यूटर विश्व का बेताज बादशाह, संसार का अत्यधिक अमीर व्यक्ति माइक्रोसाफ्ट कार्पोरेशन का चेयरमैन बिलगेट्स, एक अमरीकी व्यक्ति, विश्व के अलग-अलग देशों में से सबसे बुद्धिमान को चुनकर, उन्हें नौकरी देता है। उसने कहा है, कि उसकी कम्पनी में काम करने वाले सभी लोगों में से, भारत के लोग अत्यंत बुद्धिमान हैं। यही वह जगह है, जहां महान ऋषियों ने, दार्शनिकों ने और योगियों ने जन्म लिया था। हमारा महान हिन्दू धर्म यह उपदेश देता है कि सही मार्ग पर चलने का अर्थ है शाकाहारी बनकर जीना। भारत के लोगों की उत्तम साधनाओं के पीछे यही कारण है। ईश्वर की कार्यविधियों को ठीक से समझकर, अगर हम सही ढंग से जीवन बिताते हैं, तो हम अवश्य उस स्तर तक पहुँच सकते हैं, जहाँ से हम पूरे विश्व का नेतृत्व कर सकते हैं।

प्रेम विवाह

युवजनों! आप इस देश का भविष्य हो। इस देश को उन्नति की ओर ले जाने का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व आप पर है। जिस प्रकार आपके परिवार की खुशहाली के लिए आपके कुछ कर्तव्य हैं, उसी प्रकार आपके देश के कल्याण के लिए भी आपके कुछ कर्तव्य हैं। हमें अपने आपको जॉन केनेडी के ये शब्द याद दिलाने हैं– ***''यह मत पूछिए कि आपके देश ने आपके लिए क्या किया है; अपने आपसे यह पूछिए कि आपने देश के लिए क्या किया है।''***

कालेज की पढ़ाई के समय आप प्रेम संबंधों में उलझ जाते हैं। तब अत्यावश्यक पढ़ाई से आपका ध्यान हट जाता है। प्रेम संसार की एक अत्यंत प्रबल शक्ति है। वह अन्य जिम्मेदारियों से आपको विचलित कर देता है। आपकी पढ़ाई पूरी होने के बाद, आप प्रेम की ओर आगे बढ़ते हैं, तो यह आपके लिए और आपके घरवालों के लिए अधिक बेहतर होगा। अपरिपक्व मन में जागने वाला प्यार उचित नहीं होता। पढ़ाई के बाद भी अपने माता–पिता की अनुमति और उपस्थिति के बिना अपनी प्रेमिका से विवाह मत कीजिए।

आपको आपके माता–पिता की सम्मति, अनुमति और अनुमोदन की शायद आवश्यकता नहीं है। आप की नौकरी है, अच्छा वेतन है, और अब आप खुद के पैरों पर खड़े हैं। शायद अब आपको अपने माता–पिता की अनुमति और सहारे की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन आपके माता–पिता ने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा आपका लालन–पालन करने में, आपको शिक्षा दिलाने में व्यय किया है। अब जब वे अपना आधा जीवन बिता चुके हैं, अब उन्हें आपके प्यार और

सहारे की आवश्यकता है। पर कृपया यह मत भूलिए कि पूरे विश्व में आपकी हर उन्नति को सबसे पहले देखने वाले, उससे खुश होने वाले और उसकी क़दर करने वाले आपके माता-पिता हैं। अगर आप उनकी उपेक्षा कर उनकी अनुमति के बिना शादी करते हैं, तो सोचिए कि यह उन्हें कितना दुःख देगा और वे कितने आँसू बहाएंगे। किसी को दुःख देना पाप है; माता-पिता को दुःख देना बहुत बड़ा पाप है।

माँ से पवित्र मंदिर नहीं है,
पिता के शब्दों से पवित्र मंत्र नहीं है।

अव्वैय्यार- महान तमिल कवयित्री

माता-पिता और गुरु ईश्वर समान हैं।

तमिल कहावत

भारत ने सारे विश्व को यह शिक्षा दी है। श्री राम ने भी अपने जीवन में इसी मार्ग को अपनाया। विश्व में माँ से बच्चों के लिए सहे जाने वाले दर्द, पीड़ा और किए जाने वाले त्याग, अमूल्य हैं। उसे चुकाना नामुमकिन है। आप इस ऋण को जीवन भर नहीं चुका पाएंगे।

महर्षि और ऋषियों ने भी माँ को अत्यंत सम्मान दिया है। दक्षिण भारत के केरल राज्य का छोटा गाँव, कालड़ी शंकराचार्य का जन्म स्थान है। जब वहां उनकी माता का देहांत हुआ, तो वे उत्तर भारत के दौरे पर थे। अपने आध्यात्मिक बल से, माता की मृत्यु से पहले ही इस बात की जानकारी पाकर, वे बड़ी और लंबी यात्रा तय करके माँ का अंतिम संस्कार करने वहाँ लौट आए। ऋषि लोग जो अपने परिवार से नाता तोड़ देते हैं, उन्हें भी अपनी माता का अंतिम संस्कार

करना बहुत आवश्यक होता है। अपने चमड़े से बने जूते का चढ़ावा देकर भी आप अपनी माँ का ऋण चुका नहीं सकते।

मातृत्व परम पावन होता है। किसी महान संत या ऋषि के पिता, बेटे के पैर छूकर, आशीर्वाद ले सकते हैं। यह सम्मत है। पर एक माँ, कभी अपने बेटे का पाद-स्पर्श कर उससे आशीर्वाद नहीं ले सकतीं, चाहे वह बेटा ईश्वर समान ही पवित्र क्यों न हो। चाहे बेटा कितने ही ऊंचे स्थान पर क्यों न पहुँचे, पर उसकी माँ का दर्जा हमेशा उससे भी ऊंचा होता है। इसलिए उसे कभी भी अपने बेटे के पैर नहीं छूने चाहिए।

यह एक युवक की कहानी है, जिसने अपनी प्रेमिका के कहने पर अपनी माँ की हत्या कर उसका दिल एक थाली में लेकर, प्रेमिका को चढ़ावा देने जा रहा था। रास्ते में एक पत्थर से ठोकर खाकर वह गिरने ही वाला था, तो माँ के हृदय ने उससे पूछा "बेटा, सावधान रहो, कहीं तुम्हें चोट तो नहीं लगी ? " ऐसी है माँ की महानता। अगर आप अपनी माँ की भावनाओं को ठेस पहुँचाएंगे, तो कभी सुखी जीवन नहीं बिता पाएंगे।

मैंने ऐसे कई पति-पत्नियों को देखा है, जिन्होंने अपने माता-पिता का विरोध करके शादी की और बाद में जीवन में बहुत दुःख झेला। अगर आप किसी से प्रेम कर रहे हैं और शादी करना चाहते हैं, तो जल्दी मत कीजिए। धीरज रखिए थोड़े दिन बाद आपके माँ-बाप आपको शादी की अनुमति देंगे। "माता-पिता खुद दुःख सहें, या उनके बच्चे दुःख सहे"- अगर माँ-बाप के सामने इनमें से एक को चुनने का विकल्प रखा जाए, तो 90% माँ-बाप, स्वेच्छा से, खुशी से बच्चों के बदले खुद दुःख सहने को तैय्यार होंगे। अगर आपको पक्का विश्वास है, कि किसी भी हालत में आपके माता-पिता प्रेम-विवाह के लिए राज़ी नहीं

होंगे, तो अपने आपको प्रेमजाल में फँसने से रोकिए और शादी के बाद अपनी पत्नी से प्रेम कीजिए।

इस वर्तमान आधुनिक समाज में, हम ऐसे कई स्वार्थी लोगों को देखते हैं, जो बुढ़ापे में अपने माँ-बाप की देखभाल करने का कष्ट नहीं उठाते। यह बड़ा पाप है। पश्चिमी देशों में, सरकार बूढ़े लोगों की देखभाल करती है, यातायात और स्वास्थ्य संबंधी खर्च में रियायत देती है। वे जहाँ भी जाते हैं, वहाँ उन्हें सारी सुविधाएँ दी जाती हैं। इसलिए इस मामले में वहाँ कोई पाप नहीं घटता। लेकिन भारत में स्थिति बिल्कुल ही अलग है। हम पश्चिमी देशों से अच्छी बातें नहीं सीख रहे हैं। हम उनसे केवल गलत बातें, जैसे माडलिंग, फ़ैशन-परेड, सौंदर्य स्पर्धा, कैटवॉक, अंग प्रदर्शन, विलासप्रियता आदि सीख रहे हैं। क्या हम उनसे कार्यमग्नता, समयनिष्ठा, बिना किसी की देखरेख के, स्वेच्छा से काम करना, वचनबद्धता, व्यापार और ग्राहक की तुष्टि में ईमानदारी का पालन, स्वेच्छा से किसी को दुःख न देकर, उनका आदर करना और इन सबसे अधिक, मानवीयता आदि बातें सीखते हैं ? हम केवल क्षणिक सुख देने वाली बातें सीखते हैं और ईश्वर से पुण्य दिलाने वाली बातों की उपेक्षा कर देते हैं।

पश्चिमी देशों में घटित कुछ घटनाओं के बारे में आपको बताना चाहूँगा। एक बार मेरे भाई अमरीका गए थे। उसी यात्रा के दौरान वे वहाँ के विश्व प्रसिद्ध डिज़्नी वर्ल्ड गए। वहाँ के अल्पाहार-गृह के स्वयं-सेवा काउंटर में तीन काफ़ी और एक चाय खरीदी। पर उस सेल्स गर्ल ने गलती से चार काफ़ी दे दी। उन्हें चखने के बाद ही उन दोस्तों को पता चला कि चारों काफ़ी ही हैं। मेरे भाई ने कोई शिकायत नहीं की और वे चुप रह गये। उसी दिन मेरे भाई को उसी अल्पाहार गृह दुबारा जाना पड़ा और उन्होंने उस लड़की को अकस्मात् उस गलती के बारे में बता दिया। उस लड़की ने फौरन माफ़ी मांगी और मेरे भाई को

एक चाय मुफ्त में पेश की। उसने अपने सही होने का दावा नहीं किया, अपनी गलती मानी और अपने हाथ से पैसे देने पड़ने के बावजूद उसने वह अतिरिक्त चाय उन्हें दी। यह सोचकर कि ग्राहक झूठ नहीं बोलते हैं और हमेशा सही होते हैं, उसने अपनी गलती फ़ौरन मान ली। अमरीका के लोगों में ईमानदारी का स्तर ऊँचा है। उस लड़की का यह व्यवहार हमारे लिए अनुकरणीय है, क्योंकि ऐसा व्यवहार भारत के लोगों में शायद ही देखने को मिलता है।

मेरे दूसरे भाई, अपने परिवार के साथ लंदन गये थे। उनकी पत्नी एक बार शहरी बस में जा रही थीं। वे बस के दरवाजे के पास बैठी थीं। एक स्टाप पर, हाथ पर पट्टी बांधी हुई एक अंग्रेज औरत बस में चढ़ी। मेरे भाई की पत्नी ने उठकर उसे जगह दी। साधारणतया, हमारे देश में, ऐसे संदर्भों में, वह व्यक्ति धन्यवाद देता है जिसे मदद मिली हो। लेकिन वहां उस औरत के अलावा, अड़ोस-पड़ोस में बैठे दूसरे लोगों ने भी मेरे भाई की पत्नी को धन्यवाद दिया।

जब मैं, यूरोप प्रवास पर गया था तो हमारी टोली में बैंगलूर के एक निवृत्त सरकारी अधिकारी थे, जो अपनी पत्नी के साथ आए हुए थे। उनका बेटा अमरीका में कंप्यूटर-इंजीनियर था और उसके बुलाने पर वे उसके साथ कुछ महीने रह कर आए थे। उन्होंने वहां घटित एक घटना के बारे में मुझे बताया।

एक बार वे पास ही के शापिंग काम्प्लेक्स में कुछ खरीददारी करने गए थे। पर लौटते समय उनके दोनों हाथों में सामान था। तभी एक अमरीकी औरत ने, उनके मना करने के बावजूद उनकी मदद करने की इच्छा प्रकट की। उनके साथ उनके घर तक जाकर, उसने उनका सामान पहुँचाया। जब उन्होंने उस औरत से पूछा कि वह एक अपरिचित की इतनी मदद क्यों कर रही है, तो उसने कहा, "आप एक ज्येष्ठ नागरिक हैं, और आप हमारे देश के मेहमान बनकर आए हैं। आपका

घर भी मेरे घर के रास्ते में ही है। अगर मैं आपकी इतनी छोटी सी भी मदद नहीं करती तो जीवन का कोई अर्थ नहीं है।" यकीन करने में थोड़ा मुश्किल लगने पर भी यह सच्ची घटना है। क्या हमारे देश में ऐसी घटनाओं की हम कल्पना भी कर सकते हैं?

अमरीकी लोगों की मानवीयता का परिचय देनेवाली, और किस प्रकार वहाँ के लोगों के विचारों ने वहाँ की सरकार को एक महान युद्ध रोकने पर मजबूर किया, यह दर्शाने वाली एक घटना इस प्रकार है। लगभग तीस साल पहले, ज़ब अमरीका, वियतनाम के साथ युद्ध में जुटा था, तब हज़ारों अमेरिकी सैनिकों को, युद्ध करने वहाँ भेजा गया था। वहाँ की दैनिक घटनाओं का विवरण देने के लिए सभी देशों से सैंकड़ों संवाददाता और फ़ोटोग्राफ़र वहाँ मौजूद थे।

एक अमरीकी फ़ोटोग्राफ़र ने अपनी पत्रिका के लिए एक अनोखी तस्वीर भेजी। वह तस्वीर उस पत्रिका में, बाद में अन्य पत्रिकाओं में छापी गई और टेलीविजन पर भी दिखाई गई। उ़स तस्वीर का, लोगों पर जबर्दस्त और गहरा प्रभाव पड़ा। उसने लोगों का मन:परिवर्तन कर दिया। जो लोग युद्ध के मामले में सरकार का समर्थन कर रहे थे, वे अब उस तस्वीर के कारण अपना मत बदलने लगे और युद्ध का विरोध करने लगे। अमरीका में, लोगों के अभिमत के विरुद्ध सरकार न काम करती है, न करेगी। वह लोगों के विचारों का बहुत आदर करती है। हफ़्ते में एक बार और कभी-कभी दो तीन दिनों में एक बार वह प्रमुख विषय या समस्याओं के बारे में लोगों की औपचारिक ढंग से राय लेती है। तस्वीर देखने के बाद वियतनाम युद्ध के मामले में लोगों का अभिमत बहुत कुछ बदल गया। सार्वजनिक अभिमत से यह बात सामने आई कि जो लोग पहले युद्ध का समर्थन कर रहे थे, धीरे-धीरे उन्होंने अपनी राय बदली और युद्ध का विरोध किया, और सरकार से कहा कि वह युद्ध रोक दे। इसी विरोध ने युद्ध समाप्त करने के लिए

सरकार को मजबूर किया।

एक अकेली तस्वीर के कारण युद्ध समाप्त हो गया। लेकिन, वस्तुतः क्या था उस तस्वीर में? उस तस्वीर में, संपूर्ण रूप से नग्नीकृत एक दस साल की वियतनामी लड़की, 'नापाम' के गिरने से जल रही झोपड़ियों से निकल कर भाग रही थी, चारों ओर आग की ज्वालाएँ थीं, उसके चेहरे पर दहशत और विषाद था, गालों पर से आँसू झर रहे थे। इस एकमात्र तस्वीर ने इतना कुछ कह दिया था, जो हज़ारों शब्द नहीं कह पाते।

इस तस्वीर ने लोगों के अंतःकरण को व्याकुल कर दिया। लोगों ने अपने आपसे पूछा कि ऐसी बेगुनाह छोटी लड़कियों को आतंकित करके वे क्या प्राप्त करने वाले हैं, और अगर उन्होंने कुछ प्राप्त कर भी लिया, तो क्या वह प्राप्ति अत्यावश्यक है?

लोगों के दिलों में मानवीयता भरी हुई थी, और इसलिए उन्होंने इस बात की परवाह नहीं की कि पीड़ित लड़की अमरीकी थी या वियतनामी। उस तस्वीर की लड़की अब शादीशुदा है, अपने परिवार के साथ अमरीका में बसी हुई है, और उसकी तस्वीर 'टाइम' पत्रिका के हाल ही के अंक में छपी थी। कृपया अमरीकी सरकार और अमरीकी लोगों के कार्यों में परस्पर संबंध जोड़ के भ्रमित मत होइए। अमरीकी सरकार के प्रमुख निर्णय, अमरीकी राष्ट्रपति अपने कुछ मंत्रियों के साथ मिलकर लेते हैं, जो कभी गलत भी हो सकते हैं। ये निर्णय वियतनाम युद्ध और हाल ही के इराक़ युद्ध जैसे अंतर्राष्ट्रीय मामलों में मानवतावाद को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं।

अमेरिका के किसी शहर में आप किसी का पता ढूँढ़ रहे हैं, तो लोग आपके

पास आकर पूछते हैं, "क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?" अगर आप किसी उज्ज्वल, रमणीय सुबह, हवाखोरी कर रहे हैं, तो अपरिचित लोग भी अपने भले मानस के कारण आपको 'गुड मार्निंग' या 'हाय' बोलते हैं। खुले दिल के ये लोग जीवन और लोगों से प्यार करते हैं। गरीब और पीड़ितों की मदद करने से उन्हें खुशी मिलती है। अमेरिका इसलिए एक समृद्ध और संपन्न राष्ट्र है, क्योंकि वहाँ के लोग सद्गुणी हैं और दूसरों की मदद करने के लिए आगे आते हैं। ईश्वर भी उन्हें अच्छा जीवन प्रदान कर रहे हैं, क्योंकि उन्होंने बहुत से पुण्य कमाए हैं।

मंदिर

अधिकतर मंदिरों में, ईश्वर का सान्निध्य नहीं होता है। क्या आपको ताज्जुब हो रहा है? *"ईश्वर अच्छे लोगों के दिलों में रहते हैं-"* यह एक जनप्रिय कथन है। इसका मतलब है, ईश्वर बुरे लोगों के दिल में या बुरे कर्म घटने वाले स्थानों में नहीं रहते। ईश्वर को बुरी चीज़ पसंद नहीं है। इसलिए वे ऐसी जगह नहीं रहते जहाँ ग़लत काम नियमित रूप से या प्रतिदिन होते रहते हैं।

मंदिर की ज़मीन और संपत्तियों को हड़पना, पैसों की वसूली में धोखा करना, धर्मार्थ निधि से पैसे निकाल लेना, पूजा सामग्रियों में मिलावट करना आदि धोखाधड़ी और बेईमानी के काम आजकल मंदिरों में व्यापक रूप से हो रहे हैं। मंदिरों में पूजाविधियों को संपन्न करनें वाले पुजारी भी हृदय से शुद्ध नहीं हैं। जब मंदिरों में इतने सारे पाप–कार्य हो रहे हैं, तो हम वहाँ ईश्वर की उपस्थिति की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? वे वहाँ नहीं होंगे।

मंदिर तक जाने और मंदिर से लौटने के लिए लगने वाले समय में हम कितने क्षण ईश्वर के बारे में दिल से सोचते हैं और प्रार्थना करते हैं? जब मूर्ति की कर्पूर–आरती उतारी जाती है, तब कुछ क्षणों के लिए हम ईश्वर के बारे में सोचते हैं। तब भी, उस समय भी, हम ईश्वर के साथ इस प्रकार सौदा करते हैं। "हे! भगवान, मेरी अमुक मांग पूरी कर दो, मैं आपका अभिषेक कराऊँगा; मंदिर की धर्मार्थनिधि में इतने पैसे दान करूँगा, आपके नाम से अमुक त्योहार मनाऊँगा।" हम ईश्वर को दलालं समझ कर उनके साथ सौदा करते हैं। ऐसे कितने लोग हैं, जो अच्छे विचार प्रदान करने की या सही रास्ता दिखाने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं?

अगर ईश्वर बार-बार मंदिर जाने वालों की प्रार्थनाओं को मानते हैं, तो ईश्वर के सम्मुख पवित्र मंत्रों का उच्चारण कर, अपना ज़्यादातर समय उनके सम्मुख बिताने वाले मंदिर के पुजारी को अधिक उपकृत होना चाहिए। ईश्वर से उनको बेहतरीन पुरस्कार मिलने चाहिए। उडुपि में कृष्ण जी के भक्त कनकदास को उनकी हीन जाति के कारण मंदिर में प्रवेश करने से रोका गया था। पर कृष्ण जी ने, उसे दर्शन देने के लिए स्वयम् अपनी मूर्ति को उस भक्त की तरफ़ घुमाकर उसके प्रति अपना स्नेह व्यक्त किया था। कृपया यह घटना याद कीजिए। प्रार्थना करने से मिलने वाले लाभ से सौ गुना अधिक लाभ, हमें अच्छे कर्म करने से मिलता है।

मैं बुद्धिमान, सही ढंग से सोचने वाले तथा इस किताब में अभिव्यक्त विचारों से सहमत लोगों से एक विनती करता हूँ कि वे कुछ दिनों के लिए मंदिर जाना बंद कर दें या जाने की बारी कम कर दें। यह सच है, कि जो ईश्वर मंदिर में हैं, वे ही आपके घर में भी हैं। उस ईश्वर की पूजा आप घर ही में करें। अशिक्षित और साधारण मनुष्य को बोध कराने के लिए यह ज़रूरी है। अगर हम अच्छे हैं, सदाचारी हैं, अपने दैनिक ज़ीवन में अच्छे गुणों का 'ईमानदारी' से पालन करते हैं, और साथ ही मंदिर भी जाते हैं, तो अशिक्षित और साधारण लोगों पर इसका क्या असर होगा?

वे मानने लगते हैं कि हमारे मंदिर जाने के कारण ही, हमें जीवन में सफलता और पुरस्कार मिले हैं। वे यह कभी नहीं समझ पाएंगे कि ईश्वर ने हमें यह पुरस्कार हमारे अच्छे विचार, अच्छे कर्म और पीड़ित लोगों की सच्ची सेवा के फलस्वरूप दिए हैं।

अगर मंदिर नहीं जाने पर भी हम सम्पन्न हैं, तो गरीब लोग यह सोचने पर

विवश हो जाते हैं, कि मंदिर न जाने के बावजूद यह व्यक्ति संपन्न कैसे हो सकता है। तब वे समझेंगे कि ईश्वर ने हमें यह खुशहाल जीवन, हमारे अच्छे विचार और अच्छे कर्मों के कारण दिया है, न कि मंदिरों की यात्राओं के कारण। वे भी कम से कम कुछ संदर्भों में हमारे कर्मों का अनुसरण करने की कोशिश करेंगे।

मैं कई सालों से ऐसा ही कर रहा हूँ। मैं साल में शायद ही दो बार मंदिर गया हूँगा; वह भी दूसरों के खातिर। मैं मंदिरों को पैसों का दान नहीं देता हूँ। अगर कोई मेरे पास किसी पूजा या कुंभाभिषेक के लिए दान मांगने आता है, तो मैं हमेशा उससे कहता हूँ "मैं मंदिर के लिए एक रुपया भी नहीं देने वाला हूँ। अगर कोई जरूरतमंद गरीब विद्यार्थी या गरीब मरीज़ है, तो मुझे बताइए, मैं उसकी मदद करूँगा।"

शुरु-शुरु में मेरी पीठ पीछे मेरे जो संबंधी और अन्य लोग, मेरी आलोचना करते थे, आज वे मुझे धीरे-धीरे समझ चुके हैं और मेरा अनुसरण करने की कोशिश कर रहे हैं। उनमें से कुछ ने अपनी जीवन-विधि बदल ली है और धीरे-धीरे अपने विचार भी बदल कर गरीब और पीड़ितों की मदद करना आरंभ किया है। अभागे भाइयों के प्रति बुद्धिमान और शिक्षित लोगों का एक कर्तव्य होता है। असुविधाओं का सामना कर, उन्हें दूसरों के लिए एक आदर्श उपस्थित करना होता है। समाज के सम्मुख आदर्श खड़ा करने के लिए उनको मंदिर के दर्शन कम करने चाहिए। मंदिर जाने से हमारे सारे दुःख समाप्त हो जाएंगे- इस प्रकार सोचने वाले साधारण लोगों को इस आदर्श से अवगत कराना चाहिए।

अगर हम मंदिर नहीं जाते हैं, तो हमें ईश्वर के क्रोध से डरना नहीं चाहिए। क्या ईश्वर नहीं जानते हैं कि मंदिर न जाने के पीछे हमारा क्या उद्देश्य है?

अशिक्षित, साधारण मनुष्य को सही रास्ता दिखाने के हमारे इस विधि-विधान की वे कदर नहीं करेंगे ? महान संत रामानुजाचार्य ने एक बार कहा था कि अगर उनके नरक में जाने से अन्य सौ लोग स्वर्ग पा सकते हैं, तो वे नरक में जाने के लिए तैय्यार हैं। जब उनके मन में इतना महान उद्देश्य था, तो ईश्वर उन्हें सबसे पहले स्वर्ग में जाने देते। (हमें जान लेना चाहिए कि स्वर्ग और नरक लोगों को शिक्षित और अनुशासित बनाने के लिए मानव कल्पित धारणाएँ हैं)।

पिछले बीस सालों से दिसम्बर के महीने में मैं गरीब वयोवृद्ध लोगों में साड़ियाँ, धोतियाँ और कंबल मुफ्त में बांट रहा हूँ। हम धर्मपुरी और आसपास के गांवों की झोपड़पट्टियों के गरीबों के घर जाते हैं। घर की हालत देखकर, योग्य गरीब वयोवृद्धों को चुनकर उनमें संकेत पत्र बाँटते हैं। एक निर्धारित दिन हम उन्हें अपनी फैक्ट्री में बुलाकर उनमें साड़ियां, धोतियाँ और कंबल वितरित करते हैं।

फैक्ट्री के बाहर मुफ़्त की साड़ी और धोती के लिए लोग खड़े रहते हैं, जिनके पास संकेत-पत्र नहीं होते। अंदर के वितरण के बाद, मैं फैक्ट्री से बाहर आकर लोगों से मिलता हूँ। कुछ सशक्त लोग, बूढ़े और कमजोरों को बाजू में ढकेल खुद आगे खड़े रहते हैं। कुछ बूढ़े लोग जो इनका मुकाबला नहीं कर सकते, भीड़ के आखिरी कोने में खड़े होकर दयनीय दृष्टि से मेरी तरफ़ देखते रहते हैं। मैं अपने लोगों से कहकर, उन निस्सहाय लोगों को पहले साड़ियाँ और धोतियाँ दिलवाता हूँ। आगे खड़े लोगों में कुछ लोग वृद्ध नहीं होते हैं। इस दान-स्वीकार के योग्य नहीं होते हैं। मैं उन लोगों को कपड़े नहीं देता हूँ।

मैं सीमित बुद्धि शक्तिवाला, एक साधारण इंसान हूँ। फिर भी, मैं बूढ़े, योग्य और मुझसे मदद मांगने वाले, पर मेरे पास आने में असमर्थ लोगों को चुनकर उन्हें कपड़े दान करता हूँ। मैं उन अपात्र लोगों की मदद नहीं करता, जो बार-

बार मेरे पास मदद के लिए आते हैं। अगर मेरे जैसा एक साधारण मनुष्य योग्य लोगों को चुनने में इतना जागरूक रहता है; तो असीम बुद्धिशक्ति, ज्ञान और बल के होते ईश्वर मदद के लिए, सही और योग्य लोगों को चुनने में और कितने जागरूक होंगे; सही लोगों को लाभ पहुँचाने में कितने समझदार और निष्पक्ष होंगे।

ईश्वर के सामने हमारी कोई भी चाल नहीं चलती। बार-बार मंदिर जाने वाले और सहायता मांगने वाले लोगों को वे कभी अपना आशीर्वाद नहीं देते। अगर उन लोगों ने अपने अच्छे कर्मों से पुण्य नहीं कमाए हैं, तो ईश्वर उन पर कृपा नहीं करते। तो क्या यह सच नहीं है कि, अच्छे लोगों के मंदिर न जाने पर भी, उनके कुछ न माँगने पर भी, ईश्वर उनकी, सही समय पर सही मात्रा में मदद करते हैं।

पहले हमें ईश्वर और उनकी कार्यविधि को समझना चाहिए। "अगर हम ईश्वर की ओर एक क़दम बढ़ाते हैं, तो ईश्वर हमारी तरफ़ दस कदम बढ़ाएंगे।" अगर उनके सच्चे भक्त संकट में हैं, तो उनका हृदय तड़प उठता है। भक्त के बुलाए बिना ही मदद के लिए आने वालों में से वे पहले व्यक्ति होंगे। चाहे पृथ्वी पर की सारी शक्तियाँ मिलकर उनके सच्चे भक्त को हानि पहुँचाने की कोशिश करें, वे उसका बाल बांका होने नहीं देते।

अहंकार

अहंकार हमारा गुप्त शत्रु है। महाभारत के शकुनि की तरह वह हमारा दोस्त होने का दिखावा करता है; पर हमारी जानकारी के बिना हमें पतन की ओर ले जाता है। हम एक प्रकट शत्रु से भिड़ सकते हैं। लेकिन एक गुप्त, अनजान शत्रु को नियंत्रित करना बहुत मुश्किल है। अहंकार नामक, यह निराकार शत्रु, हमारी प्रगति को रोकता है, या काफ़ी हद तक कुंठित कर देता है। अहंकारिक मनोभाव, दूसरों में अच्छे गुण देखने की, दूसरों की क्षमता का आदर करने की, या उनकी सफलताओं पर उनका अभिनंदन करने की इज़ाज़त नहीं देता। वह ज़्यादातर लोगों को विनाश की ओर ले जाता है। वह हमें दूसरों के साथ-सामंजस्य से रहने से और उनकी अभिरुचियों की कद्र करने से रोकता है। ***"जो दूसरों के सामने झुकते हैं, उनकी हानि कभी नहीं होती।"*** -हम इस कहावत को कभी न भूलें।

मॅकिन्से विश्व की सर्वश्रेष्ठ सलाहकारिता कंपनी है। यह एक अमरीकी संस्था है, जो सलाहकारिता में विशिष्ट है। यह बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना, बड़े-बड़े बांधों का निर्माण, कार-फ़ैक्ट्रियों की स्थापना, अन्य बृहत कम्पनियों का निर्माण आदि में और बड़ी-बड़ी योजनाओं की स्थापना के समय आने वाली समस्याओं का समाधान करने में मदद करती है। यह सरकार को भी उसकी आर्थिक संकट की स्थिति में, अपनी सलाहकारिता सेवाएं उपलब्ध कराती है। यह विश्व भर में मान्यता प्राप्त, एक प्रतिष्ठित कम्पनी है। इस कम्पनी के सभी निदेशक अमरीकी लोग हैं। उन्होंने एक भारतीय को अपना मुख्य प्रबंध- संचालक चुना है। वे हैं, रजत गुप्ता जो भारत के पश्चिम-बंगाल राज्य के हैं। उन्हें तीन साल की अवधि

के लिए लगातार तीन बार प्रबंध-संचालक चुना गया। अगर अमरीकी निदेशक घमंडी और अहंकारी होते, तो क्या वे एक विदेशी को, भारतीय को, अपना प्रबंध संचालक चुनते?

ऐसे सम्मान और आदर के पात्र रजत गुप्ता की सफलता का राज़ क्या है? वे कहते हैं "मेरी सफलता के लिए कारण है 'भगवद्गीता'। वह मेरा मार्गदर्शक है। उसमें दिए गए सिद्धांतों का मैं पालन करता हूँ। अपना काम बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा किए करो" - यही मेरी सफ़लता का मंत्र है।

हमें उन अच्छे सिद्धांतों का पालन करना चाहिए, जिनका उन्होंने अपने जीवन में अनुसरण किया है। तभी हमारा जीवन समृद्ध होगा। अच्छे गुण जहां भी हों, जिस किसी में भी हों, हमें उन्हें सीखने में और उनका अनुसरण करने में, हिचकिचाना नहीं चाहिए। मान लीजिए, हमारे पास चार अच्छे गुण हैं, हम एक व्यक्ति से मिलते हैं, जिसमें और दो अच्छे गुण हैं। हम उससे वे गुण सीखते हैं और उनका अनुष्ठान करते हैं; तो हमारे पास अब छः अच्छे गुण हो जाते हैं, तभी हम एक और अच्छे गुणवांले, व्यक्ति से मिलते हैं- उससे एक गुण लेते हैं तो अपने पास कुल सात अच्छे गुण हो जाते है। इस प्रकार हम दूसरे लोगों से अच्छे गुण ग्रहण करते जाएंगे; हम अच्छे गुणों का आगर बन जाएंगे और जीवन में समृद्धि और अच्छाई की तरफ़ और ऊपर उठेंगे। उल्टे अगर हम दूसरों का आदर करने से, उनसे सीखने से इनकार करेंगे तो मरने तक हमारे उन चार गुणों के साथ अन्य अच्छे गुण नहीं जुड़ पाएंगे और हमारे जीवन में कोई प्रगति भी नहीं होगी। कृपया इस पर ध्यान दें।

असत्य वचन

आजकल झूठ बोलना एक साधारण और सहज बात हो गई है। झूठ हमारे जीवन का अविभाज्य अंग बन गया है। हममें से बहुतेरे लोग किसी न किसी कारणवश झूठ बोलते हैं। हम समझते नहीं कि झूठ बोलना गलत आदत है, जो पाप भी है। झूठ–बोलना एक अनैतिक क्रिया है, पर समाज में सभी लोगों से अपनाया गया व्यवहार होने के कारण इसे सही समझा गया है। इसके साथ कोई कलंक नहीं लगा है और हम इसका समर्थन भी करते हैं। हम मानते हैं कि झूठ बोलना गलत नहीं है, वह एक आवश्यक बुराई है, हमारे जीवन का एक अंग है। उसकी जानकारी न होते हुए हम लगभग प्रतिदिन पाप कर रहे हैं।

यह सच है कि झूठ बोले बिना इस संसार में, खास करके अपने इस भ्रष्ट समाज में हम गुजारा नहीं कर सकते। गौर कीजिए कि आप एक दिन में कितने झूठ बोलते हैं ? प्रतिज्ञा कीजिए कि आप मामूली सी बातों के लिए झूठ नहीं बोलेंगे। जब बिल्कुल जरूरी हो, तभी बोलेंगे। प्रण कीजिए और उसका पालन कीजिए। आपसे बोले जाने वाले झूठ की संख्या दिन–ब–दिन कम करते जाइए।

धीरे–धीरे, झूठ की संख्या को दिन में एक; फिर दो दिन में एक, और फिर चार दिन में एक तक घटाइएं। अगर आप अपने झूठ की संख्या को कम करने का दृढ़ निश्चय करेंगे, और अपने दैनिक जीवन में झूठ कम बोलने के संकल्प पर स्थिर रहेंगे, तो यह आपके मन को परिशुद्ध करेगा और आपके जीवन को बड़े पैमाने पर बेहतरी के लिए बदलेगा।

विकसित देशों में, बहुतेरे लोग, झूठ बोलने का पाप बहुत कम करते हैं। विकसित देशों में से एक, जापान, संपन्न और समृद्ध देश है। सच्चाई के प्रति वहाँ के लोगों की प्रतिबद्धता को दर्शाने वाली जापान में घटित एक घटना इस प्रकार है। मेरा एक दोस्त है, जो पुराने मुद्रण-यंत्रों को विदेशों से खरीदकर भारत में बेचता है, वह मशीनों को अधिकतर जापान से आयात करता है। उसकी जापान में, पुराने-यंत्र बेचने वाली संस्थाओं से अच्छी जान पहचान है, और उसका कारोबार अच्छा चल रहा है। इसी कारण उसका जापान आना-जाना भी रहता है।

वह एक ऐसे जापानी दलाल से मशीनें खरीदता है जो अच्छी और चलने वाली मशीनों को बेचने में विशेषज्ञ हैं। एक बार वह मेरे भारतीय दोस्त को जापान की मुद्रण-यंत्र की फैक्ट्री ले गया और उसने वह मशीन दिखाई जो, चालू स्थिति में थी और बेचने के लिए रखी गई थी। उस दलाल ने कहा, ''मैंने इस फैक्ट्री के मालिक से कहा कि वह इस मशीन की खराबियों को खरीदने वाले के सामने न बताए, लेकिन मालिक ने कहा कि मैं यंत्रों के बारे में झूठ नहीं बोल सकता और अगर खरीदने वाला इस मशीन की खराबियों के बारे में पूछेगा तो मैं उससे कुछ नहीं छुपा पाऊँगा और सब कुछ सच बता दूँगा।'' देखिए, उस व्यक्ति की ईमानदारी।

लाखों रुपयों का फ़ायदा पहुँचाने वाले मशीन बेचने के लिए भी जापानी लोग झूठ बोलकर खरीदने वालों को धोखा देने के लिए तैयार नहीं हैं। आप उनकी तुलना हमारे लोगों से कीजिए जो नगण्य वस्तुओं के लिए झूठ बोलने से हिचकिचाते नहीं। प्रायः इससे हम समझ सकते हैं कि ईश्वर क्यों जापानी लोगों को समृद्धि और भारतीयों को भूख, बीमारी और गरीबी देते हैं।

हेमलता मेमोरियल ट्रस्ट

चुपचाप से, बिना कोई प्रचार के, बिना किसी वैयक्तिक गौरव या अच्छा नाम कमाने की कामना से गरीबों की सेवा करना, इस ट्रस्ट का उद्देश्य है। हमारा एक सिद्धांत है कि हम न किसी पत्रिका या समाचार पत्रिका को इंटरव्यू देते हैं, न ही किसी को अपने ट्रस्ट की सेवाओं का विवरण। क्या इस सिद्धांत को तोड़कर, उनके बारे में, मेरा इस किताब में लिखना, सही है? बहुत विचार-विमर्श के बाद, मैंने निश्चय किया कि मैं, उन सेवाओं का विवरण इस किताब में दूँगा।

मुझे लगता है कि मैं इन सेवाओं के बारे में, प्रचार पाने या व्यक्तिगत गौरव पाने के लिए नहीं लिख रहा हूँ। अगर पाठक लोग इन क्रिया-कलापों के बारे में जानेंगे, तो उनके लिए यह सही रास्ते पर चलने के लिए और बेहतर जीवन जीने के लिए मददगार साबित होगा, और उससे अनगिनत गरीब और पीड़ितों का फायदा होगा। इसके अलावा पढ़ने वाले अगर यह जान जाते हैं, कि मैं केवल उपदेश नहीं देता, बल्कि उसका पालन भी करता हूँ, तो वे मेरी नसीहत और इस किताब की विषय-वस्तु पर विश्वास करेंगे और यह विश्वास मेरे शब्दों को दुगनी ताकत देगा। यह उन्हें सोचने और सुधरने के लिए प्रेरित करेगा। इस किताब में अपने और हमारे ट्रस्ट की सेवाओं के बारे में विस्तृत रूप से लिखने का यही कारण है।

हेमलता मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना मेरी बेटी हेमलता के नाम पर हुई है, जिसका जन्म 1972 में हुआ था। वह एक उत्तम गुणों वाली, सादगी पसंद, विनीत जीवन में विश्वास रखने वाली दैवीगुणयुक्त बच्ची थी। वह गरीबों की मदद करने की सहज इच्छा से ही बड़ी हुई, और इस लोभी भ्रष्ट संसार से कई धोखे खाकर उसने 1995 में अपनी ज़िंदगी समाप्त कर दी। उसी की याद में

'हेमलता मेमोरियल ट्रस्ट' की स्थापना हुई जो शुद्ध रूप से एक सेवा संस्था है।

मेरी बेटी की आत्मा अत्यंत प्रबुद्ध थी। निम्नलिखित तथ्य बताते हैं कि उसने मेरे विचारों को और मेरे जीवन-पथ को कितना प्रभावित किया।

उसकी मृत्यु के कुछ दिन बाद मैंने नीचे दिए गए संकल्प और मार्गदर्शी अंशों के साथ जीवन बिताने का निर्णय कर लिया। (वास्तव में उसने मुझे प्रेरित किया)।

1. मेरी आमदनी का 50 प्रतिशत भाग गरीब और पीड़ित लोगों का कष्ट दूर करने के लिए अलग रखना।

2. किसी भी सार्वजनिक पद को अस्वीकार करना (मैंने अपने सारे पदों से इस्तीफा दे दिया है)

3. किसी भी समारोह में, मंच पर नहीं विराजना।

4. किसी भी प्रकार का प्रमाण पत्र, प्रशंसा, बधाई या पुरस्कार को अस्वीकार करना।

5. जहाँ तक हो सके, सार्वजनिक समारोह या उत्सवों में भाग नहीं लेना।

6. किसी भी समाचार पत्रिका को इंटरव्यू नहीं देना और अपनी या ट्रस्ट की सेवाओं का प्रचार नहीं करना।

कई प्रलोभनों के बावजूद मैं इन उपर्युक्त संकल्पों का पालन दृढ़ता से कर रहा हूँ। मैंने लायन क्लब, रोटरी क्लब और अन्य व्यापारी संस्थाओं से दिए गए सम्मानों का भी निराकरण किया है। केन्द्र वित्तमंत्री के आदेश पर, सेलम आय-कर कमिश्नर द्वारा चुना गया, सेलम, धर्मपुरी और नामक्कल जिलों के, "अत्युत्तम कर-भुगतानकर्ता" के पुरस्कार को भी मैंने अस्वीकार किया, जिसे भारत सरकार के वित्तमंत्री मुझे प्रदान करने वाले थे।

मैं केवल अपनी देवतास्वरूप बेटी हेमलता की सहायता से इन सिद्धांतों का पालन कर पा रहा हूँ और उसी की सतत् सहायता से, भविष्य में भी, अपनी आखिरी साँस तक दृढ़ता से इनका पालन कर पाऊँगा।

यह ट्रस्ट किसी दूसरे का दान स्वीकार नहीं करता। यह मंदिरों को धन या अन्य प्रकार की सेवा के रूप में चंदा नहीं देता। यह अपना धन केवल गरीब, पीड़ित और दयनीय जीवन बिताने वाले लोगों के लिए खर्च करता है।

मेरे सारे प्रयासों में मेरी बेटी हेमलता की श्रेष्ठ आत्मा ने मेरा मार्गदर्शन किया है। मैं उसके हाथों में एक साधन मात्र हूँ। मेरी सेवाओं का सारा श्रेय उसी को जाना चाहिए। और उन सेवाओं को कार्यगत करने में जो भूल-चूक हुई हैं, उनके लिए मुझे जिम्मेंदार ठहराना चाहिए। मेरे साथ मेरे कुछ ईमानदार, सच्चे और मेहनती सहयोगी भी हैं। यह सत्य है कि उनकी सहायता के बिना मैं वह सब नहीं कर पाता, जो आज तक मैंने किया है। मेरे सेवाकार्यों को उत्तम रीति से निभाने में उन्होंने मेरी मदद की है और मैं उनका शुक्रिया अदा करने के लिए बद्ध हूँ।

सन् 2003 में की गई सेवाएँ

'द हेमलता मेमोरियल ट्रस्ट' ने इन सेवा-योजनाओं को संपन्न किया है।

1. आर्थिक रूप से पिछड़े, अधिक अंक प्राप्त किए, धर्मपुरी ज़िले के 200 कालेज छात्रों को विद्यार्थी वेतन के रूप में लगभग 9.5 लाख रुपये दिए गए हैं। प्रत्येक विद्यार्थी को 5000 रुपये के औसत में ये पैसे दिए गए हैं। पिछले 7 सालों से यह विद्यार्थी वेतन दिया जा रहा है। आवेदक की सही आर्थिक स्थिति का पता लगाने के लिए पहले उसके घर का मुआयना करते हैं, और उससे व्यक्तिगत मुलाकात के बाद, योग्य विद्यार्थी को चुनकर उसे विद्यार्थी वेतन की राशि दी जाती है।

2. धर्मपुरी शहर के सरकारी अस्पताल में और शहर से तीस कि. मी. की सीमा के अंतर्गत आने वाले अन्य सरकारी अस्पतालों में लगभग 3500 नवजात शिशुओं की माताओं को मुफ्त में 'बेबी किट' दिए गए हैं। हर किट में बच्चे के लिए छोटा बिस्तर, साबुन, तौलिया, झबला, विटामिन की बोतल और मां के लिए आइरन, कैल्शियम की गोलियाँ और हारलिक्स जैसे स्वास्थ्य पेय होते हैं।

3. ग्रामीण सरकारी पाठशालाओं की छठी, सातवीं और आठवीं कक्षाओं के 4200 पितृहीन बच्चों में प्रत्येक को, समवस्त्र, कापियों का सेट, ज्यामिति बक्सा आदि, 200 रुपये वाले सामान दिए गए हैं।

4. धर्मपुरी के निजी अस्पतालों में जिन गरीबों ने आपरेशन करवाए हैं, उन्हें भी आर्थिक सहायता दी गई है। जिन लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा की आवश्यकता थी, उन्हें बैंगलूर का बेहतर और बड़ा, सैंट जॉन मेडिकल कालेज अस्पताल भेजा गया है। उनमें से भी प्रत्येक को अधिकतम 5000 रुपयों तक की आर्थिक सहायता दी गई है।

5. विधवाओं और बूढ़े लोगों को नक़द सहायता दी गई है।
6. इस किताब की तमिल भाषा की 3,75,000 प्रतियाँ, तमिल साप्ताहिकी 'आनंद विगटन' के साथ पूरे तमिलनाडु में मुफ्त में वितरित की गयी हैं, इस किताब की तेलुगु भाषा की 3,00,000 प्रतियाँ, तेलुगु साप्ताहिकी 'स्वाति' के साथ पूरे आंध्र प्रदेश में वितरित की गई हैं। इसके लिए 'आनंद विगटन' पत्रिका को 16 लाख और 'स्वाति' पत्रिका को 13 लाख रुपए दिए गए हैं। सन् 2004 में इस किताब का अंग्रेज़ी अनुवाद, इंडियन एक्सप्रेस के साथ 5.22 लाख वाचकों तक मुफ्त में पहुँचाया गया, जिसके लिए इंडियन एक्सप्रेस को 34 लाख रुपए दिए गए हैं।
7. हर माह, कोयंबटूर के 'शंकर आई हास्पिटल' के सहयोग से धर्मपुरी में नेत्र शिविर का आयोजन किया गया है।
8. इन सबसे ज्यादा हमारा मुख्य उद्देश्य है, सही रास्ते पर चलने के लिए लोगों का मार्गदर्शन करना, उनके विचार करने का तरीका बदलना, उनके चरित्र को सही ढ़ांचे में ढ़ालना। मैं लघु उद्योग के अंतर्गत, दियासलाई का उद्योग चला रहा हूँ और मैंने लगभग 450 पूर्णकालिक कर्मचारियों को, 300 अंशकालिक कर्मचारियों को नौकरी दी है। मेरी फैक्ट्री में एक भी बाल–कार्मिक नहीं है।

प्रतिदिन सुबह 11 बजे, सभी कर्मचारी अपना काम और मशीन बंद करके प्रण लेते हैं। (उस प्रण के बारे में, इसी किताब में आगे बताया गया है) फैक्ट्री की सभी जगहों पर सार्वजनिक ध्वनिवर्धक का प्रबंध किया गया है। अपने पसंदीदा भगवान की प्रार्थना कर वे प्रण को दोहराते हैं, और ध्वनिवर्धक पर जोर से पढ़ते हैं। यह प्रथा दिसंबर, सन् 2001 से चली आ रही है। प्रारंभ में, सभी लोग प्रण लेते थे, पर केवल 10% लोगों को ही उसमें आस्था होती थी, पर समय के साथ यह प्रतिशतता भी लगातार बढ़ी है। अब सौ प्रतिशत कर्मचारी अपने मनपसंद भगवान की प्रार्थना करते हैं, और सच्चाई से, हृदयपूर्वक प्रण लेते हैं।

इससे अवश्य उनकी विचारधाराओं में बदलाव आया है, और उनकी कार्य-विधियाँ भी बदल गईं हैं। पहले आपस में कम से कम दस छोटे-मोटे झगड़े, वाद-विवाद, दुर्व्यवहार आदि होते थे। पर वे धीरे-धीरे घटकर, आज शायद ही ऐसा कोई किस्सा होता है। दूसरों के साथ किस प्रकार समाधान से रहना है, यह बहुतेरे कर्मचारियों ने सीख लिया है। अब छोटी-मोटी चोरियां भी नहीं हो रही हैं। कभी-कभी सौ रुपये का नोट, या सोने की बाली आदि खोई हुई वस्तुएं कर्मचारियों के हाथ लगती हैं और वे उन्हें शाखा-निरीक्षक को सौंप देते हैं।

एक कर्मचारी जिसने पहले पांच रुपये का दान देने से इंकार किया था, उसने एक अनाथाश्रम को आज 100 रुपये दिए हैं। कर्मचारियों द्वारा एक दान-निधि आयोजित की गई है, और सभी कर्मचारी प्रतिमाह उसके लिए चंदा देते हैं, और वे पैसे वे धर्मपुरी ज़िले के दूर-दराज इलाकों में स्थित गरीब और पीड़ितों की भलाई के लिए उपयोग करते हैं। एक रविवार को हमारे कर्मचारी 'एरियूर' के एक अनाथाश्रम गए और 5000 रुपयों का सामान दे आए। दूसरी योजना में वे दूर-दरार के पेन्नागरम के पास का पिछड़ा गांव सेल्लमुड़ी गए और दस विधवाओं में प्रत्येक को 700 रुपयों का सामान दे आए। वे दूसरों को कष्ट देना भूल गए हैं।

इस प्रण लेने की प्रथा से कर्मचारियों के दिलों में आए असाधारण बदलाव को देखकर, मैंने इसे अंशकालिक कर्मचारियों और मेरे नियंत्रण में आने वाले मैट्रिक्युलेशन हॉयर सेकेंडरी स्कूल में, शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए प्रारंभ किया है। लगता है कि अगर हम इस पद्धति को सभी दफ्तरों, फैक्ट्रियों, स्कूलों और कालेजों में आरंभ करें, तो यह देश में एक नीरव क्रांति को जन्म देगी। यह हमें भारत को शीघ्रोन्नति के रास्ते पर ले जाने के लिए सहकारी होगी। मेरी फैक्ट्री के 60 प्रतिशत कर्मचारी अशिक्षित हैं। अगर इस नित्य प्रण लेने की प्रथा

ने अशिक्षितों को ही बदला है, तो शिक्षित लोगों के दिलों में यह और कितना अधिक बदलाव लाएगा!

इस साल हमने उन सभी विद्यार्थियों से एक वचन लिया है, जिन्हें हमारे ट्रस्ट की ओर से विद्यार्थी वेतन दिया गया था। उनमें से हर एक ने लिखकर दिया है, कि "मैं 14 सूत्रों वाला यह प्रण प्रतिदिन लूँगा और मेरी पढ़ाई के बाद जब नौकरी करूँगा, तो मेरी आमदनी का 5 प्रतिशत, मैं गरीब और पीड़ितों की मदद के लिए या उनकी पढ़ाई के लिए या उनकी बीमारी दूर करने के लिए या उनके दुःख दूर करने के लिए खर्च करूँगा।

प्रण

ईश्वर की प्रार्थना करते समय मैं यह प्रण लेता हूँ।

1. मैं अनावश्यक या नगण्य बातों के लिए झूठ नहीं बोलूँगा। जब बिल्कुल ही आवश्यक हो, तभी संभवतः मैं झूठ बोलूँगा।
2. मैं किसी को धोखा नहीं दूँगा।
3. मैं किसी को दुःख नहीं पहुँचाऊँगा।
4. मैं किसी को न बुरी बात सुनाऊँगा न बुरा रास्ता दिखाऊँगा।
5. धनी लोगों से मैं ईर्ष्या नहीं करूँगा।
6. मैं न किसी का मज़ाक उडाऊँगा या किसी की निंदा करूँगा, या दूसरों की गलतियों को बढ़ा-चढ़ाकर कहने की कोशिश करूँगा।
7. मैं बुरे मार्गों से आने वाले पैसों की अपेक्षा नहीं करूँगा।
8. मैं किसी भी प्रकार की गलत राहों पर नहीं चलूँगा।
9. मैं अपना कर्तव्य सही ढ़ंग से निभाऊँगा।
10. मैं अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करूँगा।
11. अपना कर्तव्य निभाते समय मैं अनावश्यक बातें नहीं करूँगा।
12. अपने माता-पिता का यथोचित आदर करूँगा।
13. मैं अपने से बड़ों का यथोचित आदर करूँगा।
14. आज मैं अपनी योग्यतानुसार दूसरों की मदद करूँगा चाहें वंह मदद छोटी ही क्यों न हो।

ईश्वर के नाम से यह प्रण लेने के बाद, अगर उसका पालन न किया जाए तो वह ईश्वर को धोखा देने के बराबर है। मुझे मालूम है कि आगे इसके लिए मुझे सज़ा मिलेगी। इसलिए मैं अपने आपको ईश्वर की सज़ा से दूर रखूँगा। मैं इस प्रण के मुताबिक ही चलूँगा।

अपने घर ईश्वर की तस्वीर के सामने यह प्रण लेने से आपका भी भला होगा।

मेरी लालसाएँ

1. मेरी मातृभूमि में कोई गरीब न हो।
2. गरीबी का उन्मूलन होने तक, प्रत्येक गरीब की मदद करने के लिए कम से कम चार लोगों के बीच प्रतिस्पर्द्धा हो।
3. प्रत्येक भारतीय एक अग्रगण्य मानवतावादी हो।
4. सभी अदालतें और पुलिस चौकियाँ व्यर्थ और बेकार हो जाएँ। जुर्म करने वाला कोई व्यक्ति ही न हो।
5. भारत एक ऐसा देश बने जिसमें दूध और शहद की धारा बहती हो, और जहाँ समृद्ध, संपन्न और ज्ञानी लोग रहते हों।
6. हमारी भूमि से जाति और धर्म का संघर्ष मिट जाए; सभी भारतीयों में धार्मिक समन्वय हो। "एक ही ईश्वर, एक ही जाति"- यही विश्वास उनके दिलों में, विचारों में और क्रियाओं में प्रतिबिंबित हो।
7. पूरे विश्व में मेरी मातृभूमि भारत का अग्रगण्यं स्थान हो।
8. हमारे देश की तरक्की देखकर विदेशियों का यह उद्‌गार हो "वाह! भारत में यह कैसा विश्वासातीत परिवर्तन आया है!"
9. हर एक भारतीय को इस पुस्तक की एक प्रति मिले।
10. हर भारतीय के हृदय की यहीं लालसाएँ हों।
11. मुझे ईश्वर के हृदय में एक बड़ा और शाश्वत स्थान मिले।

निष्कर्ष

पिछले कुछ सालों से लोगों के आचरण और समाज की गतिविधियों को देखकर मेरे मन में कई सवाल उठ खड़े हुए हैं। लोग गलत राह पर क्यों चल रहे हैं? ईश्वर की शक्ति और बुद्धिमत्ता का क्यों कम अंदाजा लगा रहे हैं? अपना गड्ढा खुद क्यों खोद रहे हैं? क्या उन्हें सही रास्ता दिखाने वाला कोई नहीं है? धर्मगुरु क्यों इन्हें सही रास्ता नहीं दिखा रहे हैं? इसका समाधान कहां और कैसे हो? अपने इन विचारों को व्यक्त करके मैं क्यों न एक किताब लिखूँ?

यह किताब लिखना आरंभ करने से पहले, मेरी अपनी ही कुछ शंकाएं थीं। क्या एक किताब लिखने के लिए आवश्यक योग्यता और निपुणता मुझमें है? मैं यह किताब अभी क्यों लिखूँ? क्यों न और अनुभव और प्रौढ़ता अर्जित करके कुछ साल बाद लिखूँ? मैंने अपने आप से, ऐसे कई प्रश्न पूछे हैं।

यह मेरा प्रथम साहस है। अंत में इस आशा से मैंने लिखने का निश्चय कर लिया कि, यह किताब कुछ लोगों को सही रास्ता दिखाएगी। अगर कम से कम चार लोग सुधर जाते हैं और सही रास्ते पर लाए जाते हैं, तो उन चार लोगों में से, हर कोई चार और लोगों को सही रास्ता दिखाएगा तो कुल मिलाकर 16 लोग उपकृत होंगे; और ये 16 में से, हर कोई चार और लोगों का मार्गदर्शन करेगा तो कुल 64 लोग लाभान्वित होंगे और इस प्रकार यह संख्या बढ़ती जाएगी। एक तमिल कथन है, "अच्छा काम करो और अभी, इसी समय करो।" मेरे दोस्तों ने सलाह दी कि मेरे विचारों को किताब के रूप में प्रकाशित किया जाए तो वह कई लोगों के लिए फायदेमंद होगा। अंत में इस महान साहस को करने का मैंने निश्चय कर लिया।

महर्षि और महात्माओं के विचार और उनकी राय और उनके कथनों से मैंने जो समझा है, उन्हीं विचारों को मैंने इस किताब में व्यक्त किया है।

शिवखेड़ा ने अपनी प्रसिद्ध किताब *'यू कैन विन' (आप जीत सकते हैं)* में *कहा है– 'सफल लोग विशिष्ट काम नहीं करते हैं, वे काम विशिष्ट ढ़ंग से करते हैं।''*

उसी प्रकार मैंने जो जाना है, उन विचारों को अलग, पर सच्चे तरीक़े से व्यक्त किया है।

यह समृद्ध और संपन्न देश है।

यह वह देश है जहां दूध और शहद की धारा मुक्त रूप से बही थी।

यह वह देश है, जहां प्रजा ने सुखी और समृद्ध जीवन जिया क्योंकि यहां क़ी हर प्रजा के मन, विचार और क्रियाओं में न्याय और सच्चाई थीं।

यह वह देश है जहां के लोग निस्स्वार्थी और उदार थे; उन्हें बुरी संपत्ति और बुरे पैसों से प्यार नहीं था। यह वह देश है, जहाँ एक बार एक ज़मीन के टुकड़े को खरीदने और बेचने वाले का एक मुकदमा फैसले के लिए धर्मराज (महाभारत काल) के दरबार में आया। द़ोनों, ज़मीन में गढ़ी मिली एक निधि के स्वामित्व के विषय में झगड़ रहे थे। खरीदने वाले का यह तर्क था किं वह निधि बेचने वाले की थी, क्योंकि उसने ऊपरी जमीन को ही खरीदा था, जबकि निधि भूमि में बहुत गहराई में थी और बेचने वाले का यह तर्क था कि जब उसने

ज़मीन बेची थी, तो उसने उसके सारे हक़ खरीदने वाले को दे दिए थे और इसीलए निधि उसी की थी। दोनों ने निधि को स्वीकारने से इनकार कर दिया। कैसा विलक्षण मुकदमा है!

यह वह देश है, जहाँ शिबि महाराज ने अपने शरण में आए एक कबूतर को बचाने के लिए, अपने शरीर के मांस का एक हिस्सा दे दिया।

यह वह देश है, जहाँ तमिल राजा, मनुनीदि चोलन ने अपना रथ अपने बेटे के ऊपर चलाकर उसे मार दिया था, क्योंकि उसके बेटे ने एक बछड़े के साथ यही व्यवहार कर उसे मार डाला था।

यह वह देश है, जहाँ तमिल राजा पांडियन नेडुचेलियन ने अपने सिंहासन से गिरकर अपनी जान दे दी थी, जब उसे पता चला था कि उसने एक गलत फैसला सुनाया था जिसके फलस्वरूप एक बेकसूर की जान चली गई थी।

यह वह देश है, जहाँ गौतम बुद्ध और गांधी जी जन्मे थे और उन्होंने अपने धर्मों का पालन किया था।

यह वह देश है जिसने पूरे विश्व को सही मार्ग दिखाया है।

यह सैकड़ों महान ऋषियों और संतों का देश है।

क्या यह हमारा कर्तव्य नहीं है, कि हम इस देश की गत महानता को पुनः स्थापित करें? यह मत पूछिए "अगर मैं, बिना किसी को दुःख पहुँचाए, गरीब और पीड़ितों की मदद करते हुए ईमानदारी, सच्चाई से अपना कर्तव्य पालन करते

हुए जीवन बिताऊं, तो क्या यह काफ़ी है? एक अकेला मनुष्य क्या कर सकता है?" "ऐसे प्रश्न मत पूछिए। चाहे कोई कैसे भी जिए, पर मैं ऐसा ही जिऊँगा" ऐसा सोचकर आप अच्छा काम करना शुरू करेंगे और दृढ़ निश्चय कर यह रास्ता अपनाएंगे तो क्या ईश्वर आपको इसका प्रतिफल नहीं देंगे? अगर इस प्रकार सोचने और करने वालों की संख्या नाना रूप से बढ़ती है तो क्या हम अपने देश को बदल नहीं सकते?

शेयर बाजार के घोटालों में, करोड़ों रुपये ऐंठकर, हज़ारों लोगों की जिंदगियाँ बरबाद करने वाले हर्षद मेहताओं, छापा कागज़ के घोटालों में सरकार को सैकड़ों करोड़ रुपयों का चूना लगाने वाले; ओ! अब्दुल करीम तेलगियों, कराची में आराम से बैठकर, मुंबई में बम विस्फोट करवाके, बेकसूर लोगों को मरवाने वाले दाऊद इब्राहिमों, ईश्वर आप सब पर नज़र रखे हुए हैं। आपके पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों के पुण्यवश आज अपने इतने अत्याचारों के बावजूद आप फल-फूल रहे हैं। लेकिन एक दिन यह पुण्यफल समाप्त हो जाएगा। तभी आपका महा पतन शुरू होगा। आप कानून या सरकार या लोगों के चंगुल से बच सकते हैं, लेकिन ईश्वर के दण्ड से नहीं। केवल आप ही नहीं, बल्कि आपकी अगली सात पीढ़ियां, आपके अगले सात जन्म इन कुकर्मों का फल भोगेंगे। भूतकाल के इतिहास में या वर्तमान में, ***अधर्म कभी नहीं जीता है; धर्म को कभी नहीं पराजित किया गया है,*** और भविष्य में भी ऐसा कभी नहीं होगा।

अरे नेताओं, आप गिरगिट की तरह अपनी नीति और व्याख्या, संदर्भ के साथ बदलते रहते हैं, अपने अधिकार की प्रतिष्ठा का आनंद उठाते हैं और लोगों को धोखा देकर करोड़ों कमाते हैं। उन अधिकारों को लोगों की भलाई के लिए उपयोग न कर, अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

अरे मद्य व्यापारियों और गैरकानूनी ढंग से मद्य बनाने वालों, गांधी जी की इस भूमि में आप हज़ारों, साधारण लोगों की जिंदगियां बरबाद कर, पैसा बनाने के लिए सारे गांवों, शहरों और नगरों में मद्य की नदियाँ बहाते हैं।

अरे सुशिक्षित सरकारी अफसरों! इस गरीब देश में निश्चित अच्छी नौकरी की बदौलत सुविधापूर्ण जीवन, साठ साल तक लगातार वेतन, निवृत्ति के बाद निवृत्ति वेतन और मृत्यु के बाद पत्नी को निवृत्ति वेतन आदि सब सुविधाएँ होने के बावजूद आप अपने भ्रष्ट व्यवहार से लोगों को तंग करते हैं।

"आप जिएँ या मरें, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। जब तक मैं और मेरा परिवार सुखी है, मैं खुश हूँ।" ऐसा सोचकर दूसरों को ठगने वाले लोगों,

"मेरी दोनों आंखें चली जाएँ तो कोई बात नहीं, पर मेरे पड़ोसी की एक आँख जानी चाहिए" इस प्रकार के गंदे विचार सोचने वाले लोगों!

आप अपना भविष्य खराब कर रहे हैं; पर आपको क्या हक़ है कि इन बुरे कार्यों से अपने बच्चों और अगली सात पीढ़ियों का भविष्य खराब करें?

अगर आप लोग सही प्रकार से सोचकर, सही ढंग से कार्य करें, तो हमारे देश को समृद्ध और अग्र देश बनने में अधिक समय नहीं लगेगा। हमारा देश गरीब नहीं है, पर गरीबों का देश है। देश की भलाई के लिए न सही, पर अपनी और अपने बच्चों की भलाई के लिए आपको बदलना है।

अरे बुद्धिजीवियों, आप अपने बैठक के सोफे पर बैठकर गरीबी और बीमारी की, आंसू भरी कहानियाँ पढ़ते हैं और यह मान कर कि आपका इसमें कोई

कर्तव्य नहीं, सरकार से मदद की उम्मीद करते हैं।

अरे भाग्यवानों, आप जीवन में कई बार पंचतारा होटलों में एक भोजन के लिए हज़ार रुपये खर्च करते हैं, आपको नहीं लगता कि आप एक बार ऐसा भोजन छोड़ दें, तो वही पैसे महीने भर एक गरीब परिवार का पेट भरने के लिए काफ़ी हैं।

अरे अमीर स्त्रियों, आपकी अलमारी में, इतनी साड़ियाँ हैं, कि आप हर रोज एक-एक करके सारी साड़ियां पहनती हैं, तो आज की साड़ी की अगली बारी, अगले साल ही आएगी। क्या आप छोटे से गाँव की अपनी उस गरीब बहन की दयनीय स्थिति को समझ सकती हैं, जिसके पास बदलने के लिए दूसरी साड़ी नहीं है और इसलिए वह आधी साड़ी पहन कर, आधी साड़ी धोकर सुखाती हैं, और सूखने के बाद सूखा हुआ भाग पहन कर बाकी आधी साड़ी धोती हैं।

अरे अमीरों, क्या आप समझ नहीं सकते, कि ईश्वर ने आपको इतनी सुविधापूर्ण स्थिति में रखा है कि किसी गरीब पीड़ित भाई या साथी नागरिक की मदद करने के लिए आपको किसी सुविधा का त्याग नहीं करना पड़ेगा।

अरे विश्वविद्यालयों में उपाधि के बाद उपाधि पाने वाले बुद्धिजीवियों, क्या आप समझ नहीं सकते कि ईश्वर को जानने के लिए, सही जीवनकला सीखने के लिए एक अनुसरणीय जीवन बिताने के लिए और दूसरों को सही रास्ता दिखाने के लिए आप अपनी बुद्धिशक्ति का उपयोग कर सकते हैं?

क्या आप लोगों के दिल में दया नहीं है? है, बिल्कुल है। उस प्रसुप्त दया को जगाइए।

उस गरीब समझदार बच्चे की मदद कीजिए, जिसने कई बार भूखा रहकर, कई मुसीबतों का सामना कर चार वर्षीय पाठ्यक्रम के तीन साल खत्म किए हैं और चौथे साल की अंतिम परीक्षा का शुल्क इकट्ठा करने में असमर्थ रहा है।

उस गरीब की मदद कीजिए जो शय्याग्रस्त पत्नी की दवा खरीदने के लिए हाथ–पैर मार रहा है।

उस गरीब शिशु की मदद कीजिए जो दूध के लिए रो रहा है।

उस गरीब की मदद कीजिए जो कई दिनों से भूखा है।

आप उन पैसों का क्या करने जा रहे हैं, जिनका आपने पीड़ितों का दुःखहरण करने में उपयोग न किया हो? अगर उन पैसों का एक अंश भी ऊपर बताए गए लोगों के लिए इस्तेमाल हो, तो आप भी संपन्न रह सकते हैं और आपके अगले सात जन्म और सात पीढ़ियाँ भीं। कृपया सोचिए।

अगर उपर्युक्त लोग समझ सकते हैं, और बदल सकते हैं, तो अच्छा है। अगर नहीं बदलते हैं तो परेशान न होइए। आसमान टूटकर गिर नहीं जाएगा। अरे, अपनी कमाई में महीने का खर्चा संभालने के लिए संघर्ष कर रहे साधारण लोगों, आपको बदलना है। मैं आपको गौतम बुद्ध, या ईसा या गांधीजी बनने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मुझे पता है कि यह असंभव है।

अपने विचारों में छोटे–छोटे बदलाव लाइए और उन्हें अमल में लाइए।

रोज़ बोले जाने वाले झूठ की संख्या कम कीजिए।

दूसरों को धोखा देकर मिलने वाले धन की अपेक्षा मत कीजिए।

आलसी मत रहिए। दिन में कम से कम दस घंटे काम कीजिए। अगर बेरोज़गार हैं, तो दूसरों के लिए दिन में कम से कम दो घंटे काम कीजिए।

कर्तव्य पालन करते समय, किसी को दुःख हो तो चिंता मत कीजिए। वरन् दूसरों को कभी कष्ट मत दीजिए।

चाहे वह किसी भी तरह की हो, या कितनी भी छोटी हो, पीड़ित गरीबों की मदद कीजिए।

दूसरों पर दोष मत लगाइए। अपराधियों को सुधारने की कोशिश मत कीजिए और चारों तरफ हो रहे अत्याचारों पर प्रश्न मत उठाइए।

''बुराई से दूर रहो''- इस कथन के अनुसार चलिए। अपना कर्तव्य, शांत चित्त और विनम्र भाव से, बिना किसी अहम्भाव के कीजिए।

बुरे लोगों से मिलना-जुलना बंद कीजिए।

आपकी बात मानने वाले कुछ दोस्तों और बंधुओं में भी बदलाव लाने की कोशिश कीजिए।

प्रतिदिन सुबह और रात को सोने से पहले 14 सूत्रों वाला प्रण लीजिए। यह आपके जीवन में शीघ्र ही अधिक बदलाव लाएगा।

इन सबको कार्य रूप में लाने के लिए किसी क्रांति, संस्था, दफ़्तर वाला पक्ष, पक्ष की शाखाएं, कर्मचारी, स्वयंसेवक आदि की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए सम्मेलन, सभाएं, रैली, आंदोलन आदि का प्रबंध करने की जरूरत भी नहीं है। यह प्रत्येक व्यक्ति का अभियान है।

लोग जब, अच्छे और निस्वार्थी बनकर रहने के लाभ जान जाते हैं, तो ऐसे लोगों की संख्या बढ़ने लगती है। कुछ सालों में इस संख्या में अत्यधिक वृद्धि होती है और तब यह अपने आपमें एक जन आंदोलन बन जाता है और व्यक्तिगत और समष्टि रूप से समाज का भला करता है। तभी हर कोई ईश्वर का कृपापात्र बनता है। जब ऐसे सौ लोग हज़ार बन जाते हैं, और कुछ सालों में हज़ार लोग लाख बन जाते है, तब ईश्वर उनके जीवन को और हमारे देश को भी धीरे-धीरे, पर अवश्य उभारते हैं।

जब मेरी बेटी हेमलता की 1995 में मृत्यु हुई थी, तब मैं पूर्णतः टूट गया था। कुछ समय बाद, मैंने अपने आपको संभाला और इस किताब में व्यक्त पांच मुख्य गुणों के साथ एक अनुकरणीय जीवन बिताने का निश्चय किया। पहले वर्ष मैं समाज-सेवा के लिए केवल 3 लाख रुपये खर्च कर पाया था। आज मैं उससे कई गुना ज़्यादा खर्च करने की क्षमता रखता हूँ। मेरी उस स्थिति से, इस स्थिति तक, मुझे किसने पहुँचाया ? इस पुस्तक में व्यक्त विभिन्न विचार मुझसे लिखवाए किसने ? इस किताब को लिखने की क्षमता मुझे किसने प्रदान की ?

इस किताब को 12 लाख वाचकों तक पहुँचाने की स्थिति किसने निर्माण की ?

मैं एक गरीब परिवार में पैदा हुआ। इस मुकाम तक पहुँचने के लिए मैंने हर कदम पर, हर स्थिति में संघर्ष किया। उस गरीबी से इस उच्चतम स्तर तक मुझे किसने उभारा ?

सब कुछ ईश्वर की कृपा से होता है। मुझे उन्होंने इस ऊंचाई तक क्यों पहुँचाया ? क्योंकि मैंने इस किताब में बताए गए पांच प्रमुख गुणों का अपने जीवन में 90 प्रतिशत पालन किया है। अगर आप भी अपने जीवन में इनका

पालन करेंगे तो ईश्वर आपको भी इतनी उच्च स्थिति या इससे भी ऊंची स्थिति तक पहुँचाएंगे।
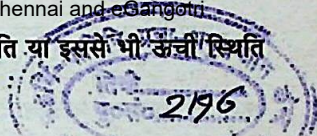
मेरी भूमि, मेरा भारत, मेरे देश को उसका पूर्व वैभव और उन्नति लौटाने के इस प्रयास में, हज़ारों लोग मेरे साथ हैं। पुदुक्कोटई का एक साधारण फैक्ट्री कर्मचारी, जिसका वेतन केवल 3000 रुपए प्रतिमाह है, जिसने खुद अविवाहित रहकर अपने भाई-बहनों की शादी करवाई है, उसने इस किताब की मुफ्त परिशिष्ट के साथ 'आनंद विगटन' की पचास प्रतियाँ खरीद कर उन्हें अपने आसपास के पुस्तकालयों में वितरित किया है। उसी की तरह सैकड़ों लोगों ने 10, 20, 50 और 100 प्रतियाँ खरीद कर इस किताब के विचार और संदेश का प्रचार करने के लिए उन्हें अपने दोस्त और बंधुओं में बांटा है।

इस किताब को पढ़ने के बाद तिरुप्पूर के एक व्यक्ति ने मुझे फोन करके बताया कि वह हर हफ्ता शराब के लिए 300 रुपये खर्च करता था और उसने मुझे आश्वासन दिया कि वह आइंदा शराब सेवन नहीं करेगा और वही पैसे पीड़ित गरीबों के लिए खर्च करेगा।

एक कागज़ की फैक्ट्री के मालिक ने इस किताब की बहुत प्रशंसा की और कहा कि उन्होंने एक मंदिर को 3 लाख रुपये चंदा देने का वादा किया था, पर मेरी किताब पढ़ने के बाद न देने का सोचा। फिर से दोबारा विचार कर उन्होंने निश्चय किया "इस बार वादा की हुई राशि मंदिर को दे दूँगा और आगे से मैं किसी मंदिर के लिए कोई चंदा नहीं दूँगा और उन पैसों को गरीबों के उद्धार के लिए खर्च करूँगा।"

इस प्रकार सैकड़ों लोगों ने ऐसे कई संकल्प किए हैं और यह संदेश धीरे-धीरे

पर अवश्य देश भर के सद्‌गुणी लोगों तक पहुँच रहा है। ये लोग, हज़ारों और लोगों को इस बड़े आंदोलन में साथ लाएँगे। मैं अभी से उज्ज्वल और समृद्ध भारत का एक दूर भविष्य देख पा रहा हूँ।

इससे कौन-कौन लाभान्वित होने वाला है?

आप,

जिन्होंने आप से मदद प्राप्त की, वे,

आपके आगे के सात जन्म,

आपकी अगली सात पीढ़ियाँ,

हमारा समाज,

हमारा महान देश।

मेरे मन में जल रहे मेरे विचारों को गुणी लोगों के साथ बाँटने की, हमारी मानसिक और आर्थिक संपत्तियाँ जो न हमारे लिए, न हमारे बच्चों के लिए, न ही हमारे देश के लिए उपयुक्त होकर, अपव्यय हो रही हैं, उन्हें गरीब और पीड़ितों के लिए व्यय करने की, और इन सबसे अधिक, हमारा पुरातन देश, भारत को उसका गत वैभव लौटाकर विश्व में उसका उचित और उच्चतम स्थान लौटाने की मेरी अदम्य इच्छा ने मुझे यह छोटी किताब लिखने के लिए मजबूर किया। **"जहाँ अच्छाई, केवल अच्छाई का बोलबाला हो-"** ऐसे समाज के निर्माण की शुरुआत के लिए यह किताब, चाहे जितनी छोटी भी हो, मदद करें, तो मुझे बहुत खुशी होगी। मैंने, यह किताब निर्मल मन और अच्छे उद्देश्यों से लिखी है। अगर इसमें त्रुटियाँ हैं, तो कृपया क्षमा करें।

धन्यवाद

- यह एक दुर्लभ पुस्तक है जिसने नीरवता से सामाजिक बदलाव लाना आरंभ कर दिया है। एक साधारण व्यक्ति भी इसे पढ़ व समझ सकता है।

डॉ. जी.सुब्रह्मण्यम्, प्रोफ़ेसर, अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नई

- मेरी पढ़ी हुई अत्युत्तम पुस्तकों में से एक है और प्रत्येक घर और पुस्तकालय में इसे जगह मिलनी चाहिए।

डॉ. ए. नवनीतकृष्णन, प्रोफ़ेसर, अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नई

- ...सचमुच प्रभावित हुआ और इसका प्रत्येक शब्द स्मरणीय है।

डॉ. जी. इलंगोवन, डीन, किलपॉक मेडिकल कॉलेज, चेन्नई

- इस पुस्तक ने मुझे अधिक प्रभावित किया है, और बार-बार पढ़ने के लिए मजबूर किया है।

डॉ० ललिता जॉन, डीन, वेटरिनरी कालेज, चेन्नई

- यह पुस्तक आपको एक सार्थक जीवन जीने में मदद करती है।

ब्रहसीता, डेवलपमेंट टेस्ट मैनेजर, सिट्रिक्स सिस्टम्स, कैलिफ़ोर्निया, यू. एस. ए.

- वर्तमान विश्व के लिए दिए गए नए और भरपूर विचारों से युक्त एक छोटी सी पुस्तक। एक उत्तम प्रयास....प्रशंसा प्राप्त होगी।

ए. सेल्लदुरई, मिडलसेक्स, यू. के.

- ....पढ़ते समय अतीव आनंद का अनुभव। उदात्त विचारों से भरे वाक्य। एक ही दिन में पूरी किताब पढ़ी।

आंथोनी स्टीफ़न, दुबई पेट्रोलियम कंपनी, दुबई, यू. ए. ई.

- वास्तव को दर्शानेवाले उत्तम विचारों के लिए बधाई ....उनके सभी कार्यों में और सदाचार का पालन करने में पाठकों का मार्गदर्शन करती है।

श्रीनिवास झवेर, पत्रकार, सदस्य, प्रेस क्लब आफ़ इंडिया, नई दिल्ली

- जीवन में ईश्वर और अपने कर्तव्यों के बारे में सोचने पर मजबूर करने वाली, उदाहरणों से युक्त, सरल भाषा में लिखित एक पुस्तक।

डी. ए. मुत्तन्ना, ज्वाईंट जनरल मैनेजर, इंटरनेशनल II, लार्सन एण्ड टूब्रो लि.

- पुस्तक पढ़कर हार्दिक सुख का अनुभव हुआ।

स्वामी नित्यानंदा, नई दिल्ली

- ....पुस्तक की विषय-वस्तु अत्यंत प्रभावपूर्ण है।

भगवान महावीर फ़ाउंडेशन, चेन्नई

- यह पुस्तक प्रेरणा प्रदान करने वाली और उच्च स्तर पर ले जाने वाली है।...इसके विचारों का पालन करने से, आप में परिवर्तन आएगा और आप अनुसरण योग्य ध्रुव तारा बन जाएंगे।

टी. के. राव, रिटायर्ड लेफ़्टिनेंट कर्नल, बैंगलूर

वाचकों की राय

- यह विचारोत्तेजक है और उत्तम विचार प्रतिपादित करती है। मेरी इच्छा है कि प्रत्येक भारतीय, विशेषकर युवा इस पुस्तक को पढ़े...

एस. दशरथराम रेड्डी, निवृत्त न्यायाधीश, आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट

- यह पुस्तक हमें भगवान के सभी अवतारों और स्वामी विवेकानंद जैसे महान् व्यक्तियों के बारे में जानने की और उनका अनुसरण करने की प्रेरणा देता है।

स्वामी प्राणरूपानंद, [illegible], उड़ीसा

- ...जीवन के दर्शन को सरल व सुदंर तरीके से दर्शाती है, [illegible] समझ सकते हैं। हम सभी इसे पढ़कर इसका लाभ उठा सकते हैं।

आर. रत्नस्वामी, राज्य सूचना आयुक्त, सूचना अधिकार अधिनियम, तमिलनाडु

- यह सरल पुस्तक वास्तव में जीवन की सच्चाई दर्शाती है। [illegible] न केवल मेरी जिदंगी बदली है, बल्कि अपनी व्यस्त दिनचर्या के [illegible], बेंगलूर में गरीब अंधी लड़कियों के लिए आश्रम खोलने की मुझे प्रेरणा भी दी है।

डॉ. एस प्रदीप, एम.डी.,डी.एन.बी, चीफ़रेडियोलाजिस्ट, [illegible] हास्पिटल, बेंगलूर

- कर्म योग सिद्धांत का सुंदर वर्णन....

डॉ. आर.सेंथिल, एम.बी.बी.एस, एफ. आर. सी. एस., सांसद सदस्य , धर्मपुरी

- .... किस प्रकार एक संतुलित और तृप्त जीवन जिया जाए, इसे सरल और कम शब्दों में बताती है। अकसर पढ़ने के लिए, मैं इसे अपने सिरहाने रखता हूं।

ए. एस. चीमा, रिटायर्ड ब्रिगेडियर, नई दिल्ली

- यदि हम सभी इस पुस्तक में व्यक्त सिद्धांत और विचारों का अपने जीवन में पालन करें और भारतीय संस्कृति और मानवतावाद को ऊँचा उठाएँ, तो हमारा देश अति शीघ्र ही एक विकसित देश का दर्जा हासिल कर लेगा।

डॉ. जी. नच्चीयार, एम.एस.डी.ओ, ज्वाइंट डायरेक्टर, अरविंद आई हास्पिटल, मदुरै, तमिलनाडु

- इस पुस्तक के कारण, जीवन और अपने चारों ओर के वातावरण के प्रति मेरी बद्धताएँ मजबूत हुई हैं, और इसी दिशा में आगे बढ़कर कुछ कर दिखाने के इस पुस्तक ने रास्ते बताए है।

विश्वनाथ शेगाँवकर, आई.ए.एस, कार्यदर्शी, तमिलनाडु सरकार

- इस पुस्तक में उत्तम उदाहरणों सहित, वास्तविकता का सुंदर वर्णन है। इसी कारण यह प्रथम पृष्ठ से लेकर अंत तक पाठक को लगातार आकृष्ट करती है।

सुशील मंत्री, मैनेजिंग डायरेक्टर, मंत्री डेवलपर्स, बेंगलूर

"वाचकों की राय" का शेष भाग इस पन्ने के पीछे हैं।

इस किताब की 22 लाख प्रतियाँ, तमिल, तेलुगु, अंग्रेज़ी तथा हिन्दी भाषा में, मुफ़्त में वितरित की जा चुकी हैं।